ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ दण्डक वनों में धनुर्याग 03 08 1987

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, यह जो वैदिक पठन-पाठन की पद्धति है यह परम्परागतों से ही बड़ी विचित्र मानी गई है मानो इसमें स्वर और व्यंजन अपनी-अपनी आभा में निहित रहते हैं। जो उस परमपिता परमात्मा की महिमा का हम गान-गाना प्रारम्भ करते है। तो प्रायः हमें ऐसा प्रतीत होता है, जैसे हम परमपिता परमात्मा की अनुपम छाया में विद्यमान है। और जिस छाया में विद्यमान है उसी का अनुसरण कर रहे है अथवा उसका हम गान गा रहे है। तो प्रत्येक मानव जब गान गाने लगता है, तो अपने में और परमपिता परमात्मा के मध्य में जो अन्तर्द्वन्द्व होता है वह उसको दूरी कर देता है क्योंकि स्वर और व्यंजनों का अभिप्राय भी यही है कि जो भी विजातीय शब्द है, मानो वह दूरी हो जाते है, एक जातीय अपनी आभा में रत हो जाते है, तो मानो देखो, जब हम अपने प्रभु के द्वार पर जाना चाहते हैं, तो जिस विभक्त क्रिया ने, हमें परमपिता परमात्मा से दूरी किया है, उसको हम मध्य से शान्त करना चाहते है और उस परमपिता परमात्मा का जो अनुपम प्रकाश है, जिसमें रात्रि नहीं होती, ऐसे प्रकाश में हम सदैव रत रहना चाहते है। इस संसार में नाना प्रकार का जो ईर्ष्यावाद है और भी नाना प्रकार के जो हमारे हृदयों में, नाना प्रकार की अशुद्धियाँ और अन्तःकरण में एक प्रतिभा प्रदीप्त हो गई, हम उसे शान्त करना चाहते है और हम प्रभु की उस आनन्दमयी, जहाँ अन्धकार और प्रकाश दोनों की प्रतिभा का सम्मिलन होता है।

वेदों का मर्म

तो आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है परमपिता परमात्मा ने इस संसार की रचना की वह रचना इतनी विचित्र है कि एक-दूसरे का पूरक बना हुआ है, एक दूसरे में पिरोया हुआ है। यह संसार एक माला की भाँति, माला के सदृश हमें दृष्टिपात आता है। मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में महर्षि भृगु मुनि महाराज ऋषि-मुनियों के मध्य में विद्यमान थे और विचारते हुए वह आदि ब्रह्मा के समीप पहुँचे मानो देखो, विराजमान हो गये। महर्षि भृगु जी ने एक वाक्य उच्चारण किया कि हे प्रभु! आप तो वेद के मर्म को जानने वाले है, क्योंकि वहीं ब्रह्मा कहलाता है जो वेद के मर्म को जानता है। और वेदों का मर्म क्या है? वेद में जिस प्रकार की जो विद्या है उस विद्या में रमण करने वाला ही ब्रह्म कहलाता है। मानो वही वेद का मर्म है और उस विद्या का प्रसार वह याग के द्वारा, अग्निष्टोम याग है, जैसे वाजपेयी याग है और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में रत रहते है जैसे प्रातः काल का आध्यात्मिक याग है जिसे हम मानो देखो, अपने में सन्धि करने के लिए संसार में आए, मेरे पुत्रों! देखो, उसी सन्धि में रत हो जाए। तो महात्मा भृगु जी ने जब यह वाक्य कहा, तो ब्रह्मा ने कहा सम्भो रहस्तं मनश्चं प्राणावृत्ति दिव्या।

आत्म तत्त्व की धारायें

उन्होंने कहा-कि जब इस संसार में, मानव शरीर में, जब इस आत्मा का प्रवेश होता है, आत्मा के आश्रय, इस शरीर रूपी गृह का निर्माण होता है तो इस आत्म तत्व से दो धाराओं का जन्म होता है क्योंकि जब तक प्रकृति में यह प्रवेश करता है तो दो धाराओं का जन्म होता है एक मनस्तव है एक प्राणत्व है। मेरे पुत्रों! एक ज्ञान का प्रतिनिधि है, और एक मुनिवरो! देखो, गति का प्रतिनिधि कहलाता है, जिसे हम प्रयत्न के रूपो में भी वर्णन करते रहते हैं। मानो जब दोनों विभक्त हो जाते है तो यह मुनिवरो! देखो, ज्ञान से अपनी कामना की कृतियों में, प्राण के आश्रित गति ले करके, आत्मा से ज्ञान ले करके यह मन मानो इन प्राणों का विभाजन कर देता है। यह

प्राणों का विभाजन मानो देखो, कही प्राण के रूप में है, कहीं अपान के रूप में है, कहीं उदान के रूप में, कहीं व्यान और समान के रूप में माना गया है। परन्तु जब उनको क्रियात्मक, क्रियाकलाप प्रदान कर दिया जाता है तो उस समय मानों पांच प्राणों का जन्म हो जाता है। पांच उप प्राण कहलाते हैं। देव, धनंजय, कुरु, कृकल और नाग यह दस प्राण कहलाते है। मेरे पुत्रों! पाँच प्राण, पांँच उप प्राण, यह मुनिवरो! देखो, और भी बलवती हो करके, ज्ञान को ले करके ओर विभाजन करना चाहता है तो बेटा! प्राणों का तो विभाजन हो नहीं सकता। मेरे पुत्रों! देखो, जब यह विभाजन प्राण का शान्त हो गया, उसकी सीमा बद्ध हो गई, तो मानो देखो, उसी के रूप में पाँच ज्ञानेन्द्रियों की धाराओं का जन्म हो गया, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है। उनका देवता मानो उससे उनका समन्वय रहता है। तो समन्वय रहते हुए मुनिवरो! देखो, इससे भी, जब क्रियाकलाप प्रदान कर दिये गए, तो बेटा! पाँच कर्मेन्द्रियों का निर्माण हुआ। पाँच कर्मेन्द्रियों का जब निर्माण हुआ तो मेरे पुत्रो! इससे भी उसे शान्ति प्राप्त न हुई। मन की चेतना को ले करके आत्मा से, ज्ञान ले करके बेटा! यह मनस्तव प्रकृति का सबसे सूक्ष्म जो तन्तु है इसमें बेटा! ओर धाराओं का जन्म हुआ, तो इसका बाह्य जगत बन गया। बाह्य, जगत में मानो देखो, यह संसार को दृष्टिपात् करने लगा। जहाँ आन्तरिक जगत में एक चेतना, एक आत्मा विद्यमान है मेरे प्यारे! देखो, वह वृतियों में रत रहने वाला, जगत बन गया है। बाह्य जगत् में जब मानव की कामना बलवती हो जाती है मानवी क्रियाकलापों में परन्तु जिस वस्तु से इसका विच्छेद हो गया था, वह वस्तु को पुनः से प्राप्त करना चाहता है, तो बाह्य जगत में दृष्टिपात करता है। बाह्य जगत में बेटा! वह वस्तु उसको प्राप्त नहीं हो पाती। मेरे पुत्रों! देखो, अति जब बलवती हो जाती है, कामना बलवती होने का द्वितीय रूप बेटा! उसे तृष्णा कहा जाता है। तृष्णा में बलीवत हो जाता है, तृष्णा में रत हो जाता है, वही तृष्णा मेरे पुत्रो! देखो, मानो एक दाह स्वरूप धारण करके, मानव का विभाजन बाह्य जगत से मानो पुनः वृत्तियों में रत करा देती है।

यौगिकवाद

मेरे पुत्रों! जब ब्रह्मा जी ने इस प्रकार वर्णन किया, तो महात्मा भृगु ने कहा-प्रभु! इसका एकोकीकरण हम कैसे करें? हम इनकी सन्धि कैसे कर पायेंगे? तो मेरे पुत्रां! देखो, ऋषि-मुनियों ने वर्णन कराया, ऋषियों के विचार दिए, ब्रह्मा ने कहा-कि मेरे विचार में यह आता है सम्भवो ब्रह्मे वाचन तृष्णा बृहि व्रताः कि इस तृष्णा के मूल में जो विभक्त क्रिया है उसको एकाग्र किया जाए। मेरे पुत्रों! देखो, तृष्णा के जो योगेश्वर होते है वह ज्ञान और विवेक के द्वारा वह मानो निदिध्यासन के द्वारा चित्त की वृत्तियों पर नियन्त्रण करते हुए मुनिवरो! देखो, सबसे प्रथम वह तृष्णा को त्यागते है। जब तृष्णा त्यागी जाती है, तृष्णा के पिछले विभाग में बेटा! जो नाना प्रकार की कामनाएं है, उन पर मानव संयम करता है, इन्द्रियों पर संयम करता है। इन्द्रियों पर जय, विजय करता है। और जय, विजय करता हुआ मुनिवरो! देखो, यह प्राणों पर विजय करके मानो देखो, उसके पश्चात् ज्ञान और प्रयत्न दोनों की सन्धि करके बेटा! परमात्मा के हृदय से, अपना हृदय, हृदय, हृदय का समन्वय हो जाता है। मेरे पुत्रों! मैं गम्भीर चिन्तन में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि हमारे जीवन की जो विभक्त क्रिया है इसी को सूत्र में लाने का नाम यौगिकवाद कहलाता है। उसी को तो यौगिकवाद कहते हैं।

मेरे पुत्रों! आओ, आज मैं दर्शनों की चर्चाओं में या ऋषि-मुनियों के संवाद में न जाता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, पुरातन काल में मानो देखो मैंने ब्रह्मा का वर्णन किया। ये ब्रह्मा कौन है? महर्षि भृगु जी ने ब्रह्मा का वर्णन करते हुए कहा, जो आचार्य हमारा पूज्य है, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मा उसे कहते हैं जो वेद के मर्म को जानने वाला, चतुर्थ वेदों में जो रमण करता है मानो अपने में उसी की चर्चा करता है वह ब्रह्मा कहलाता है। हमारे पुरातन काल

में बेटा! लाखों वर्ष पूर्व, एक हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हुआ था और एकत्रित होने वाले समाज ने यह निर्णय लिया, कि भई, संसार को हम कैसे, मानो इसको क्रियात्मकता में ला सके, जिससे समाज सुचारू रूप से, समाज अपनी आभा में गति करता रहे और समाज में यह महानता की ज्योति जागरूक हो जाए। ऐसा कौन-सा प्रयत्न है?

उपाधि से संरक्षण

तो मेरे पुत्रों! देखो, आदि-ऋषियों का जब समाज एकत्रित होता है वेद कि पोथी निहित है, वेद का ज्ञान मानो देखो, ऋषि मुनियों को, तपस्वियों को प्रायः रहता है। उन्होंने बेटा! देखो, वेद में से कुछ मन्त्रों को उद्बुद्ध किया और उन वेद मन्त्रों को उद्बुद्ध करके उन्होंने कहा-भई, वेद मन्त्र यह कहता है कि समाज में उपाधियाँ होनी चाहिए, उपाधि विभाग वृत होना चाहिए, जिससे उपाधि से मानो संरक्षण में जो क्रियाकलाप होगा, उसमें एक महानता का जन्म होगा। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने एक उपाधि निहित की, मुनिवरो! देखो, जितने पृथ्वी पर राजा हैं, उन राजाओं के ऊपर एक इन्द्र का निर्वाचन होता है। वह इन्द्र बनता है। क्योंकि उसे इन्द्र कहते हैं। वास्तव में तो वैदिक साहित्य में मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया कि देखो, इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा को माना गया है, परन्तु यहाँ राजाओं का भी जो अधिराज है उसका निर्वाचन, उसको इन्द्र की उपाधि प्राप्त होती है क्योंकि जैसे मुनिवरो! जब मेघ मण्डलों का निर्माण होता है, मेघ मण्डल बनते है तो उस समय मेघ मण्डलों को मानो हम वत्रासुर कहते है, उन मेघ मण्डलों को हम, प्रायः वत्रासुर कहते हैं। वहीं वत्रासुर मानो देखो, शचि और इन्द्र से दोनों का मिलान होता है। इन्द्र को पत्नी का नाम शचि कहलाया जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब मेघ मण्डलों का निर्माण होता है, तो मुनिवरो! देखो, यह इन्द्र अपने वज्र से मानो वत्रासुर पर प्रहार करता है तो वह छिन्न-भिन्न होता है। तो मुनिवरो! देखो, उससे धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है।

मेरे पुत्रों! देखो, इन्द्र नाम यहाँ विद्युत का है, मानो इन्द्र नाम मेरे पुत्रों! देखो, यहाँ तेजोमयी का है और शचि नाम मानो विद्युत की तरंगों का है। दोनों का समन्वय हो करके ही, अग्नि को ले करके जब मुनिवरो! वत्रासुर से संग्राम, प्रहार करते तो वह वृष्टि का मूल बनता है और उसी से मुनिवरो! देखो, धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है, नाना प्रकार का उत्पति का मूल, इसी के गर्भ से उत्पन्न होना प्रारम्भ हो जाता है।

देवताओं का राजा इन्द्र

तो मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ वत्रासुर मेघ मण्डलों को कहा गया है और इन्द्र नाम मुनिवरों! देखो, वायु को कहते है और ब्रणे व्रतम् देखो, विद्युत नाम शचि का है। यह तीनों मानो देखो, सम्मिलान करते हुए, जब इस पर आक्रमण होते है, प्राण रूपी गति का जब इन्द्र आक्रमण करता है तो बेटा! यह छिन्न-भिन्न मानो देखो, अपने स्वरूप को वृष्टि में परिवर्तित कर देता है। तो बेटा! मैं विशेष विवेचना नहीं देना चाहता हूँ, विचार केवल यह कि इन्द्र नाम हमारे यहाँ देखो, विद्युत को और वायु को भी इन्द्र माना है। परन्तु इन्द्र नाम हमारे यहाँ राजाओं का, जो अधिराज, जिसका निर्वाचन होता है और उसको राजा और ऋषि मिलन हो करके उसका निर्वाचन करते है जिससे राजा के राष्ट्र में किसी प्रकार की त्रुटि आ जाए या दुरिता आ जाए तो मानो इन्द्र अपना निर्णय दे सके। वह देवताओं का राजा इन्द्र कहलाता है। वह राजा देवता है। ऋषि-मुनि सर्वत्र देवता है। परन्तु वह देवताओं का अधिराज उसको चुनौती दी जाती है। हमारे यहाँ परम्परागतों से सतोयुग के काल में तो प्रायः ऐसा रहा है कि जो एक सौ एक, अश्वमेघ यज्ञ कर लेता था, उसको इन्द्र की उपाधि प्रदान की जाती थी।

मेरे प्यारे! एक सौ एक अश्वमेघ याग, हमारे यहाँ अश्व किसे कहते हैं? अश्वमेघ यागों में भी कई प्रकार की प्रतिभा मानी जाती है। मानो देखो, अश्व नाम पर्यायवाची शब्दों में अश्व नाम राजा का है और मेघ नाम प्रजा का है तो अश्वमेघ जो राजा याग करता है, प्रजा के सुखार्थ के लिए मानो देखो, वह राजा इन्द्र और अवश्वमेघ यागी कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, उस याग में ब्रह्मण ब्रहे व्रतम् वह ब्राह्मण अपने ऊर्ध्वा-आसन से ध्रुवा में विद्यमान हो करके और वह याज्ञिक राजा का उसमें पदार्पण किया जाता है। इससे मूल में यह कि ब्राह्मण भी कोई त्रुटियाँ कर सकता है। परन्तु राजा उसका निवारण कर सकता है। अपने शक्ति बल से या अपनी मानो विद्या के द्वारा तो मेरे पुत्रों! देखो, उस राजा का नाम इन्द्र है, जो एक सौ एक अश्वमेघ याग कर लेता है। मेरे पुत्रों! उसको सब ऋषि, मुनि, राजा मानो उसको इन्द्र की उपाधि प्रदान कर देते हैं।

वशिष्ठ उपाधि

द्वितीय मानो देखो, उपाधि में हमारे यहाँ विष्णु की उपाधि मानी गई है। राजा का नाम विष्णु है। जो विष्णु अपनी इन्द्रियों पर संयम करता हुआ और प्रजा का पालन करता है। प्रजा में सतोगुण की भावना प्रदान कर देता है, मानो स्वतः विष्णु याग करता है, योग में परिणत हो जाता है। तो उसको हमारे यहां विष्णु उपाधि में प्रदान किया जाता है। तो वह सतोगुण की स्थापना करने वाला है। वह प्रत्येक वस्तु में सतोगुण को दृष्टिपात करता है। तो मेरे पुत्रां! देखो, द्वितीय अब्रह्म ब्रह्मा वर्ण सम्भवे मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार हमारे यहाँ वशिष्ठ भी उपाधि मानी जाती है। देखो, वशिष्ठ जितना भी यह रघुवंश था, महाराज दिलीप से क्या यह महाराजा सगर से ले करके, मुझे सगर तक का स्मरण है। मेरे पुत्रों! देखो, एक ऋषि इनके यहाँ पुरोहित के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। जिसको वशिष्ठ कहते हैं। हमारे यहाँ वशिष्ठ उसे कहते है जो मानो राजाओं को चुनौती प्रदान करने वाला हो। हमारे यहाँ एक वेद मन्त्र भी इस प्रकार का आता है वशिष्ठां पंच जाया व्रत्यं बृहि वर्णः स्वस्ता मेरे पुत्रों! वेद मन्त्र ऐसा आता है कि एक मानो देखो, एक कृतिका है वशिष्ठ नाम ऋषि का भी है वशिष्ठ राजा को भी कहते है, जो मानव में चुनौती प्रदान करे उसको वशिष्ठ कहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ पंच जाया ऐसे मानो देखो, पंचीकरण में, उन पंच ब्राह्मणों के द्वारा एक मानो देखो, एक गनति अ्रत विद्यमान है जिसे हमारे यहाँ वैश्वा कहते है। मानो उसके गर्भ से जन्म होता है, उसका नाम वशिष्ठ कहलाता है, मानो यहाँ राजा का वाची वशिष्ठ आता है।

मेरे पुत्रों! देखो, इसका अभिप्राय यह कि एक देवी से, एक वैश्वा के मानो देखो, चार पति है और चार पतियों का एक पुत्र है जिसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। मेरे पुत्रों! यह वेद के आलंकारिक रूपों में वर्णन आता है। जब मुनिवरों! देखो, राजा का निर्वाचन होता है तो उसको पाँच ब्राह्मण, जो बुद्धिमान, वेद के मर्म को जानने वाले ब्राह्मण है और वह राजकीय सभा में मानो देखो, एक सभा का निर्वाचन करते है और जिसे हम राज्य सभा या राज्य वृत्ति कहते है उसे वैश्वा कहते है मानो क्योंकि देखो, वह जिसकी होती है उसी की राष्ट्र सभा होती है और वही राष्ट्रीय वृत्तियों में रत रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद के मन्त्रों में यह कहा कि पाँच, पंचीकरण के द्वारा ही मुनिवरों! राष्ट्र का निर्माण होता है तो राजा का नाम वशिष्ठ है।

श्रृंगी उपाधि

परन्तु यहाँ प्रकरण के आधार पर वशिष्ठ नाम, हमारे यहाँ ऋषि को भी कहा जाता है। जो ब्रह्मवेता हो, ब्रह्म का चिन्तन करने वाला हो, मानो देखो, जो ऋषि मुनियों को, ब्रह्म की उपाधि प्रदान करने वाला हो। ब्रह्म की उपाधि किसे प्रदान की जाती है? मेरे पुत्रों! देखो, जिसमें तपस्या हो और तपस्या के साथ में नम्रता हो और नम्रता के साथ में ज्ञान हो, मेरे पुत्रों! ज्ञान के साथ में विज्ञान-आध्यात्मिक हो, उसे मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ की उपाधि

प्रदान की जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की उपाधि कही जाती है। हमारे यहाँ ऐसा है कि व्रत्यं ब्रह्मा एक श्रृंगी उपाधि मानी गई है। बेटा! श्रृंगी उपाधि उसे प्रदान की जाती है मानो देखो, आचार्यों का, ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ बेटा! जो अग्निष्टोम याग, वाजपेयी याग और पुत्रेष्टि याग, जो तीनों यागों में मानो वशिष्ठ हो जिसका तीनों याग में अधिपत्य हो, उसको श्रृंगी उपाधि प्रदान की जाती है।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है। वेद के मन्त्रों के आश्रय को ले करके, वेद के मन्त्र हम उद्गीत गाते रहते है। वाजपेयी याग उसे कहते है जो मुनिवरो! देखो, वाचं ब्रह्मे राजा के राष्ट्र में यदि अकाल आ जाए मानो देखो, अकाल आ जाए, पश-अकाल, तो उसके पश्चात् वाजपेयी याग करते है। उसका साकल्य भिन्न होता है मानो देखो, गो-घृत होता है उसके द्वारा आत्मवेत्ता जो याग करते है मेरे पुत्रों! देखो, उसे वाजपेयी याग कहते है। अग्निष्टोम याग उसे कहते है जो अग्नं ब्रह्मा जो तेजोमयी मानो देखो, वह शरद का काल है, शरद के काल में मुनिवरो! देखो, वह काल अनावृष्टि रूप बन गया है अनावृष्टि हो गयी है तो उसके पश्चात् उसी प्रकार का साकल्य, समिधा एकत्रित करके बेटा! जो याग तुम्हें संलग्न हो जाता है उसको मेरे पुत्रों! अग्निष्टोम याग कहते है। मानो देखो, अग्नि को साक्षी करके, उसी प्रकार की समिधाओं को-जिसमें अग्नि तत्व प्रधान विशेष होता है।

वनस्पति विज्ञान

मेरे पुत्रों! मैं वनस्पति विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ, बेटा! वनस्पति विज्ञान का संक्षिप्त परिचय दूँगा। मेरे पुत्रों! कुछ वृक्ष ऐसे है, जिन वृक्षों में देखो, तेजोमयी परमाणु विद्यमान होते है, अग्निष्टोम याग में वे समिधा होनी चाहिए। मेरे पुत्रों! कुछ वृक्ष ऐसे होते है जिनमें जल प्रधान होता है वह कितने ही वर्षों के पश्चात् भी उसमें जल की कृतिकाएं होती है। जब मानो देखो, अग्निष्टोम याग को करते है तो मुनिवरो! देखो, वृष्टि रूप अपने में धारण हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, वृष्टि याग भी होते रहते है। मैं बेटा! याग के भयंकर वनों में चला गया हूँ। पुत्रो! विचार केवल यह कि भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन, हमारे यहाँ जैसे हमारे यहाँ विश्वामित्र अपने में मानो प्रतिभाषित रहा है, विचारता रहा है। बेटा! देखो, जो धनुर्याग में पारायण रहा है और देखो, ब्रह्मविद्या में भी पारायण रहा है उसका नाम हमारे यहाँ विश्वामित्र कहा जाता है।

भगवान् राम की दीक्षा

मेरे पुत्रो! देखो, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, त्रेता के काल में जब बेटा! देखो, ऋषि मुनि विद्यमान हो करके जब ब्रह्मचारी दीक्षा लेते थे, तो आचार्य उन्हें दीक्षित बना रहा है, जब दीक्षित बनाता है तो उन्होंने कहा कि तुम्हारे लिए शेष क्रियाकलाप, तुम्हारा मानो क्रियात्मकता का यह रह गया है, कि तुमने अध्ययन तो किया है, अध्ययन भी क्रियात्मक किया है। परन्तु देखो, अब तुम्हारा यह है कि विद्यालय से तुम्हें अवकाश है। अब इसके पश्चात तुम्हें दूसरे विद्यालयों में प्रवेश होना है, दूसरे विद्यालयों में तुम्हें जाना है, जहाँ तुम्हें धनुर्विद्या का अध्ययन करना है। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने त्रेता के काल में ऋषि-मुनियों की आज्ञा पा करके बेटा! ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ था। जिसमें महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला वह समाज था जिसमें महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी श्वेतकेतु, महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा शिव और देखो, शिव-पुत्र गणेश जी मुनिवरो! देखो, नाना जो दर्शनों के मर्म को जानने वाले थे जो मानो देखो, क्रियात्मक अपने जीवन में रहस्यतम बने हुए थे मुनिवरो! देखो, जिनमें ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु मुनि महाराज मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि विश्वामित्र विद्यमान है। तो मुनिवरो! देखो, राम ने विद्यालय से अवकाश प्राप्त कर लिया था। राम ने मानो देखो, दीक्षा प्राप्त कर ली, सर्वत्र

अपनी विद्या में वह पारायण थे, विज्ञान में उनकी गतियाँ बड़ी विचित्र रही है।

तो मेरे पुत्रों! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है जब उन ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हुआ, तो ऋषि-मुनियों ने अपना-अपना मन्तव्य प्रगट किया, कि आज हम क्यों, इस सभा में विद्यमान है। तो महर्षि प्रवाहण ऋषि महाराज बड़े ब्रह्मवेत्ता थे, आयु में भी बड़े दीर्घ थे। उन्होंने कहा-भई, हमें तो यह आशय दिया गया है कि देखो, इस अयोध्या में, सबसे प्रथम जो अयोध्या का निर्माण किया गया है, वह स्वायंभु मनु जी ने इस अयोध्या का निर्माण किया था। मानो देखो, इस अयोध्या में राष्ट्रीय प्रणाली ऐसी पुण्य भूमि है कि इसमें राष्ट्रीयकरण होता रहता है। मेरे विचार में यह है कि अब राम, लक्ष्मण और इन सब चारों विधाताओं के द्वारा एक याग होना चाहिए। जिसे हम धनुर्याग कहते है। क्योंकि इन्होंने सर्वत्र विद्या का अध्ययन कर लिया है व्याकरण इत्यादि मानो देखो, राष्ट्रीय प्रकरण इन्होंने वाजपेयी याग और अग्नि में वृत्तियों में रत करने वाले शब्द विद्याओं का इन्होंने अध्ययन कर लिया है। परन्तु इनके लिए एक याग रह गया है जिसे धनुर्याग कहते है।

मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा एक धनुर्याग किया जाए। धनुर्याग क्यों किया जाए? मेरे पुत्रो! ऋषि-मुनि आपस में उत्तर देने लगे, इसलिए कि राष्ट्र सुचारू रूप से अपने में गति करता रहे, कोई आक्रमण करने लगे, तो उस पर प्रहार कर सके, मानो देखो, राज्य सभा का यह क्रियाकलाप होता है। मानो यदि कोई आततायी और दुश्चर मानो चरणों में परिणत हो जाए, दुश्चरिता आ जाए तो उसको गदा के द्वारा उसको मानो अस्त्रों शस्त्रों के द्वारा प्रहार कर सके। मानो इस प्रकार की विद्या राजाओं को प्रदान करनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, इतने में बड़े भव्य, महाराज गणेश जी ने कहा-कि मेरे विचार में तो राजा के राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए। समुद्रों के तटो पर विद्यमान हो करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महाराजा गणेश जी और महाराजा हनुमान दोनों एक ही गुरु के शिष्य कहलाते थे। उनके गुरु का नाम सोभम वाचकेतु मुनि थे जो मेरे प्यारे! समुद्र के किनारे, विद्या का अध्ययन कराते रहते थे। और वह अस्त्रों-शस्त्रों की क्योंकि, देखो, सूर्य विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा विज्ञान रहा है, ये चर्चाएं तो बेटा! मैं आज नहीं प्रगट करूंगा। परन्तु देखो, सूर्य विद्या के ऊपर उनका बड़ा अधिपत्य रहा है।

तो महाराजा गणेश जी मानो समुद्र के तट पर, सूर्य की किरणों का अवधान करते रहते थे और अवधान करते ही मुनिवरो! उनके द्वारा यन्त्रों का निर्माण भी होता रहता था। ये चर्चाएं मेरे पुत्रों! विज्ञान की है, मैं इस विज्ञान में, आज जाना नहीं चाहता हूँ केवल क्या, मुनिवरो! देखो, सब ऋषि मुनियों ने एक निर्णय दिया। महाराजा गणेश जी का भी यह वक्तव्य रहा कि राजा के राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए, कि विज्ञान इतनी गति वाला होना चाहिए, कि विज्ञान के द्वारा मानो देखो, राष्ट्र की निर्माणता हो उस विज्ञान का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए, वह बुद्धिमत्ताओं के भुजों में, उनके विचारों में, विज्ञान रहना चाहिए। मानो इतने में बेटा! देखो, महाराजा शिव ने भी इसी प्रकार का अनुमोदन किया और भी नाना ऋषि-मुनियों के समाज में एक वाक्य आया कि वास्तव में यह अयोध्या राष्ट्र शक्तिशाली रहना चाहिए। ज्ञान में भी, विज्ञान में भी, और क्रियाकलापों में भी, मानो देखो, पवित्र रहना चाहिए।

मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा विश्वामित्र से यह प्रार्थना, कि आप एक धनुर्याग कीजिए और चारो राजकुमारों को और जो भी इसमें अध्ययन करना चाहता है, तो तुम्हारे यहाँ धनुर्याग होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा विश्वामित्र ने यह स्वीकार कर लिया और सभा अपने-अपने में विसर्जित हो गई, यह निर्णय हो गया कि अयोध्या में जो चारों पुत्र है और भी जो कोई राष्ट्र का पुत्र वृत्तियों में मानो देखो, धनुर्याग में सम्मिलित होना चाहता है।

अतः धनुर्याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! यह सब स्वीकार हो गया सभा विसर्जन हो गई। दण्डक वनो में बेटा! देखो, महर्षि विश्वामित्र का पदार्पण हो गया। वहाँ मानो एक आश्रम का निर्माण हुआ। निर्माण होने के पश्चात् उन्होंने याग प्रारम्भ किया। मुनिवरो! देखो, उन्होंने कृतिभान ब्रह्मचारी को ले करके बेटा! देखो, याग का प्रारम्भ किया। याग में सफलता प्राप्त नहीं हुई।

मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने महर्षि पनपेतु मुनि महाराज को निमन्त्रित किया और यह कहा-कि महाराज मेरा याग सम्पन्न होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने याग में कुछ युक्तियाँ प्रगट की और निर्माणशाला का एक वृत्त होने लगा, तो मानो देखो, उसमें परमाणु ले करके यन्त्रों की अऋता उत्पन्न करते हुए मुनिवरो! देखो, उन्होंने जब याग प्रारम्भ किया तो उसमें भी अधूरापन रह गया। उन्होंने मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज, मुनि को निमन्त्रित किया। महर्षि भारद्वाज, उनके शिष्य अप्रतम् देखो ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी, यज्ञदता यज्ञकृतिका अश्वेति मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु मुनि महाराज की कन्या। मेरे पुत्रों! देखो, ये सब अपनी अपनी स्थलियों को व्रते वहां से गमन करके बेटा! वह दण्डक वनों में आये। महर्षि विश्वामित्र से उनका समन्वय हुआ उन्होंने कहा-कहो भगवन! क्या क्रियाकलाप, उन्होंने कहा-प्रभु! मैं धनुर्याग करना चाहता हूँ और धनुर्याग में मुझे सहायता दीजिए। उन्हें कुछ युक्तियां प्रगट की। धनुर्याग में नाना प्रकार के परमाणु, कुछ यन्त्र थी उन्होंने प्रदान किए। मेरे पुत्रो! देखो, वहाँ से उनका तो गमन हो गया और महर्षि विश्वामित्र ने धनुर्याग की सब सामग्री एकत्रित कर ली।

अयोध्या में महर्षि विश्वामित्र

मेरे पुत्रो! वहाँ से वे गमन करते है और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, अयोध्या में जा पहुँचे। जब अयोध्या में जा पहुँचे तो मुनिवरो! देखो, महाराजा दशरथ को यह प्रतीत हुआ कि आज तो महर्षि विश्वामित्र का आगमन हो रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा विश्वामित्र राजा दशरथ के समीप पहुँचे। उन्होंने राज स्थली को त्याग दिया आईये, भगवान! पधारिये। वह विराजमान हो गये। उन्होंने कहा-प्रभु आप इस प्रकार आये हो, प्रभु, आप मुझे सूचना दे देते तो मैं आपकी आज्ञा के अनुसार मानो वाहनों में आपका आगमन होता। उन्होंने कहा-कोई वाक् नहीं भगवन्! उन्होंने प्रार्थना की। कि महाराज! मुझे इन किशोरों को दीजिए, मैं धनुर्याग कर रहा हूँ। उन्होंने कहा-प्रभु! मैं राजा हूँ, आप धनुर्याग कर रहे है तो मैं आपके याग को सम्पन्न कराऊँगा। क्योंकि यह राजा का कर्तव्य है। उन्होंने कहा-नहीं, मुझे ये किशोर चाहिए

मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने यह वाक्य कहा कि किशोर चाहिए, ब्रह्मणे व्रतं ब्रहे उन्होंने यह वाक्य कहते हुए कहा कि मैं ब्राह्मण हूँ और मैं ब्राह्मण बल से मानो देखो, तुम्हारे किशोरो को ले जाना चाहता हूँ। मैं पुरोहित हूँ तुम्हारे राष्ट्र का पुरोहित कहलाता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, राजा कुछ नम्र हो गये, मौन हो गये। परन्तु जब राजलक्ष्मियों को यह प्रतीत हुआ कि आज तो महर्षि विश्वामित्र का आगमन हो रहा है। तो मुनिवरो! देखो, वहाँ से कौशल्या इत्यादि सर्वत्र ऋषि के दर्शनार्थ, जब वह राज सभा में प्रवेश हुई तो मानो ऋषि के चरणों को बारी-बारी स्पर्श करने लगी। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा-कहिए भगवन! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा-हे देवियों! मैं इन किशोरो के द्वारा धनुर्याग चाहता हूँ। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम, यह तो हमारा सौभाग्य है भगवन् मानो आप इन किशोरों को ले जाईये, यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र ऋषि मुनियों की सेवा नहीं कर सकता, उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकता, तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा।

यह वाक्य मुनिवरो! देखो, कौशल्या इत्यादियों ने जब वर्णन किया तो मुनिवरो! देखो, राजा मौन हो गये।

राजा से कहा-कि राजकुमारों को प्रदान कीजिए। मेरे पुत्रों! देखो, चारो राजकुमारों को ले करके उन्होंने धनुर्विद्या के लिए वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए वह उसी दण्डक वन में आ करके मुनिवरो! देखो, वह धनुर्विद्या को प्रदान करने लगे। धनुर्विद्या क्या है इसके ऊपर विचार-विनिमय करना है।

धनुर्याग

मेरे पुत्रो! मुझे एक समय, मेरे पुत्र महानन्द जी ने यह वर्णन किया कि धनुर्याग में राक्षस आते थे और राक्षस, उसमें क्रूरता उत्पन्न करते थे तो राम, लक्ष्मण दोनों को लाया गया था। मैंने बेटा! तुम्हें कहा है कि चारों राजकुमारों ने धनुर्विद्या को पूर्ण कराया। मेरे पुत्रो! देखो, दैत्य कोई नहीं होता। दैत्यां ब्रह्मे व्रतम् मेरे पुत्रो! देखो, दैत्य वही होता है जिसके दुष्कर्म होते है मानो देखो, उनके याग को कोई विध्वंश नहीं करता था। उन्हें तो वह पूर्ण कराना था और पूर्ण कराना क्या, उन्हें तो राजकुमारों को शिक्षा देनी थी। मेरे पुत्रो! देखो, उसमें छत्तीस ब्रह्मचारी ऐसे थे, जो मुनिवरो! देखो, धनुर्याग को पूर्ण करने के लिए, शिक्षा अध्ययन करने लगे। प्रातःकाल क्या, सायं काल क्या मेरे पुत्रो! वह परीक्षण करते रहते थे, यन्त्रों का, मानो यन्त्रों का परीक्षण करना उसको धनुर्याग, क्योंकि धनुर्विद्या हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में बड़ी विचित्रता में परिणत की गई है। तो मेरे पुत्रो! देखो, धनुर्याग उन्होंने किया। धनुर्याग करने के पश्चात् धनरं ब्रह्मे व्रतम् मेरे पुत्रो! देखो, शोभनी ब्रह्मचारी भी अध्ययन करते थे और देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी और सुकेता भी अध्ययन करते थे। मुनिवरो! देखो, समय-समय पर महर्षि भारद्वाज मुनि का आगमन होता रहता।

तो मुनिवरो! देखो, उनके यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया गया, ऐसे-ऐसे यन्त्रों में मानो प्रतिपादित हो गये, जिन यन्त्रों से बेटा देखो, वरुणास्त्र आग्नेयस्त्र, ब्रह्मास्त्र मेरे पुत्रो! देखो, ऐसे-ऐसे यन्त्रों का उन्होंने एक समय बेटा! अपनी गुप्तचर गोष्ठियाँ की, मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है बेटा! जैसे हम आज विश्वामित्र की उस स्थली पर विद्यमान हो, जहाँ उनकी मानो विचार गोष्ठियाँ हुआ करती थी उनकी विचार गोष्ठियों में विद्यमान हो करके राम मानों चारों विद्याता, शोभनी ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी और शबरी इत्यादि सब विद्यमान हो करके बेटा! विचार-विनिमय करने लगे और वह विचार क्या था? उन्होंने कहा-ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया जाए, जिसको हम जलास्त्र कहते है, अग्नि व्राप्तिका यन्त्र कहते है, मेरे पुत्रो, देखो उन्होंने यन्त्रों का निर्माण करना प्रारम्भ किया।

मेरे पुत्रो! एक यन्त्र उन्होंने इन्द्र के यहाँ से प्राप्त किया था। एक यन्त्र शेष राजा के यहाँ से प्राप्त हुआ, जिन यन्त्रों में यह विशेषता थी कि यन्त्र का प्रहार किया गया है नीचे जलाशय बन गया है ऊर्ध्वा से मानो देखो, अग्नि की वृष्टि हो रही है वह मानो देखो, राजा ब्रहे वह संग्राम में मानो देखो, द्वितीय की सेना नष्ट भ्रष्ट हो रही है। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने दूसरे यन्त्र का निर्माण किया, जिस यन्त्र को हमारे यहाँ देखो, जलाशय यन्त्र कहते है, जिसको वरूणास्त्र कहते है। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने वरूणास्त्र का प्रहार किया तो मुनिवरो! न जलाशय रहता है और न मानो देखो, अग्नि रहती है दोनों को अपने में निगल जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब जलाशय का विशेष प्रकोप हो जाता है तो उसके पश्चात् बेटा देखो, अग्नि अस्त्र होता है जो मुनिवरो! देखो, जिसको ब्रह्मावृत्ति का यन्त्र कहते है, उस यन्त्र में यह विशेषता मानी गई है कि वह जलाशय को अपने में ग्रहण कर जाता है। मानो उसे अपने में पान कर जाता है, संग्राम हो रहा है।

तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण प्रायः महर्षि विश्वामित्र के उस विद्यालय में, उस दण्डक वन में मानो देखो, ये नाना रूप से अध्ययन करते थे।

विश्वामित्र

मेरे पुत्रो देखो, मैं विशेष चर्चा प्रगट न करता हुआ। विचार केवल यह कि जो धनुर्याग में पारायण हो, उसका नाम विश्वामित्र कहा जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह विश्व की मित्रता में प्रतिभाषित रहता है। विचार क्या मुनिवरो! देखो, वह विश्वामित्र है, महर्षि वशिष्ठ, जो विद्यालयों में, राजकुमारों को, राज्यों को ऊर्ध्वा में विचार देने वाला और मुनिवरो! उसको ब्रह्मवेत्ता की उपाधि प्रदान करने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, एक कृति वाचकेतु ब्रह्मवेत्ता एक ऋषि हुए है मानो देखो, जब वह राजा थे, राजा से तपस्वी बने और तपश्चर करते हुए एक समय महर्षि वशिष्ठ के द्वारा वह, विराजे, उन्होंने विचारा मुझे ब्रह्म-उपाधि को प्राप्त करना है। वह ब्रह्म-उपाधि को प्राप्त करने के लिए मेरे पुत्रो! देखो, जब उनके समीप आये तो एक अस्त्र शस्त्र मानो देखो, विद्यमान था तब उन्होंने कहा-आईये, राजर्षि, राजर्षि उच्चारण करते ही मानो क्रोध छा गया। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु, मैं तो ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए आया, आपने मुझे राजर्षि की उपाधि प्रदान की है। उन्होंने कहा-तपो वर्ण ब्रहे तपो स्वयम्भे वाचो देवाः ऋषि ने कहा जाओ, तप करो। तो मुनिवरो! वह तपस्या के लिए चले गये।

जब तपस्या करने लगे तो तपश्चर मुनिवरो! देखो, करोड़ो गायत्राणी छन्दों में रमण करते हुए, कण्ठ को ऊर्ध्वा में, शीतल बनाते हुए मेरे पुत्रो! उन्होंने अध्ययन करते हुए एक वेद की आख्यिका में नम्रतं ब्रह्मे वाच जब तक मुनिवरो! देखो, नम्रता नहीं आती, तो वह ब्रह्मवेता नहीं बनता। मेरे प्यारे! देखो, एक समय जब वह वशिष्ठ मुनि महाराजा के द्वार पर आये तो बेटा! देखो, माता अरून्धती और वशिष्ठ दोनों विद्यमान थे, दोनों के चरणों में ओत-प्रोत हो गये, नम्र हो गये। तो उस समय वशिष्ठ ने कहा-हे ऋषिवर! तुम्हें यह प्रतीत हो गया, तुम्हें किसने ज्ञान कराया है। उन्होंने कहा-प्रभु! यह वेद की आख्यिका में था। उन्होंने कहा-तो यही तो ब्रह्मवेत्ता की सबसे प्रथम ब्रह्मचर्यता है। क्योंकि जो ब्रह्मवेत्ता बनना चाहता है, ब्रह्म के समीप जाना चाहता है बेटा वह ब्रह्म मानो ज्ञानवान है इसलिए मानव को ज्ञानी बनना चाहिए। परमपिता परमात्मा निरभिमानी है, इसलिए मानव को निरभिमानी बनना चाहिए, परमपिता परमात्मा नम्र है, इसलिए मानव को अक्रोध होना चाहिए वह नम्र बन करके मानो देखो, वह सर्वत्र अपनी जो उपाधिवादी है उसके चरणों की वन्दना करें।

ब्रह्मवेत्ता

तो विचार क्या, मुनिवरो! देखो वशिष्ट ने कहा-कि परमपिता परमात्मा नम्र है मानो वह सजातीय है, इसलिए उनके चरणों में ओत-प्रोत हो जाना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, जो नम्र है, ज्ञानवान है, विवेकी है वही तो ब्रह्मवेत्ता बनता है। तो यह बेटा! उपाधि हमारे यहाँ परम्परागतों से मानी गई है। आज मैं कोई नवीन चर्चा करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि बेटा! मानव अपनी अपनी उपाधियों में निहित रहता है। आज का विचार अब हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की अराधना करते हुए मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए अपने में नम्र और मानो देखो, वशिष्ठ बन करके,, अपने जीवन को ऊर्ध्वा में मेरे पुत्रो! जिससे हमारा मानव जीवन पवित्र बन जाए। हम मानो देखो, सर्वत्र नाना प्रकार के यागों में रत हो करके आज मैं बेटा! तुम्हें अग्निष्टोम याग, वृष्टियाग मानो देखो, वह अस्सुतं ब्रह्मे अग्नं व्रताः नाना प्रकार के यागों का चयन भी हमारे यहां प्रायः होता रहा है। वैदिक साहित्य में याग को जब हम जानना चाहते है तो बेटा! दो सौ चौरासी प्रकार के यागों का चयन प्रायः देखो, हमारे वैदिक साहित्य में किया। दौ सौ चौरासी मानो इस प्रकार के जो याग है उन यागों के भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड है भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराएं है जिसके ऊपर बेटा! हम समय-समय पर विचार विनिमय करते रहते है। आज का वाक् बेटा! अब यह समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए बेटा!

त्रेता कालीन विज्ञान

जो ब्रह्म का ज्ञान, ब्रह्म के मर्म को जानता है जो ब्रह्मा कहलाता है। याग में जिसका अधिपत्य होता है मेरे पुत्रो! देखो, भिन्न प्रकार के यागों में जिसमें पारायणता होती है उसको वही उपाधि प्रदान की जाती है एक आता है तो द्वितीय उसकी स्थापना में परिणत हो जाता है। तो यह बेटा! आज का वाक् कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने यहाँ क्रियात्मक, क्रियाकलापों में रत होते हुए, विज्ञान के वांगमय में मानो प्रवेश करके इस संसार से पार हो जाए। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा तो बेटा! मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् मा रथौ आभ्यां रथं मम बृहि......... 3/8/1987 आर्य समाज लारेन्स रोड, अमृतसर, पंजाब।

२ यज्ञ एवं द्यौगामी चित्र दर्शन 27 04 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माने गये हैं। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। मानो वे उसी में वास कर रहे है इसीलिए उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा अनुपमता प्रायः इस संसार में ओत-प्रोत है और संसार में मानो अपने में प्रतिभाशाली और महानता का सदैव उद्घोष होता रहता है।

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र यह कह रहा है कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप है मानो उसी में वे विद्यमान रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है। जिस भी वेद मन्त्र के ऊपर हम अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं मानो उसी में हमें अनन्तमयी दृष्टिपात आने लगता है कि परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान यज्ञमयी स्वरूप मानो वह अनन्तता में सदैव दृष्टिपात आता रही है।

यागों का चलन

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें न ले जाता हुआ, आज का हमारा वेद मन्त्र यह कह रहा था यज्ञं ब्रभु श्वन्नम् मानो वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप है क्योंकि कई समय से बेटा! यज्ञों के ऊपर विवेचना प्रारम्भ हो रही है। आज भी कुछ वेदमन्त्रों में एक रूप, एक वेद मन्त्र नहीं, अनन्य मन्त्र इस प्रकार के आये हैं जिनमें यागों का बड़ा वर्णन और नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में प्रायः होता रहा है। इससे पूर्व काल में हमने यह प्रगट कराया कि नाना प्रकार के जो याग है उनका अधिपति मानो देखो, राजा होना चाहिए। राष्ट्रीय विचारों में जब मानव अपने में मनस्तव प्रमाणं वृत्ति देवाः वह उसमें निहित हो जाता है तो मानो वही उसमें दृष्टिपात आने लगता है।

आओ मेरे प्यारे! आज के वेद मन्त्रों में हम न जाते हुए, आज मैं बेटा! तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनियों ने इस याग के ऊपर बेटा! बड़ा अनुसन्धान और बड़ा अन्वेषण किया है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और मानो एक-एक वेद मन्त्र के ऊपर बेटा! अन्वेषण और अनुसन्धान होता रहा है।

ऋषि की दिनचर्या

आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ एक वेद मन्त्र की विवेचना करने वाला ऋषि मानो अपने में मुग्ध और अपने में शान्त है। मुनिवरो! देखा, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है जब महाराज अश्वपति के यहाँ मानो देखो, वृष्टि याग हुआ और वृष्टि याग को सम्पन्न कराने के पश्चात् महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज अपने आश्रम में आ विराजे। जब, वह अपने आश्रम में विराजमान हो गए तो उनकी नियमावली यह बनी हुई थी कि सायंकाल को जब निद्रा की गोद में जाते, तो न्यौदा में से मन्त्रों का उदगीत गाते रहते और वह उदगीत गा करके देखो, उन्हें निद्रा आ जाती थी। तो महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज अपने में बेटा! वेदों का जब अध्ययन करने लगे, वेदों का उद्घोष होने लगा तो मुनिवरो! देखो, एक वेदं ब्रह्मा वर्णनम् देखो, निद्रा की गोद में, चले गये। मानो देखो, मध्यरात्रि को वह निद्रा से जागरुक हो गए और मध्यरात्रि में जो वेदों का

अध्ययन करना प्रारम्भ किया तो मानो देखो, ये वेद मन्त्र आ रहा था। चित्रं रथं ब्रहे अभ्यं देवं यजमान रसम्ब्रहाः द्यौ लोकाः चित्र गमनं ब्रहे व्रतम्।

वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। और बेटा! देखो, ऋषि के समीप जब यह वेद मन्त्र आया तो इसके ऊपर विचार विनिमय करने लगे। जब विचार करने लगे तो विचार करते-करते बेटा! वह रात्रि का काल समाप्त हो गया, मानो प्रातःकालीन हो गया, सूर्य उदय हो गया। अब ऋषि इसी मनन में लगे रहे हैं इसी में वह मानो चिन्तन कर रहे हैं। मानो यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक में कैसे जाता है? मेरे प्यारे! देखो, इस चिन्तन में लगे रहे, विचारते रहे। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का आश्रम निकटतम था, महर्षि विभाण्डक मुनि ने विचारा कि आज तो ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा है, इसके गर्भ में क्या कारण है?

ऋषि द्वारा मन्त्र चिन्तन

मानो देखो, वहाँ से महर्षि विभाण्डक अपने आसन को त्याग करके बेटा! ऋषि के समीप पहुँचे और वह उनसे बोले कि हे प्रभु! आपने अभी तक अपने आसन को नहीं त्यागा है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं एक मनन और चिन्तन में लगा हुआ हूँ। वेद मन्त्र कहता है यजमानं ब्रह्मा चित्रं ब्रहे ब्रहा हे प्रभु! वेद की आख्यिका कहती है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। मैं उस द्यौ लोक को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है बेटा! ब्रहे मानो विभाण्डक मुनि भी इसी चिन्तन में लग गए, मनन करने लगे। परन्तु अपने में कोई निमटारा नहीं कर सके, जब निमटारा नहीं हुआ तो मुनिवरो! देखो, ऋषि मुनियों का एक समूह जिसमें महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु और महर्षि सोम और मुनिवरो! देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्तः, ब्रह्मचारी सोमवृत्तिका इत्यादि बेटा! नाना ऋषिवरों का एक समूह, भ्रमण करते हुए, महर्षि वैशम्पायन के आश्रम में विराजमान हो गया। महर्षि वैशम्पायन ने उनका स्वागत किया, वे विराजमान हो गये। महर्षि प्रवाहण ने कहा कि प्रभु! आप तो बड़े आश्चर्य में हमें निहार रहे हो। आप के मुखारबिन्दु को दृष्टिपात करते हुए हम आश्चर्य में है कि आप मानो देखो, अपने में हृस से प्रतीत हो रहे हैं। महर्षि वैशम्पायन बोले कि प्रभु! यह वेद का मन्त्र है, मैं इसमें लगा हुआ हूँ और मैं इसमें कोई निमटारा नहीं कर पा रहा हूँ।

ऋषियों का अयोध्या गमन

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषिवर भी इसके ऊपर अनुसन्धान अथवा मनन और चिन्तन करने लगे। अब वह चिन्तन का एक अमूल्य, अद्भुत विषय बन गया। मेरे प्यारे! देखो, इतने में ऋषि ने कहा-प्रभु! अगर आप इसमें निमटारा नहीं पा रहे हो, तो मेरी इच्छा यह है कि तुम एक याग का आयोजन करवाओ। मानो देखो, अयोध्या में गमन करो। राम के द्वारा एक याग का आयोजन होना चहिए और उस याग के द्वारा मानो इसका स्पष्टीकरण हो सकता है। मानो ऋषि-मुनियों के हृदयों में ये वार्ता समाहित हो गयी। समाहित होने के पश्चात ब्रह्मणं ब्रह्मा लोकां वाया स्वाहाः मुनिवरो! देखो, उन्होंने वहाँ से गमन किया, आश्रम को त्याग दिया महर्षि विभाण्डक इत्यादि मुनिवर और ऋषि वैशम्पायन और ब्रह्मचारी रोहिणी कृतिका और मुनिवरो! देखो, प्रवाहण, शिलक और दालभ्य सर्वत्र ऋषि-मुनियों का एक समाज वहाँ से गमन करता है और भ्रमण करते हुए बेटा! जब रात्रि छा गई तो महर्षि व्रेतकेतु मुनि महाराज के यहाँ उन्होंने विश्राम किया। महर्षि व्रेतकेतु बोले कि प्रभु! आपका कहाँ गमन हो रहा है? उन्होंने कहा-प्रभु! न्यौदा में ऐसे मन्त्र आए हैं उसके ऊपर अन्वेषण हो रहा है। परन्तु देखो, उसके निर्णय में राम के द्वारा

एक याग की प्रबल इच्छा हो गई है। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम।

भगवान राम का नियम

मेरे प्यारे! देखो, वह रात्रि का काल समाप्त हो गया। प्रातः कालीन हो गया। प्रातःकाल मानो देखो, जब तारामण्डल अपनी आभा में चटक रहा, मानो रात्रि के अन्तिम प्रहर में वे मानो वहाँ से गमन करते हैं और भ्रमण करते हुए प्रातःकालीन बेटा! देखो, अयोध्या में पहुँचे। अयोध्या में बेटा! राम का यह नियम था कि प्रातःकालीन बेटा! देखो, उनके यहाँ एक याग होता रहता था। देव पूजा होती रहती थी। उसी देव पूजा में बेटा! राम संलग्न है। मेरे प्यारे! उनका याग तो सम्पन्न हो गया था, परन्तु उनकी उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी और उपदेश मंजरी में यह उद्गीत गा रहे थे कि मानो देखो, वेद में आ रहा था विष्णु शब्द, यह विष्णु अपने में कितना प्रियतम कहलाता है।

भगवान राम का उपदेश

वेद के मन्त्र को लेकर के राम का उपदेश प्रारम्भ हो रहा था और राम यह उपदेश दे रहे थे-हे राष्ट्रवेत्ताओं! हे राष्ट्र के कर्मवेत्ताओं! यदि तुम राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हो, महान बनाना चाहते हो, तो तुम्हारे राष्ट्र-गृह में प्रत्येक गृह में देव पूजा होनी चाहिए अथवा याग होना चाहिए। मानो जहाँ विचारों की सुगन्धि और साकल्य की सुगन्धि को अग्नि मानो अपने में धारण कर लेती है तो वह राष्ट्र अपने में पवित्र बन जाता है।

राष्ट्र के चार भुज

मेरे प्यारे! देखो, राम का उपदेश चल रहा था कि जब हम विद्यालयों में अध्ययन करते थे, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ब्रह्म की विवेचना करते हुए देखो, विष्णु की विवेचना करते रहते थे कि यह विष्णु कौन है? वैदिक आचार्यों ने, वैदिक परिभाषा में विष्णु नाम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे बेटा! देखो, विष्णु नाम राजा को कहा गया है, वह राजा विष्णु है जो चार प्रकार की नियमावली का निर्माण करने वाला हो। राम का यह उपदेश चल रहा था कि चार प्रकार के नियम राजा के राष्ट्र में होने चाहिए। तो वह राजा विष्णु कहलाता है। मानो चार कौन से भुजब्रह्म।

मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम नियमावली में उनके यहाँ मानो देखो, पदम होना चाहिए, द्वितीय नियम में गदा होनी चाहिए और तृतीय नियम में उनके यहाँ मानो चक्र होना चाहिए और चतुर्थ में शंख होना चाहिए। यह चारों मानो देखो, राष्ट्रीयता को ऊँचा बनाने वाले हैं। मानो समाज को, जन समूह को ऊँचा बनाने वाले हैं। मानो देखो, यह विवेचना कर रहे थे, कि विष्णु नाम मानो देखो, यहाँ राजा को कहा गया है। राजा के राष्ट्र में पदम होना चाहिए, सुचरित्रता होनी चाहिए, मानो देखो, उसके पश्चात गदा होनी चाहिए, जो आततायियों को समाप्त करने के लिए, आततायियों को ऊँचा बनाने के लिए एक गद्दा होनी चाहिए। और तृतीय जो नियम है, वह नियम यह कहता है कि शिक्षं ब्रह्मा ब्रहे मानो देखो, राजा के राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। मानो देखो, वह चक्र होना चाहिए, अपनी संस्कृति होनी चाहिए। संस्कृति का रूपान्तर करते हुए आचार्य ने कहा कि यह जो मानं ब्रह्मा व्रतम् मानो यह जो शंख ध्वनि है इसको अपनाना चाहिए, यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, महान बनाना है तो राजा के राष्ट्र में एक ध्वनि होनी चाहिए और उस ध्वनि का नामोकरण मानो देखो, एक अप्रतं ब्रह्मा एक चक्र कहा जाता है। वह जो चक्र है वही तो गमन कर रहा है, ओत-प्रोत हो रहा है, वही तो महानता का एक द्यौतक बना हुआ है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा उपदेश उनका प्रारम्भ हो रहा था। उपदेश में यह कि तृतीय भुज में देखो, चक्र होना चाहिए। अपनी राष्ट्रीय संस्कृति का प्रसार मानो पृथ्वी मण्डल पर होना चाहिए। पृथ्वी मण्डल देखो, इनको

अपने में धारयामि बना रहे, धारण करने वाला हो, धारयामि बन करके बेटा! राष्ट्र को, मानवता को ऊँचा बनाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष, विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल यह कि चतुर्थ भुज में देखो, शंख ध्वनि होनी चाहिए। शंख ध्वनि का अभिप्रायः यह है, शंख कहते हैं बेटा! नाद को, और शंख कहते हैं वेदों के गान को, जो स्वरों से, ब्राह्मण द्वारा वेदों का गान गाने वाला है वह ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो करके बेटा! सागर से पार होता है। मानो देखो, वह गदा होनी चाहिए। गदा का अभिप्राय यह है कि राजा के राष्ट्र में मानो देखो, गदां ब्रह्मा व्रतम् चक्र होना चाहिए। चक्र का अर्थ है कि मानो अपनी संस्कृति का प्रसार हो, उसी संस्कृति को प्रत्येक मानव अपनाने वाला हो और अपना करके अपने राष्ट्र को उन्नत बनाने वाला हो तो बेटा! देखो, ध्वननं ब्रह्मा कृतं देवाः वह शंख ध्वनि वाला कहलाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है, समय तो इतना नहीं है, विचार केवल यही, कि मानव को अपने में ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए और वह ऊर्ध्वा में गमन करने वाला बेटा! शंख ध्वनि को अपनाता रहता है। क्योंकि गान गाना है, जटा पाठ में गाइये, धन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में बेटा! वेदों का गान गाया जाता है। तो जो गान गाना जानता है वही तो बेटा! देखो, पार होना जानता है। तो विचार क्या बेटा! देखो, हमारा, एक-एक वेद मन्त्र बड़ा उज्ज्वल और महानता में परिणत कर रहा है। तो मेरे प्यारे! जब वेदां ब्रह्मणां ब्रहे वेदां रुद्रं भवा सम्भवाः लोकाम् बेटा! देखो, इस प्रकार अपने विचारों को व्यक्त करते हुए मुझे बेटा! ऐसा स्मरण आ रहा है जैसे हम आज देखो, उन गृहों में विद्यमान हो, उनके आसनों पर विद्यमान हो, ऐसा अनुभव होता रहता है। परन्तु देखो, इस आभा में न जाते हुए, केवल विचार क्या, कि वे अपने में अपनेपन का उज्ज्वलता में भान कर रहे थे अपनी उज्ज्वलता को दृष्टिपात करते हुए तो मेरे प्यारे! देखो, वह शंख ध्वनि होनी चाहिए। विचार यह चल रहा था, शंख ध्वनि का अभिप्रायः यह है कि वेदों का पठन-पाठन स्वरों में होना चाहिए। बेटा! जैसे माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त, अनुदात्त मुनिवरो! और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के पाठों का चयन प्रायः हमारे यहाँ होता रहा है। तो मेरे पुत्रो! विचार क्या, ब्रह्मणां ब्रह्मे व्रतपद्दे, बनना चाहिए, जो प्राणी व्रती बन जाता है वही तो मानवीयता में रत होने के लिए तत्पर होता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मैं तुम्हें ले जाना कहाँ चाहता हूँ, और विचार कहाँ चले जा रहे हैं। परन्तु देखो, विचारा ब्रह्मं व्रते देवं वायुः संभवं लोकां वाचां प्रह्मे व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, प्रातां ब्रह्मे जब इस प्रकार के विचार व्यक्त होने लगे, विचार व्यक्त होने से पूर्व बेटा! यह शंख ध्वनि यह रामं ब्रह्मा व्रते देवाः वह अपने आसन पर विद्यमान हो करके ब्रह्मणां ब्रह्मे कृतं लोकां वाचन्नमः राम का उपदेश चल रहा था कि विष्णु राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। यह विष्णु राष्ट्र है। जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, चरित्र ऊँचा होता है और जिस राजा के राष्ट्र में जो गदा आततायियों को मानो देखो, शिक्षा से और दण्ड से जो दण्डित करने वाला है और जो मानो चक्र को अपनाता है कि अपनी संस्कृति सर्वत्र राष्ट्रों में होनी चाहिए। एकोकीकरण होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, एकोकीकरण होने से मानो समाज में बलवती आती चली जाती है। वहीं बलवती हो करके मानव अपने में महान बनता रहता है और मुनिवरो! देखो, चतुर्थ में ब्राह्मण होने चाहिए। जो स्वरों से गान गाने वाले हो, वेदों का उद्घोष करने वाले हों बेटा। देखो, वह ब्राह्मण अपने में महानता का दर्शन कर लेता है।

अयोध्या में विष्णु राष्ट्र

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, ये विचार व्यक्त हो रहे थे, राम यह उच्चारण कर रहे थे

कि अयोध्या में विष्णु राष्ट्र की स्थापना प्रायः होनी चाहिए। परन्तु देखो, उसका क्रिया-कलाप भी भिन्नता में रत होने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मा व्रहे वाचन्नमं ब्रह्मा कृतं वृत्ति देव ब्रह्मा मेरे पुत्रो! देखो, चतुर्थ की जब विवेचना होने लगी तो प्रजा सब शान्त होने लगी।

मेरे प्यारे! देखो वे ऋषि अपने अपने आसनों पर विद्यमान थे और मौन रहे। राम ने दृष्टिपात किया कि यहाँ तो महापुरुषों का एक आगमन हो रहा है। महापुरुष मेरे समीप विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देखो, राम ने नतमस्तिष्क हो करके बारी-बारी चरणों को स्पर्श करते हुए कहा कहो भगवन! मेरे जीवन के लिए कोई महान उपदेश प्रदान कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राम ने जब यह उदगीत रूप में गाया, तो ऋषि-मुनियों ने कहा राम! हम तुम्हारे यहाँ एक याग करना चाहते हैं। हमने मानो देखो, याग स्वीकार किया है। याग में एक ऐसा नृत होता दृष्टिपात हुआ जिससे आश्चर्य में हम मानो अपने में शान्त हो गये हैं। हे प्रभुवर! हमारी इच्छा यह है, सम्भवं ब्रह्मे लोकां वर्णनं व्रीहि व्रतं देवाः आचार्यो ने कहा हे राम! तुम्हारे द्वारा एक याग कराना चाहते हैं। क्योंकि हम एक वेद मन्त्र में लगे हुए हैं अपने में कोई निमटारा नहीं कर पा रहे तो उसका निमटारा चाहते हैं। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम।

मेरे प्यारे। देखो, भगवान राम ने अपने में शान्तनं ब्रह्मे वात्प्रहा उन्होंने अतिथि सेवा की, अतिथि का आदर और देखो, उनको भोज कराया। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे कृतं दिव्यं ब्रह्मा अस्सुतो, मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचना दे रहा है। भिन्न-भिन्न प्रकार से मानो इसकी आभा में लगा हुआ है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा था, विचार यह प्रारम्भ हो रहा था, हम उन विचारों में रत हो रहे थे कि जिससे बेटा! देखो, मानव समाज अपनी आभा में विचित्र और महान बना रहे। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मे व्रतं भगवन! हम एक याग चाहते हैं। मेरे प्यारे! राम और उनके विधाताओं ने बारी-बारी चरण स्पर्श करके कहा प्रभु! याग होगा। उन्होंने अपने शिल्पकारों से कहा-हे शिल्पकारों! ऋषियों की आज्ञा है, तुम एक यज्ञशाला का निर्माण करो। उन्होंने बेटा! यज्ञशाला का निर्माण कर दिया, कुछ ही समय में मानो यज्ञशाला विशुद्धता को प्राप्त हो गई। मेरे प्यारे! देखो, विशुद्धं ब्रह्मा विशुद्धं दिव्यां वाचन्नमं ब्रह्मे वायु सम्भवा लोकां व्रते मेरे प्यारे! देखो जब वेद मन्त्र इस प्रकार उद्गीतता गाता रहता है तो अन्तर्हृदय में एक उज्ज्वल एक अग्निमयी, अमृतमयी धारा का जन्म हो जाता है।

महानता

तो मेरे प्यारे! देखो विचार विनिमय क्या, हम अपने जीवन को ऊँचा बनाने में, हम अपने जीवन को महान बनाने में सदैव तत्पर रहें। सदैव अपने में अपनेपन का गमन करते रहें। तो मेरे प्यारे! जब इस प्रकार ब्रह्मणे उन्होंने कहा-प्रभु! हम यागां ब्रह्मे तो राम ने बेटा! उनके उपदेश पान करते हुए उन्होंने बारी-बारी, स्थलियों पर उनका गमन कराया। ब्रह्मवेत्ताओं का आसन भिन्न है, ब्रह्मवर्चोसि का भिन्न है। मुनिवरो! भिन्न-भिन्न प्रकार के आसन लगे हुए, वह अपने में अपनेपन का अनुभव करने लगे। अब जब अनुभव होने लगा तो मानं ब्रह्मे अग्नं व्रीहि व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, वह राष्ट्र गृह में अपने में परिणत करने लगे, जब परिणत हो गये तो बेटा! वहाँ भी इसी प्रकार अपने में दोषारोपण की प्रतिभा जागरुक होने लगती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जहाँ राम का यह उपदेश चल रहा था, राम उच्चारण कर रहे थे, वहीं ऋषि-मुनियों का एक उपदेश प्रारम्भ हुआ। ऋषि-मुनियों ने कहा हे राम! जहाँ तुम भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में सम्मिलित रहते हो देखो, देवां ब्रह्मे एक देवताओं के प्रति याग होना चाहिए और याग हो करके अपने को उज्ज्वल बनाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, अप्रतम् उन्होंने शिल्पकारों को जैसे ही आज्ञा दी, तो यज्ञशाला का निर्माण हो गया। यज्ञशाला अपने में मानो भव्यता को प्राप्त होने लगी। मेरे प्यारे! जब यज्ञशाला का निर्माण हो गया, तो मुनिवरो! देखो, राम ऋषि-

मुनियों के समीप पहुँचे और ऋषि-मुनियों से कहा भगवन! आइये, पधारिये यज्ञशाला का निर्माण हो गया है। चरू और साकल्य सब एकत्रित हो गये हैं।

तो मेरे प्यारे! वे वहाँ से गमन करते हुए, भ्रमण करते हुए बेटा! यज्ञशाला में आ पहुँचे। यज्ञशाला में अग्नं ब्रह्मा उन्होंने बेटा! अपने में मानो अपनेपन के दर्शन की आभा में लाना चाहा। उसी में ओत-प्रोत रहना चाहते थे। परन्तु देखो, उस आभा में हम नही जाना चाहते विचार केवल यह है कि यज्ञशाला में बेटा! निर्वाचन होने लगा। राम देखो, यजमान बने, महर्षि वैशम्पायन महाराज ब्रह्मा बने, महर्षि वशिष्ठ पुरोहित बनें और महर्षि विभाण्डक उसके उद्गाता बने और महर्षि सोमप्रवृत्तिका बेटा! प्रवाहण उस याग के मानो अध्वर्यु बने। मेरे प्यारे! चार स्थान होते हैं यज्ञशाला के, यजमान, अध्वर्यु, उदगाता और मानो देखो, पुरोहितजन और पुरोहित जनों में बेटा! ब्रह्मणत्व आ जाता है। तो मुनिवरो! यह कितना हर्ष का विषय है, यह कितनी महानता का एक विषय माना गया है जिसके ऊपर हम परम्परागतों से अनुसंधान करते चले आये हैं परन्तु अनुसधान नहीं हो पा रहा है। परन्तु समय पर वह अपनी प्रतियों में रत हो जाए।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, याग प्रारम्भ होने लगा, उन्होंने सर्वत्र ऋषि-मुनियों को निमन्त्रित किया। महर्षि वाल्मीकि, महर्षि भारद्वाज, महर्षि सोमवृत्तिका ये नाना ऋषिवर गृह में प्रवेश हो गये और गृह में प्रवेश हो करके अन्नादं भूतं ब्रह्मा वह अन्नादं ब्रीहि व्रतम् उन्हें कोई भी वस्तु प्राप्त न हुई, जब प्राप्त न हुई तो मानो वह बोले अन्नादां भूतं ब्रह्मे लोकाम् वेद के आचार्य ने कहा न करोति सम्भव ब्रह्मे व्रतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, यह दोनों उदगीत गाये, विचार विनिमय प्रारम्भ किया, परन्तु देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए मानो देखो, राम का यह उपदेश की हम उनकी अयोध्या को मानो देखो, जानकारी में ले जाये। अप्रतं ब्रह्मे।

मेरे पुत्रों! देखो, राम का याग जब प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! वही न्यौदा में मन्त्र उच्चारण होने लगे, कि यजमान का रथ बन करके द्यौलोक को जाता है। वही वेद मन्त्र की बेटा! प्रतिभा उनके समीप आयी, तो यह प्रसंग बना ही रहा और यह प्रसंग मानो देखो, उज्वता के अद्भुत स्वरूप में रत हो गया।

तो मेरे प्यारे! देखो, याग जैसे ही प्रारम्भ हुआ, प्रारम्भ होते ही बेटा! देखो हमारे यहाँ अध्वर्यु उसे कहते हैं जो हिंसा से रहित हो, हिंसा से रहित को ही अध्वर्य कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, पुरोहित जन अपने में मानो देखो, ऊर्ध्वा को गमन करना, हमारा कर्तव्य है। बेटा! याग प्रारम्भ हो गया, याग के प्रारम्भ होने के पश्चात् मुनिवरो! देखो, यागां ब्रह्मे जब वेद मन्त्र आया तो उन्होंने कहा-हे ऋषियों! मैं तो वेद मन्त्र के आधार पर साक्षात्कार चित्रण करना चाहता हूँ। मैं साक्षात दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा-हे रामं ब्रहे हे वृत्तं देवाः मानो देखो, यह तो इस समय नहीं हो सकेगा। उन्होंने कहा-यह तो लाना ही है, इसी का तो क्रिया रूप बनाना है। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने यह विचार त्याग दिया और त्याग देने के पश्चात्, विचारों में क्या, याग नहीं हो रहा था। विचार विनिमय दर्शनों से बेटा! घटित हो रहा है, परन्तु वह घटना में आने वाला नहीं, वह घटना में आ नहीं रहा है। विचित्रता ऐसी प्रतीत होती है सम्भवं लोकां वायु सम्भवे वायु सम्भव ब्रह्मा लोकां ब्रह्मे वृत्त प्राणाः। मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण सत्ता अपने में बड़ी प्रबल है, बड़ी उज्वल है, बड़ी महान है। परन्तु देखो, उसकी रूप रेखा एक आकृतियों में रत होती रही है।

याग में चित्र दर्शन

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह कि मानो देखो, जब यह याग शान्त हो गया, तो कुछ समय के पश्चात महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज और देखो, उनके एक आचार्य जो वृत्तम् अध्ययन करते थे मानो देखो, महर्षि पनपेतु मुनि महाराज बेटा! जब वह यज्ञशाला में पधारे तो यज्ञ शान्त है, शून्य बिन्दु पर

है। ऋषि ने कहा-राम! तुम्हारा याग सम्पन्न नहीं हुआ है? उन्होंने कहा-प्रभु! सम्पन्न तो हो गया है, परन्तु एक वेद मन्त्र न्यौदा का ऐसा उग्ररूप धारण कर गया है कि हम चिन्तित है। मानो देखो, चिन्ता, मग्न रहते हैं प्रभु! मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-कौन-सा मन्त्र है? मन्त्र का उदगीत रूप में गान गाया। ओ३म् वर्णनं ब्रहे वर्णा प्रब्राणां बहे वर्णां दिव्यां देव ब्रह्वे वचनत्प्रहा वर्णोति वर्णनं ब्रहा कृतं भवा सम्भोति।

मेरे प्यारे! देखो, यह वर्णन प्रहा जब इस प्रकार उन्होंनें वर्णन किया तो वर्णन के अभिप्राय का अश्वात यह कि वह अपने में, अपने पन का ही दर्शन करना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा, कहो, तुम ब्राह्मणां का अपमान तो नहीं कर रहे हो राम! महर्षि भारद्वाज मुनि ने जब यह कहा तो राम ने कहा-प्रभु! मेरे में इतनी सत्ता कहाँ है जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान करू, क्योंकि ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान नहीं हो सकेगा; मैं तो इनके चरणों की धुली को अपने में धारण करता रहता हूँ।

महर्षि भारद्वाज के वैज्ञानिक यन्त्र

मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने ब्रह्मचारिणी शबरी और देखो, महर्षि पनपेतु से कहा जाओ, आश्रम से चित्रावली यन्त्रों को लाओ। मेरे प्यारे! देखो, वाहन में विद्यमान हो करके, कजली वनों से नाना चित्रावलियों को लाया गया और वह चित्रावली ला करके उन्होंने बेटा! देखो, यज्ञमण्डप में स्थित कर दी और उन्होंने कहा राम! तुम यज्ञशाला में याग प्रारम्भ करो उन्होंने अपना याग जैसे ही प्रारम्भ किया और बेटा! देखो, वह जो चित्रावली थी उसमें यजमान होतागण स्वाहा उच्चारण करते थे बेटा! उसमें उनके चित्र आने प्रारम्भ होने लगे। यन्त्रों में जब चित्र आने लगे, तो उन्होंने कहा राम! यह दृष्टिपात करो कि तुम्हारे चित्र मानो देखो, द्यौलोक में प्रवेश कर रहे हैं। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, यज्ञशाला में ब्रह्मणं ब्रहे वह द्यौ लोक को जा रहे हैं।

मेरे प्यारे! देखो, राम आश्चर्य में, याग प्रारम्भ रहा। भारद्वाज मुनि बोले कि राम! तुम शबरी को जानते हो, यह शबरी कौन है? यह आश्रम में अध्ययन कर रही है। मानो चन्द्रमा और लोक लोकान्तरों की यात्रा करती रहती है। राम ने कहा-मैं जानता हूँ भगवन्! यह तो मेरी पूज्य है। महर्षि भारद्वाज ने कहा-राम जब तुम्हारा और रावण का संग्राम हो रहा था तो जितना भी मेरे द्वारा कोष अस्त्रों-शस्त्रों का देखो, व्रत था वह मैंने शबरी के द्वारा तुम्हें प्रदान कराया था। मेरे प्यारे। देखो, शबरी के द्वारा ही मैंने तुम्हें अस्त्र-शस्त्र प्रदान कराए थे। तुम इन्हें जानते हो? राम ने कहा-प्रभु मैं जानता हूँ।

मेरे पुत्रो! यह वाक् उच्चारण करते ही आगे वेद के आचार्य ने बेटा! जब ऋषि ने यह वर्णन कराया कि चित्रावलियों में मानो चित्र आ रहे, गमन कर रहे हैं स्वाहा के साथ में, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में जा रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, राम बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन के हृदय की मानो हर्ष की कोई सीमा न रही, उनका विचार वह साक्षात्कार हो गया। मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण है कि राम के यहाँ चित्रावली लग गई है और याग प्रारम्भ हो गया है मानो वह याग चलते-चलते बेटा छः माह तक याग प्रारम्भ रहा।

रक्त बिन्दु से मानव चित्र

मेरे प्यारे! देखो, जब याग सम्पन्न हुआ तो राम ब्रह्मा व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, अपने में हर्ष ध्वनि की, यह चित्रावली देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने अन्त में यह कहा-राम! तुम्हें यह प्रतीत है कि एक विज्ञान का यन्त्र मैंने तुम्हें दृष्टिपात कराया, जिसमें तुम्हारे चित्र है। यज्ञशाला का रथ बन करके, जितने आकार के होता गण विद्यमान है, यज्ञशाला का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता हुआ, यन्त्रां में दृष्टिपात आता है। यह यन्त्रों का नृत हो रहा है। परन्तु हे राम। मेरे द्वारा ऐसे -ऐसे भी यन्त्र विद्यमान है जहाँ मानो देखो, एक रक्त का बिन्दु है उसी एक रक्त के

बिन्दु में, जिस मानव का वह रक्त का बिन्दु है उस मानव का चित्र मेरे यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा है। एक-एक रक्त का बिन्दु और वही मानव का चित्र उसमें चित्रित हो रहा है।

दक्षिणा का अभिप्राय

मेरे पुत्रों! देखो, राम ने जब यह श्रवण किया तो वह बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा-प्रभु! मेरा याग सम्पन्न हो गया है। मेरे प्यारे! देखो छः माह के पश्चात् याग सम्पन्न हो गया, सम्पन्न हो करके राम ने सबको मानो दक्षिणाएँ प्रदान कर दी और दक्षिणा का अभिप्राय हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों का क्या है हे यजमान! तू अपनी त्रुटियों को त्यागने का प्रयास कर मानो देखो, वास्तव में द्रव्य तो उदर की पूर्ति के लिए दिया जाता है परन्तु देखो, यजमान के द्वारा जो त्रुटि है जो मानो अभिमान है या किसी भी प्रकार का मानो देखो, त्रुटि-व्रत है उसे अपने पुरोहित को प्रदान कर देना चाहिए। वास्तव में दक्षिणा का अभिप्रायः यह माना गया है।

भगवान राम की दक्षिणा

राम ने अपनी दक्षिणा स्वीकार की और उन्होंने कहा-प्रभु! मैं क्या समर्पित करूॅ? मेरे द्वारा ऋषि-मुनियों को समर्पित करने की मानो कोई वस्तु नहीं है, उन्होंने कहा-मैं यह संकल्प कर रहा हूँ, प्रभु! कि मैं दक्षिणा प्रदान कर रहा हूँ कि मेरे गृह में नित्यप्रति याग होता रहेगा। और देखो, मैं राष्ट्र में इतना लोलुपता में अपने को न ले जाऊँगा, जिससे मेरे आध्यात्मिक जीवन का ह्रस हो जाए। बेटा! राम ने यह संकल्प करके और पुरोहित को दक्षिणा प्रदान कर दी।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा था कि द्रव्य भी देना, बहुत अनिवार्य है क्योंकि उनके उदर की पूर्ति है और यजमान को आहुतियों में मानो देखो, संकल्प बद्ध हो करके दक्षिणा प्रदान करनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, याग सम्पन्न हो गया। उन्होंने गऊ इत्यादियों के साथ मुद्राएँ समर्पित करके याग को सम्पन्न किया। बेटा! याग अपने में पूर्णता को प्राप्त हो गया।

भगवान राम की भावना

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रो! राम का यह उपदेश रहा है, राम की यह मानो मनोनीत भावना रही है कि हम सदैव अपने राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वाले हो, और मानो देखो, प्रत्येक गृह मे याग की सुगन्धि आनी चाहिए। जब प्रातःकालीन बेटा! प्रत्येक गृह में से वेदों की ध्वनि और देखो, साकल्य की सुगन्धि आती रहेगी तो बेटा! राष्ट्र ऊँचा बन जायेगा राष्ट्र एक महानता में गमन करने लगेगा तो बेटा! देखो, वही राष्ट्र तो उन्नत बनता है वही राष्ट्र एक पवित्रता की वेदी पर मानो देखो, महानता में गमन करने वाला, अपने में ओजस् बना रहता है। तो आओ मेरे प्यारे मैं विशेष विवेचना नहीं देना चाहता हूँ अब मैं अपने प्यारे पुत्र महानन्द जी से अपने विचार, वह भी अपनी इच्छा व्यक्त करना चाहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् अपाना वर्णनं रथं मधुमा वायु रेवं भद्राः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बड़ी मार्मिक और साहित्यिक चर्चाएँ प्रगट कर रहे थे, जहाँ मानो याग का इतना उज्ज्वल और महान स्थान रहा है परम्परागतो से ही ये प्रायः इस प्रकार के यागों का चयन ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में रहा है। अभी-अभी मेरे पूज्यवाद गुरुदेव वर्णन कर रहे थे मानो यजमान की चर्चाएँ, यजमान का हृदय और मेरा अन्तर्हृदय तो यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! मेरी मनोनीत हृदय की यह कामना रहती है कि यजमान के जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और पवित्रता की आभा में सदैव रत रहे, ऐसी मेरी मनोकामना रहती है। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव राष्ट्र की चर्चा प्रगट कर रहे थे, मानो देखो, वर्तमान के काल को पूज्यपाद गुरुदेव इतना नहीं

जानते। परन्तु मैं समय-समय पर आ करके परिचय कराता रहता हूँ। आधुनिक जो समाज है, आधुनिक जो राष्ट्रवाद है वह मानो देखो, उस राष्ट्रवाद के आगे कोई राष्ट्रवाद नहीं कहलाता। विचार में व्यक्त करता रहता हूँ कि मानो आधुनिक काल का राजा तो यही संकल्प करले कि मैं कितना मिथ्या उच्चारण कर सकता हूँ। मानो देखो, इस प्रकार की प्रतिभा में लगा हुआ और अपने स्वार्थपरता के ऊपर मानों नरसंहार की चर्चा।

राष्ट्र की उच्चता का आधार

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था प्रभु! यह राष्ट्र कैसे ऊँचा बने? तो पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया था कि राजा के राष्ट्र में रुढ़ि नहीं होनी चाहिए। देखो, ईश्वर के नामों पर जितनी भी राष्ट्र में रूढ़ियाँ होंगी, उतना ही राष्ट्र अन्धकार में चला जाएगा। यह नाना प्रकार के ईश्वर के नामों पर रुढ़ि नहीं होनी चाहिए और रूढ़ियों का निराकरण राजा को करना है तो राष्ट्र ऊँचा बन सकता है और यदि भिन्न-भिन्न प्रकार का रूढ़िवाद पनपता रहा, ईश्वर के नामों पर, परमपिता परमात्मा के नामों पर यदि अक्रिया में रत रहा, तो यह समाज अन्धकार में परिणत हो जायेगा। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि राजा रावण के काल में भी रूढ़िवाद पनपा था, राष्ट्रों का विनाश हो गया था। आधुनिक, वर्तमान काल में भी रूढ़ियों का एक प्रादुर्भाव हो रहा है रूढ़िवाद में मानो धर्म और मर्यादा का विनाश हो जाता है। मानवीयता का ह्रस हो जाता है क्योंकि देखो, जो राष्ट्र के ऊपर जो ईश्वर के नामों पर रूढ़ियाँ बना करती हैं, यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ मानो पनप रही हैं ये रूढ़ियाँ देखो, समाप्त होनी चाहिए। तो राष्ट्र और समाज ऊँचा बन सकता है।

राष्ट्र का कर्तव्य

आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार केवल यह कि हे राजन! राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए और राजा जब ब्रह्मवेत्ता होता है तो मानो देखो, जितने धर्म के, रूढ़िवादियों के आचार्य है उन सर्वत्र को एकाग्र, विद्यमान हो करके और राजा और आचार्य जो राज पुरोहित, होते हैं वह उसकी मानो अध्यक्षता करे, ब्रह्मवेत्ता और वहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों की चर्चा स्वीकार करते हुए और जो रूढ़ि देखो, जो मानवीय धर्म, जो मानव दर्शन और विज्ञान और मानवीयता पर स्थिर हो जाए तो उसको स्वीकार करना यह राष्ट्र का कर्तव्य है और रूढ़ियों का क्षय और विनाश कर देना चाहिए।

धर्म का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई कालों में पुनः भी वर्णन कराया, आज भी मानो देखो, इसका वर्णन करना है सम्भवं ब्रहे यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ जब तक मानवीय समाज में, मस्तिष्कों में रहेगी तब तक मानो देखो, यह राष्ट्र में एक-दूसरे को मृत्युदण्ड देता ही रहेगा। मानो देखो, इस प्रकार का विचार, जब राष्ट्रीयता में परिणत हो जाता है, आधुनिक काल यह कहता है धर्मं ब्रह्मे निरपेक्षम् अरे धर्म की रक्षा करने के लिए तो राष्ट्र का निर्माण होता है। यदि धर्म की रक्षा, राष्ट्र नहीं कर सकता तो वह राष्ट्र नहीं कहलाता। इसीलिए धर्म कहते किसे हैं? मानो जो इन्द्रियों में समाहित रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहते हैं कि धर्म मानव की प्रत्येक इंद्रियों में और विचारों में समाहित रहता है उस धर्म को अपनाना, परमात्मा का चिन्तन करना और राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाना यह मानो रूढ़ियों को समाप्त करने के लिए, राष्ट्र का निर्माण होता है।

यह है आज का हमारा वाक्, मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा और पुनः मेरा यही वाममार्ग कि हे राज ब्रहे हे यजमान! ऐसा जो वर्तमान का काल है मैं इसे वाममार्ग का काल कहता हूँ जहाँ मानव सुरा और सुन्दरी में लगा हुआ है। आधुनिक काल ऐसा है जहाँ सुरा और

सुन्दरी में द्रव्य का दुरुपयोग होता रहता है और द्रव्य के दुरुपयोग में मानों देखो, नाना प्रकार के प्राणियों का भक्षण करने वाला समाज, वाम मार्ग बन रहा है। मैं इसको वाम मार्ग का काल कहता रहता हूँ। हे यजमान! मैं अन्तरात्मा से सदैव यह कहता रहता हूँ कि तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और द्रव्य की सदुपयोगिता ही मानो द्रव्य की पूजा कहलाती है और द्रव्य का दुरुपयोग होना ही द्रव्य का मानो देखो, ह्रस होता रहता है। द्रव्य की पूजा मानो देवताओं की पूजा है।.....शेष अनुपलब्ध 27/04/1988 रहदरा, मेरठ

३ राष्ट्र की उच्चता का आधार 10 08 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। इसलिए हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी माना है। यज्ञमयी स्वरूप की उसे संज्ञा प्रदान की है।

पुरोहित

तो आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित के रूप में वर्णन कर रहा है, वे पराविद्या को देने वाले हैं, वे पुरोहित है मानो देखो, पुरोहित बन करके अपने में ऊंची उड़ानें उड़ रहे हैं। हे पुरोहितजन! तू हमारा कल्याण करने वाला, पराविद्या को प्रदान करने वाला, तू महान है, तेरी विचित्रता इस प्रकृति के एक-एक कण-कण में व्याप्त हो रही है। ब्रह्माण्ड में मानो तेरे से ही, रचनाकार में, क्रिया में, दृष्टिपात आ रहा है। तो मेरे प्यारे! वह परमपिता परमात्मा अनूठा है, अनुपम है मानो वह हमारे जीवन का एक अप्रतम पुरोहित कहलाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा था। हमारे यहाँ ऋषि मुनि परम्परागतो से बेटा! एकान्तस्थली में विद्यमान हो करके, बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ते रहे हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जहाँ मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन अपने में अनुसन्धान करते रहते थे, अन्वेषण करते रहते थे। तो मुनिवरो! देखो, उनका जीवन बड़ा अनुपम माना गया है। तो मेरे प्यारे! वेद के वांगमय में नाना प्रकार की विचित्र धाराएं, प्रायः हमारे समीप आती रहती हैं। मुनिवरो! आओ आज का हमारा यागां भविते ब्रह्मणां ब्रहा यज्ञाः आज का हमारा वेद मन्त्र याग के ऊपर हमें कुछ प्रेरित कर रहा। मुझे कहीं से प्रेरणा भी आ रही है कि हमारा यागां ब्रह्मं यागां ब्रहे मानो देखो, याग के सम्बन्ध में कुछ उदगार गाये जाएं। तो मेरे प्यारे! आओ आज का हमारा वेद मन्त्र, याग के लिए हमें प्रेरित कर रहा है और प्रेरणा दे रहा है।

महर्षि वैशम्पायन का चिन्तन

तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ हमारे यहाँ याग के ऊपर बड़ी-बड़ी विचित्र धाराएं और मानो अनुसन्धान होते रहे हैं। मेरे प्यारे! हमारे ऋषि मुनि अपने में अनुसन्धानवेत्ता रहे है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है बेटा! यह वाक् मैंने कई काल में भी वर्णन किया है। आज भी मुझे स्मरण आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन अपने स्थान पर विद्यमान है। महर्षि वैशम्पायन न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, क्योंकि वह महाराज अश्वपति के वृष्टि याग में से बेटा! अपने गृह, अपने आश्रम में पधारे। तो बेटा! वह अपने में, न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन करते-करते बेटा! निद्रा की गोद में चले गये। मध्यरात्रि में जब जागरुक हुए तो न्यौदा में मन्त्रों के उदगीत् उनको स्मरण आने लगे और वह उदगीत कह रहा था यजमानस्सम्भवा ब्रहे यजमानः रथाः मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कह रहा है कि यज्ञशाला में यजमान, होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा इत्यादि जो विद्यमान है मानो देखो, उनका रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है। ऐसा बेटा! वेद का मन्त्र कह रहा था। महर्षि वैशम्पायन इसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे, परन्तु वेद मन्त्र घटित हो रहा है, वेद मन्त्र अपने में निर्णय दे रहा है, वेद मन्त्र कहता है कि यजमान का रथ बन करके मानो देखो, जैसे यजमान, होता, अध्वर्यु उद्गाता विद्यमान है, सब उस रथ पर विद्यमान हो करके बेटा! अग्नि की धाराओं पर वह

शब्द और शब्द के साथ में जो चित्र का आकार बना हुआ है वह द्यौ लोक को जा रहा है ये वेद का मन्त्र अपना निर्णय दे रहा है।

मन्त्र चिन्तन

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में विचारने लगा, कि इसको साक्षात्कार, कैसे दृष्टिपात किया जाए? मेरे पुत्रो! देखो, विचारने लगे तो रात्रि समाप्त हो गई, प्रातःकालीन हो गया, प्रातःकालीन भी ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा। मेरे प्यारे! देखो, निकटतम महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का आश्रम था। महर्षि विभाण्डक ने विचारा कि आज मानो ऋषिवर वैशम्पायन ने अपने स्थान को नहीं त्यागा है, इसके मूल में क्या है? तो मुनिवरो! देखो, वह ब्रह्मणां व्रहे कृतं ब्रहाः वायुः सम्भवं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, जब यह विचार विनिमय आया तो वह उनके समीप पहुँचे, विचारने लगे, उन्होंने कहा-ऋषिवर! आज अपने आसन को नहीं त्याग रहे हो? उन्होंने कहा-हे ऋषिवर! ये वेद मन्त्र मुझे स्मरण आ रहे हैं, न्यौदा में मन्त्रों का जब मैं अध्ययन करता हूँ तो मानो देखो, मैं अश्वपति के याग में भी, इस प्रकार के मन्त्रों के ऊपर विचार विनिमय होता रहा। परन्तु ये पुनः से वेद मन्त्र मुझे स्मरण आ रहे हैं। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि विभाण्डक भी, उस विचार-विनिमय, उस विचार में सम्मिलित हो गये और विचारने लगे कि ब्रह्मणां ब्रहा कृतो विश्वां ब्रह्मणां लोकाम् मानो देखो, मैं अपने में इसका निर्णय कर पाऊं।

अयोध्या में ऋषि

तो मुनिवरो! देखो, दोनों ऋषिवर, दर्शनों से तो घटित हो रहा है, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके निर्णय दे रहा है परन्तु देखो, उसको साक्षात्कार कैसे दृष्टिपात किया जाए? यह एक विचार का विषय है, यह एक विचार की प्रतिभा कहलाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर विचार-विनिमय करते रहे, परन्तु देखो, वह प्रातः काल भी समाप्त हो गया, कहीं से बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, महर्षि वर्तिका, और भी नाना ऋषि-मुनियों का समूह बेटा! कहीं से भ्रमण करता हुआ, ब्रह्मवेत्ताओं का समाज बेटा! महर्षि वैशम्पायन के आश्रम में आ पहुँचे। महर्षि वैशम्पायन से पिप्पलाद ने कहा कहो-भगवन! कैसे शान्त हो? उन्होंने कहा-प्रभु! यह वेद मन्त्र है, चित्रो रथं ब्रह्मा अग्नं दिव्यं देवो अस्सुतां दिव्य लोकाः हे प्रभु! द्यौलोक में जाने वाला रथ मानो याग को कहा है। वेद मन्त्र कहता है हम उसका साक्षात्कार करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! अपने में वह निर्णय देने लगे, उनके दर्शनों में भी, दार्शनिकता से बेटा! घटित हो रहा है। परन्तु देखो, विचारा गया, जब मध्य दिवस आ गया तो महर्षि रेणकेतु प्रीतिका ने कहा-कि भई, मेरे विचार में तो यह आता है कि देखो, अयोध्या में एक याग किया जाए, क्योंकि अयोध्या के याग में सम्मिलित हो करके यह वाक् सिद्ध हो सकता है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् सर्वमान्य, सर्वत्रता को मान्य हो गया। ऋषि-मुनियों ने वहाँ से गमन किया। बेटा! महर्षि वैशम्पायन की अध्यक्षता वाला समाज, वहाँ से गमन करता है और भ्रमण करके बेटा! देखो, स्वाति मुनि के यहाँ रात्रि छा गई, वे विश्राम को प्राप्त हो गये, जब विश्राम करने लगे तो ऋषि ने बेटा! उनका अतिथि भी किया। सर्वत्र मानो वाकम्ब्रहे उनके वाक् वृत्तियों में चर्चाएं हुई, तो मुनिवरो! देखो, रात्रि समाप्त हो जाने के पश्चात्, प्रातःकालीन, रात्रि के अन्तिम चरण में वहाँ से ऋषियों ने गमन किया और भ्रमण करके बेटा! वह अयोध्या में आ गए। भगवान राम के यहाँ प्रातःकालीन बेटा! देव पूजा होती थी, देव याग होता था, वह देव याग सम्पन्न हो गया था परन्तु राम का उपदेश चल रहा था और राम यह उच्चारण कर रहे थे कि यह जो अयोध्या का राष्ट्र है यह महान कैसे बनेगा।

याग में भगवान राम का उपदेश

मेरे प्यारे! देखो, सब विधाता विद्यमान है। राष्ट्र के कर्मचारी विद्यमान हैं। मेरे पुत्रो! देखो, राम की उपदेश

मंजरी प्रारम्भ हो रही थी और वे उदगार दे रहे थे कि हे राष्ट्रवेत्ताओं! राजा का राष्ट्र कैसे ऊँचा बनेगा? मेरे विचार में तो यह है कि मैंने बहुत पुरातन काल से ही यह निर्णय दें दिया था कि प्रत्येक गृह में देव पूजा होनी चाहिए। मानो देखो, अग्नि में साकल्य प्रदान किया जाना चाहिए। आज का जो मेरा उपदेश है वह यह कि राजा के राष्ट्र में यौगिक पुरुष होने चाहिए, ब्रह्मचारी होने चाहिए, यदि राजा के राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा, राष्ट्र और गृह ऊंचे बना करते हैं। तो राम का यह उपदेश चल रहा था कि योगी बनों, मानो देखो, प्राणायाम किया जाए। इस मन को मानव कैसे स्थिर करता है? मेरे प्यारे! देखो, वायु के वेग से भी सूक्ष्म, इसका बड़ा महत्व और वेग माना गया है। इस वेगवान को कैसे हम स्थिर कर सकते हैं।

मन की गति

तो मेरे प्यारे! ऋषियों ने इस पर अपना निर्णय दिया, राम का यह वक्तव्य था कि सबसे प्रथम क्रिया, प्राणायाम करना चाहिए, मन को एक प्राण ही अपने में ला सकता है अन्यथा मन स्थिर नहीं हो पाता। परन्तु मन के मनं ब्रह्मावाचप्रह्े ये जो मन है, यह वायु के वेग से भी अधिक गमन करने वाला है। परन्तु देखो, इसको अपने में धारण करना है और वह कैसे, योगां ब्रहे मानो यह प्राण ही एक ऐसा है जिसके द्वारा मानव इस मनको स्थिर कर सकता है। क्योंकि वह गति है और गति के साथ में वह ब्रह्म एक सूत्र कहलाता है और उस सूत्र में यह मनका पिरोया जाता है। मन रूपी मनका जब पिरोया जाता है तो यह मन शान्त होने लगता है। तो इसलिए मानव को, मन को स्थिर करने के लिए प्राणायाम करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, प्राण को अपान में, अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को मुनिवरो! देखो, उदान में सिमट जाना चाहिए। यह पंच प्राणों का सिमट जाना ही मन को स्थिर कर देना है। मेरे पुत्रो! देखो, यह प्रभु की एक अनुपम विचित्र धारा है, उनका अध्ययन है। तो मुनिवरो! देखो, विचार आता रहता है जब वेद का मन्त्र यह कहता है कि मनं ब्रणां ब्रहे वाचप्रह्वाम् मानो देखो, मन को स्थिर करना है। तो मुनिवरो! यह उपदेश राम का, मानो गतिवान हो रहा था और सब श्रवण कर रहे थे इसलिए योगाभ्यास करने वाला, प्राणायाम करता है।

महर्षि पिप्पलाद को गर्भस्थ ज्ञान

महर्षि पिप्पलाद ने कहा कि जब वह माता के गर्भस्थल में थे मेरी प्यारी माता प्राणायाम किया करती है। तो मानो देखो, माता मन को स्थिर करने के लिए, प्राण का आश्रय लेती थी और प्राणायाम करके मानो देखो, मन का सूत्र बना करके, उसमें पिरो करके और उसके पश्चात् वह मनस्तव को परिणत करके अपने में, प्रभु के अन्तर्ध्यानावस्थित हो जाना, तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है पिप्पलाद जी ने कहा कि मेरी माता तो सदैव गर्भ स्थल में, बाल्य को प्राणायाम की शिक्षा देती रहती थी। मानो देखो, जैसे खेचरी मुद्रा है, जैसे देखो, प्राणायाम के सम्बन्ध में व्रेतासुतिः है मानो रेचक और कुम्भक कहलाता है और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रिया-कलाप माने गये हैं। तो बेटा! यह प्राण विद्या के ऊपर वह अपना उपदेश दे रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, दस प्राण है, दस इन्द्रियाँ हैं और मन, बुद्धि चित्त और अहंकार यह चतुष अन्तःकरण कहलाते है तो मेरे प्यारे! देखो एक-दूसरे से कटिबद्ध होना है, एक-दूसरे में, सामूहिकता में प्रवेश करना है। तो जब यह विचार ऋषि ने दिया तो बेटा! देखो, अपने में मौन होने लगे, तो विचार आता रहा है बेटा! हमें प्राण का आश्रय लेना है। मन को यदि स्थिर करना है और मुनिवरो! पुनरुक्ति दे, दे करके उसको साधना में अवस्थित हो जाना।

राष्ट्र की पवित्रता

तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार भगवान राम का उपदेश समाप्त हो गया और राम की उपदेश मंजरी मानो

कि राष्ट्र को कैसे ऊँचा बनाया जाए, इस प्रकार योगी होने चाहिए, जो प्राण के ऊपर अधिपत्य करने वाले हो, मन को स्थिर करने वाले हो। जिस राजा के राष्ट्र में योगी पुरुष होते हैं, प्राणायाम करने वाले ब्रह्मचारी होते हैं उस राजा का राष्ट्र एक ना एक दिन पवित्र बन करके रहेगा। विद्यालय ऊँचे बनेंगे, गृह ऊँचा बनेगा जहाँ मेरी प्यारी माता ब्रह्मवेत्ता अपने गर्भस्थल में निर्णय देने वाली हो, शिक्षा प्रद मानो क्रियाकलापों में रत्त रहने वाली हो, वह माता बड़ी धन्य है। हे माता! तू कितनी धन्य है, मानो तू अपने में ही अपनेपन का भान करती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, माता मल्दालसा की भाँति प्राण को अपने सूत्र में लाने का प्रयास करना, उनका कर्तव्य था।

राम राष्ट्र की घोषणा

तो मेरे प्यारे! मैं विशेष इस चिन्तन में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल यह कि राम के यहाँ यह घोषणा हो गई, कि प्रत्येक गृह में, देव पूजा होनी चाहिए मानो देखो, पितर याग होने चाहिए। इस प्रकार का उपदेश बेटा! राम का मान्य हो गया और उनका उपदेश जैसे ही समाप्त हुआ, तो मेरे प्यारे! राम की दृष्टि उन ब्रह्मवेत्ताओं पर पहुँची और ब्रह्मवेत्ताओं में वैशम्पायन के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा-प्रभु! यह मेरा कैसा सौभाग्य है, आज जो बिना सूचना के, मेरे राष्ट्र में तुम्हारा पदार्पण हुआ है। हे प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य है। हे भगवन! ब्रह्मा सम्भोब्रहे हे प्रभु! यह हमारा सौभाग्य है, मैं इसकी सराहना करता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राम ने कहा-प्रभु! मेरे योग्य क्रियाकलाप को उच्चारण कीजिए। बारी-बारी चरणों को स्पर्श करते रहे और कारण को जानने की इच्छा बनी रही, तो महर्षि वैशम्पायन ने कहा-कि हे प्रभु! आज मैं न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहा था और मन्त्र यह कह रहा है कि चित्तं श्यं ब्रह्मे वायु सम्भवा ब्रह्मणा लोकाम् मानो देखो, यजमान का रथ बन करके द्यौलोक में जाता है, उस द्यौलोक वाले रथ को मैं दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

द्यौ लोक का रथ

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब यह अपना निर्णय दिया और अस्वस्तुतं ब्रहे ब्रह्मे तो राम ने कहा-प्रभु! मेरे सुयोग्य क्रियाकलाप उच्चारण कीजिए, सेवा का अवसर दीजिए। उन्होंने कहा-तुम एक याग करो। राम ने अपने में धन्य स्वीकार करते हुए, कहा-प्रभु! धन्य है, आप याग कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राम ने ऋषि मुनियों को उनके कक्ष में पहुँचाया और देखो, शिल्पकारों को आज्ञा दी कि तुम एक यज्ञशाला का निर्माण करो। मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र राष्ट्रवेत्ताओं से कहा-तुम साकल्य एकत्रित करो। मेरे पुत्रो! देखो, सबने यह स्वीकार कर लिया।

अयोध्या में याग

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है कि याग का समय हो गया, मेरे प्यारे! यागां ब्रह्मणां जब यज्ञशाला सम्पन्न हो गई, साकल्य एकत्रित हो गया, तो मुनिवरो! देखो, राम कुछ समय के पश्चात् ऋषि-मुनियों के समीप पहुँचे और वैशम्पायन इत्यादि से बोले कि प्रभु! आपकी यज्ञशाला सम्पूर्ण हो गयी है, आप आईये, अपने याग को प्रारम्भ कीजिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम, मेरे पुत्रो! ऐसा स्मरण है कि उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए यज्ञशाला में आ पहुँचे। मेरे प्यारे! वशिष्ठ इत्यादि भी सब यज्ञशाला में विराजमान हो गये। बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन को उस याग का ब्रह्मा नियुक्त किया और मुनिवरो! देखो, विभाण्डक जी उदगाता बने और महर्षि दालभ्य और शिलक बेटा! अध्वर्यु के रूप में रत हो गये और मुनिवरो! देखो, वह ब्रह्मा बन करके और यजमान राम को नियुक्त करके बेटा! याग का प्रारम्भ हो गया। जब याग प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! वही वेदमन्त्र राम की दृष्टि में आ गए, यज्ञनं ब्रह्मणा व्राते देवाः यजमानाः, यजमान तेरा रथ बन करके द्यौलोक को जाता है और द्यौ लोक में स्थिर हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, राम ने याग शान्त कर दिया। उन्होंने कहा-हे ऋषिवर! वेद मन्त्र मुझे प्रेरित कर रहे हैं, कि आप से प्रश्न किया जाए। हे प्रभु! वेद मन्त्र यह कह रहा है कि यजमान का रथ और उस रथ को कैसे साक्षात्कार दृष्टिपात किया जाए? मेरे प्यारे! देखो, अनुसन्धान होने लगा। देखो, राम ने निमन्त्रित किया था-महर्षि भारद्वाज ब्रह्मचारिणी शबरी और मेरे प्यारे! ऋषि पनपेतु, यह अपने वाहन में विद्यमान हो करके बेटा! राम के यज्ञ में आ विराजे। देखो, भारद्वाज ने कहा-राम! तुम्हारा याग कैसे शान्त हो रहा है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं वेद मन्त्रों के आधार पर अपने याग की रचना चाहता हूँ। देखो, वेद मन्त्र कहते हैं कि, यजमान का रथ बन करके द्यौलोक में जाता है उस द्यौलोक वाले रथ को मैं दृष्टिपात करना चाहता हूँ। हमारी मनोनीत यह एक कामना रहती है। तो मेरे प्यारे! ऋषि अपने में बड़े चकित हो गये। सम्भवं ब्रह्मा प्रहे कृतं वाचप्रहे महर्षि भारद्वाज बोले कि हे राम! तुम इन ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नहीं कर रहे हो, उन्होंने कहा-प्रभु! मेरे में इतनी सत्ता कहाँ है, जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान कर सकूँ। प्रभु! मैं तो क्षुद्र हूँ, मानो आप ऐसे, अपने अन्तर्हृदय में विचार भी न लाइये, कि मैं किसी का अपमान करूँ, मैं तो चरणों की धूली को ले करके, मस्तिष्क पर वृत्ति करने वाला हूँ, प्रभु!। मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने स्वीकार कर लिया। उनकी नम्रता को जान गये। महर्षि भारद्वाज ने ब्रह्मचारिणी शबरी महर्षि पनपेतु से और यज्ञदत से कहा-जाओ, अपनी विज्ञानशाला में से यन्त्रों को लाया जाए। मेरे प्यारे! उन्हांने अपने वाहन में विद्यमान हो करके, कजली वनों को गमन किया और कजली वनों में जा करके चित्रावली-वृत्तिका यन्त्रों को लाया गया। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है जब यन्त्र स्थिर हो गये और यह कहा भारद्वाज ने कि राम! तुम अब याग को प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! याग जैसे प्रारम्भ किया, स्वाहा उच्चारण करने लगे तो बेटा! देखो, उनके, यजमान के चित्र बन करके द्यौ लोक को जाते हुए, यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा, देखो, राम! तुम्हारे चित्र द्यौलोक को जा रहे हैं। मुनिवरो! देखो, राम बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही।

महर्षि भारद्वाज की विज्ञानशाला

मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय होता रहा, याग प्रारम्भ रहा। तो मेरे पुत्रो! देखो, याग अपने में बड़ा अनूठा एक क्रियाकलाप है परन्तु यागां भविते यागां भवं ब्रह्मा रुद्रो वाचन्नमं ब्रीहि व्रताः मेरे प्यारे! देखो, याग अपने में अनूठा है, अनुपम है। अहोवृत्तिया है। तो मेरे पुत्रो! मुझे ऐसा स्मरण है उस समय भारद्वाज ने कहा-हे राम! मेरे यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान हैं जिन यन्त्रों में देखो, एक रक्त के बिन्दु से मानव का साक्षात्कार दृष्टिपात आने लगता है, चित्र बन करके मानो देखो, जितने रक्त के बिन्दु हैं, उतने ही चित्र बन सकते हैं ऐसी-ऐसी चित्रावलियाँ मेरे आश्रम में विद्यमान हैं। हे राम! तुम शबरी को जानते हो, राम ने कहा-प्रभु! मैं जानता हूँ। उन्होंने कहा-यह वही शबरी है, जब तुम रावण से संग्राम के लिए गये थे, तो उस समय मानो देखो, इन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों का सर्वत्र कोष तुम्हें प्रदान किया था। यह वह भण्डार-नायक है जो मानो देखो, अस्त्रों-शस्त्रों का भण्डार तुम्हें प्रदान किया था। राम ने कहा प्रभु! मैं जानता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, शबरी बड़ी विज्ञानवेत्ता, अपने में विज्ञान में रत्त रहने वाली थी। तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, बेटा! देखो, लगभग छः माह तक याग प्रारम्भ रहा। याग के पश्चात मुनिवरो! वह चित्रों का दर्शन करते रहे, वैशम्पायन भी प्रसन्न हो गये और छः माह के पश्चात बेटा! याग सम्पन्न हो गया। उन्होंने दक्षिणा मे देहि बेटा! अपनी त्रुटियों को त्यागने की आचार्य को दक्षिणा दी और मुनिवरो! राम ने उन्हें उदर की पूर्ति के लिए द्रव्य प्रदान किया। तो मेरे प्यारे! याग सम्पन्न हो गया।

तो विचार क्या मुनिवरो! इस प्रकार के याग, हमारे वैदिक साहित्य में प्रायः प्रचलित हैं। तो विचार क्या मेरे

त्रेता कालीन विज्ञान

प्यारे! देखो, राम का याग सम्पन्न हो गया। राम का उपदेश था कि राष्ट्र में योगी हो, मेरे प्यारे! यह वाक् अब समाप्त अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म दिव्यां रथं मनौ वाचन्नमः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे गागर में सागर का भरण कर रहे हो। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव त्रेता के काल का, उस याग का वर्णन कर रहे थे, जिन यागों से राष्ट्र और समाज ऊँचे बनते हैं। परन्तु आज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ भी एक याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है कि मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है मानो देखो, यजमान के साथ मेरा अन्तरात्मा रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरी तो यह कामना रहती है, और यह जो वर्तमान का काल चल रहा है यह बड़ा विचित्र काल है। हे यजमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और अव्रतम यह जो काल है इसको मैं वाम मार्ग का काल कहता हूँ। मानो जहाँ न तो राष्ट्र है, न कोई प्रजा है मानो देखो, जहाँ सुरा और सुन्दरी में मानव अपने में परिणत हो रहा है। जहाँ द्रव्य में रत्त होने के लिए तत्पर हो रहा है।

रक्त भरी क्रान्ति

आज मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह उद्गीत गाने के लिए आया हूँ कि हे भगवन! यह जो काल है, यह बड़ा विचित्र है। मैं कई काल से यह कहता रहता हूँ कि हे राजन! तेरे राष्ट्र में रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए, ईश्वर के नाम पर जो परमात्मा के नाम पर रचयिता के नाम पर जो रूढ़िवाद बलवती हो रहा है, मानो वह रूढ़िवाद नहीं रहना चाहिए। राजा के राष्ट्र में क्या, समाज में, जिस भी काल में ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ पनपी हैं,, मानो धर्म कहने के लिए हैं वह पनपे हैं मानो उसी काल में रक्त भरी क्रान्ति का संचार हो गया है। जब मैं यह विचारता हूँ कि यह तो रूढ़ि है, इनमें सामूहिकता आ जाती है और यही रूढ़ि राष्ट्र के लिए बड़ी हानिप्रद हो जाती है। इसीलिए राजा के राष्ट्र में मानो देखो, सदाचार और राजा के राष्ट्र में इस प्रकार की प्रतिभाषितता होनी चाहिए। हे राजन! तुझे स्वयं ब्रह्मवेत्ता बनना है, क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने वाक्यों में आज प्रगट किया था कि राजा जब ब्रह्मवेत्ता होता है तो समाज ऊँचा होता है। माता जब विदुषी होती है तो बाल्य, बालिका ऊँचे बनते हैं आचार्य जब तपा हुआ होता है तो विद्यालय में महानता आ जाती है।

तो मेरे पूज्यपाद! गुरुदेव मैं आपको यह निर्णय कराना चाहता हूँ कि आधुनिक काल एक मानो देखो, अपनी ऐसी कृतिका में लगा हुआ है जहाँ वह धर्म, मानवीयता मानो देखो, उससे दूरी हो गया है। उससे दूरी हो जाने के मूल में एक राष्ट्र प्रणाली है। राष्ट्र की परम्परा है। जो नही हो पा रही है। तो विचार आता रहता है, हे मेरे पूज्यवाद गुरुदेव! आधुनिक काल विज्ञान में पारायणता को प्राप्त मानो जब मैं पुरातन काल के विज्ञान को विचारता हूँ, तो आधुनिक काल का विज्ञान एक इकाई में भ्रमण कर रहा है। एक इकाई ही मुझे प्रतीत होती है। तो मुनिवरो! देखो, विचार यह है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मुझे राम के राष्ट्र की चर्चाएँ की, राम के यहाँ जिस प्रकार अश्वमेध याग, अग्निष्टोम याग होते रहे हैं उन यागों मे कितनी प्रतिभा है राजा अपनी प्रजा को, समाज को एकत्रित करके, उन्हें शिक्षा देते रहे हैं और राजा उच्चारण करते हैं कि हे प्रजाओ! तुम्हें अजामेध याग करके अपने गृह को स्वच्छ बनाना है, तुम अपने गृह को महान और पवित्र बनाने के लिए सदैव तत्पर हो जाओ।

आहार की पवित्रता

तो मेरे पुत्रो! देखो, इस प्रकार ब्रह्मणां ब्रह्मे कृतं देव ब्रह्वा मेरे पूज्यपाद! गुरुदेव ने मुझे कई कालों में वर्णन

कराया, कि हे पुत्र! यह समाज तो इसी प्रकार चला जा रहा है। परन्तु मैंने यह वाक् अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि पुत्रो समं ब्रह्मा पुत्रो वाचप्प्रमाणां ब्रहे व्रताम् हे भगवन! हे पूज्यवाद! आप तो पुत्रो उच्चारण करते हुए अपने उदगार देते रहते हैं परन्तु जब मैं आधुनिक काल के राष्ट्र में प्रवेश करता हूँ तो मुझे यहाँ राष्ट्र ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह अपने में मानो देखो, राष्ट्र से विहीन हो गया है और यह अपने में जहाँ राजा के राष्ट्र में देखो, हिंसा बलवती हो जाती है और मानव देखो, अपने आहार को अशुद्ध कर लेता है तो व्यवहार स्वतः ही मानो उसका भ्रष्ट हो जाता है। तो इसीलिए आहार पवित्र होगा तो व्यवहार भी पवित्र हो जाएगा।

वाम मार्ग का काल

हे प्रभु! आप मुझे वर्णन कराते रहते हैं आज मैं कोई विशेष विवेचना तो दूँगा नही, केवल आज तो मैं अपने यजमान को अपने उद्गार देने आया हूँ हे यजमान! मेरी तो यह सदैव कामना रहती है कि तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। देवता उसे ग्रहण करते रहे और तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। यह मेरी कामना रहती है। तो आज का विचार, मैं अपने विचारों को केवल विराम ही देने आया हूँ क्योंकि मुझे कोई व्याख्या, उदगीत रूप में नहीं गानी है, व्याख्यान नहीं देना है, केवल उच्चारण करना है कि संसार, यह वाम मार्ग का काल, मुझे दृष्टिपात आता है जहाँ राजा भी अशुद्ध आहार में लगा हुआ है, और प्रजा भी लगी हुई है। जहाँ एक दूसरा प्राणी द्रव्य एकत्रित करने में लगा हुआ है मानो अपनी मान, प्रतिष्ठा कही चली जाए, ऐसा समाज बन गया है। आयेगा वह समाज, जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे उद्गीत गाते रहते है अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी अपने उदगार दे रहे थे, इनके उदगारों में दाह है, विडम्बना है, और वह विडम्बना यह कि राष्ट्रवाद ऊँचा होना चाहिए मानो देखो, यह राष्ट्रवाद के विषय में सदैव अपने विचार देते रहते हैं। तो आज का यह विचार अब समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि राजा के राष्ट्र में योगी पुरुष होने चाहिए, प्राणायाम करने वाले महापुरुष होने चाहिए, जिससे राष्ट्र समाज ऊँचा बने। यह आज का वाक् समाप्त, अब वेदों पठन-पाठन होगा। ओ३म ब्रह्मगणाः रेवं भद्रा मानं आपा रथं मां ऋषि। ओ३म उदुगं वृश्चं वृता वाचन्नमः आ भाः। अच्छा भगवन् 10-08-1988 नवीन नगर, सहारनपुर।

४ यज्ञ एवं याज्ञिक दृष्टि 27 08 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद-वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें, दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांड के मूल में प्रायः वे परमपिता, परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि मानवीय जगत में, उस परमपिता परमात्मा की महती का प्रायः वर्णन होता रहता है मानो वे परमपिता परमात्मा पिण्ड-रूप में भी और चेतना में भी रत रहने वाले हैं। इसलिए उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता के ऊपर मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए।

परमात्मा की महती

प्रत्येक मानव, उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर जब विचार-विनिमय करने लगता है तो मानव अपनेपन को शान्त करता हुआ, अपनी भौतिकता में प्रवेश करता हुआ, परमपिता परमात्मा की महती में रत हो जाता है। तो इसलिए हमारे आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने इस ब्रह्माण्ड के ऊपर बड़ी ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ी हैं और एक-एक वस्तु को उन्होंने बड़ी गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो करके उसको मानो देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड में निहित कर दिया है। विचारवेताओं ने, अपने तक ही, इस संसार को सीमित नहीं बनाया मानो देखो, इसका जो बनाने वाला है, वह परमपिता परमात्मा और इस ब्रह्माण्ड को भोगतव्य रूप में, यह मानवीयत्व अपने में ही निहित, अपने में ही रत होता रहा है।

प्रेरणा का स्रोत

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र! हमे नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि ये जो मानवीय जगत है यह प्रेरणा का स्रोत है। यहाँ प्रत्येक मानव प्रेरणा प्राप्त करता हुआ, अपने में ही मानो अपने को दृष्टिपात करता रहता है और इस ब्रह्माण्ड को भी अपने में ही रत कर लेता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें मानो प्रेरणा दे रहा है, प्रेरित कर रहा है कि हम उस परमपिता परमात्मा को अपने में धारण करके, अपने में ही उसका दिग्दर्शन करते रहे। जिससे मानो अपने में ही मानवीयत्व में सीमित न रह सके और विचारवेत्ता बन करके इस संसार सागर से पार हो जाए। मानो वेद का मन्त्र यह कह रहा है, प्रेरित कर रहा है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र यहीं तक हमें सीमित नहीं कर रहा है वेद मन्त्र कह रहा है यज्ञं पुरोहितां ब्रह्मम्णा वृत्ति देवाः वेद की आख्यिका कह रही है कि वे परमपिता परमात्मा ब्राह्मण है। मानों वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है, वे पुरोहित पन करके हमारा कल्याण कर रहे हैं। जैसे पराविद्या को धारण करने वाला परोहित मानो, देखो, राष्ट्र, समाज और मानवीयत्व को ऊँचा बनाता रहता है इसी प्रकार वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है जो हमारा पालन कर रहा है। मानो हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे करके, नाना प्रकार के ज्ञान में हमें रत करके मानो नाना प्रकार की आभाओं में नृत करा रहा है। तो वह परमपिता परमात्मा हमारा पुरोहित है, पराविद्या को हमें प्रदान करने वाला है। हम उस परमपिता परमात्मा को मानो पराविद्या के रूप में स्वीकार करते है मानो देखो, वह पुरोहित हैं, वह कैसा पुरोहित है? जैसे यज्ञशाला में मानो देखो, यजमान के समीप पुरोहित विद्यमान हो करके मानो वह नाना पराविद्या को प्रेरित करता हुआ, वह अपने मानं ब्रह्मा वृत्ते याग को ऊँचा बनाता है। इसी प्रकार वह परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञशाला को, इस संसार रूपी याग को ऊर्ध्वा में ले जाते है, वे रचनाकार है।

और रचनाकार होने से ही मानो, वे पराविद्या में रत रहने वाले पुरोहित माने गये है।

यज्ञोमयी स्वरूप परमात्मा

तो मुनिवरो! देखो, हमारा वेद का मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा को यज्ञमयी-स्वरूप स्वीकार करता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माने गये है। हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने जब याग के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ किया तो मानो देखो, इस याग को अवर्णं ब्रह्मे ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों का समन्वय किया है और ये कहा है कि वे परमपिता परमात्मा मानो पराविद्या को हमें प्रदान करने वाले है। और वे यज्ञोमयी स्वरूप हैं, क्योकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है मानो देखो, वह याग में परिणत रहने वाले हैं मानो वे परमपिता परमात्मा यज्ञमयी-स्वरूप है। ये जो संसार है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में मानो प्रत्येक प्राणी बेटा! याग कर रहा है। प्रत्येक मानव याग करता हुआ परमपिता परमात्मा को यज्ञमयी स्वीकार करते हुए इस सागर से पार होने की मानव कल्पना करता है कि मैं इससे पार हो जाऊँ बेटा! इससे मैं ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो जाऊँ।

मुझे स्मरण आता रहता है कि सृष्टि के प्रारम्भ की बहुत-सी वार्ताएं स्मरण आती रहती हैं मानो देखो, जब रचनाकार रचना करता हुआ रचना को अपने ही रूप में धारण करता हे तो मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड एक यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आने लगाती है।

तो आओ मुनिवरो! मैं विशेष विवेचना इस सम्बन्ध में न देता हुआ केवल यह कि हमारे आचार्यों ने बेटा! पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों को मानो एक ही स्वरूप देते हुए इसको भिन्न-भिन्न रूप नहीं देना, एकोकी में देखो, अनेका रूपां ब्रह्मणां व्रतेः मानो एक से अनेक रूप से यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है और जब इसको हम अपने में समेट लेते है तो मानो अनेकता से एकता में यह दृष्टिपात आने लगता है। इसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों ही मुनिवरो! देखो, उस परमपिता परमात्मा के यज्ञमयी स्वरूपता माने गये है

यज्ञ की अनिवार्यता

आज बहुत पुरातन काल की बेटा! एक वार्ता मुझे स्मरण आ रही है पुरातन काल के आचार्यों की, मैंने कई काल में तुम्हें चर्चाएं की है। आज भी हमें स्मरण आ रही है उनकी पुनरुक्तियायें प्रायः होती रहती हैं। परन्तु उनका स्वरूप अपनी स्थितियों पर बड़ा विचित्र बना रहा है। आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है कि याग के ऊपर कुछ अपना विचार विनिमय दिया जाए, कि यागां रूद्र भागं ब्रह्मणां यागाः मानो देखो, यह संसार याग है। मानव के सुविचार भी एक याग माने गये है तो इसलिए हमें यज्ञशाला में विद्यमान हो करके मानो देखो, हमें यज्ञ में परिणत हो जाना चाहिए।

याग का अधिपति

तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं याग के सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, परन्तु ऋषि-मुनि अपने में बड़ा विचार विनिमय करते रहे हैं। मुझे, वह काल स्मरण आता रहता है जब उद्दालक गोत्र में, शिकामकेतु उद्दालक अपनी स्थली पर विद्यमान थे। एक समय मुनिवरो! देखो, उन्होंने प्रातःकालीन याग प्रारम्भ किया और अपनी पत्नी बोले शकुन्तकेतु से कि हे दिव्या! आओ, हम मानो प्रातःकालीन याग करने के लिए तत्पर है। जब प्रातः कालीन याग करने लगे तो उन्होंने अपनी पत्नी दिव्या से कहा, हे देवी! आओ किसी काल में इस पर भी तो विचार विनिमय किया जाए कि यह याग क्या है? इस याग का, अधिपति कौन है? तो मानो देखो, बेटा! दोनों ने ही अपने में विचार-विनिमय करके यह कहा कि परमपिता परमात्मा इसका अधिपति माना गया है। वह परमपिता

परमात्मा के द्वारा ही मानो देखो, रचित एक विशाल क्रियाकलाप है, जिस कर्मकाण्ड की आभा में मानो ब्रह्मवेत्ता अपने में ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं और ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करते रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, जब आचार्यजन ब्राह्मणं ब्रह्मे शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी दोनों का अपने में जब विचार विनिमय प्रारम्भ हुआ तो उनका विचार एक बड़ा भव्य माना गया है। परन्तु देखो, वह अपने में याग करते थे। और मुनिवरो! देखो, एक समय मुझे स्मरण है वैशम्पायन के आश्रम में यह विचार विनिमय होने वाला मानं ब्रह्मणं व्रते देवाः चित्रं रथाः मानो देखो, यह चित्र बन करके एक रथ के रूप में वह द्यौलोक में प्रवेश होता है। जब उसके ऊपर उनका विचार-विनिमय प्रारम्भ हुआ तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, जब महर्षि वैशम्पायन के यहाँ महर्षि विभाण्डक ने अपना विचार दिया तो महर्षि विभाण्डक ने यह कहा कि यह जो चित्र है, यह सर्वत्र अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होते हैं विज्ञानवेत्ता भी यही कहते हैं और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी यही कहते हैं।

विज्ञान के दो प्रकार

हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान प्रायः सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहा है मानो एक विज्ञान जिसे हम भौतिक विज्ञान कहते हैं, दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान है मानो देखो, भौतिक विज्ञान तो उसे कहते हैं जहाँ मानव नाना प्रकार के यन्त्रों में देखो, तत्पर हो जाता है और यन्त्रों में नाना चित्रों का वह दर्शन करने लगता है। परन्तु देखो, उसका सूक्ष्म रूप बना करके वही शब्दों के रूप, शब्दों को चित्रों के रूप में दृष्टिपात करता रहा है। तो मुनिवरो! ऐसा मुझे स्मरण आ रहा है कि महर्षि वैशम्पायन, महर्षि विभाण्डक और महर्षि भारद्वाज अपने में विचार-विनिमय कर रहे थे। विचार विनिमय करके उन्होंने कहा यागां ब्रह्मणं ब्रहे कि यह जो याग है यह मानो देखो, एक ब्रह्मवासा कहलाई जाती है। आज हम गमन करना चाहते हैं कि अन्तरिक्ष में मानो देखो, इसे दृष्टिपात करे।

तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है कि वे तीनों आचार्यजन महर्षि विभाण्डक, महर्षि वैशम्पायन और महर्षि भारद्वाज भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के गृह में प्रवेश किया। महर्षि उद्दालक मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया और शिकामकेतु उद्दालक बोले-आइये, भगवन, विराजिये, यह मेरा कैसा सौभाग्य जागरूक हो गया है जो आज मानो देखो, मैं अव्रतं ब्रह्मं लोकं ब्रह्मे हे प्रभु! मैं विज्ञान के माध्यम से कुछ चिन्तन कर रहा था और मैं यह विचार रहा था, अपनी दिव्या को यह उपदेश दे रहा था कि महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में प्रायः ऐसा होता रहा है। तो आज मेरा बड़ा सौभाग्य है आज जो ब्रह्मवेता, विज्ञानवेत्ता भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों की प्रतिभा में जो प्रतिष्ठित रहने वाले हैं मानो मुझे कैसा सौभाग्य प्राप्त हो गया है।

तो मुनिवरो! देखो, ऐसा स्मरण है वह अपने में विचार विनिमय करने लगे, परन्तु महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि हे शिकामकेतु उद्दालक! तुम्हारा विज्ञान तो बड़ा गम्भीर है, तुम्हारा भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिकवाद से मानो समन्वय कर रहा है। और समन्वय करता हुआ, यही भौतिक विज्ञान आत्मा की प्रतिभा को महान बनाने वाला है। तो मानो देखो, हम तो तुम्हारे विज्ञान को दृष्टिपात करने आये हैं। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा-तो भगवन्! आप वर्णन करो, आज कैसे आपका आगमन हुआ है? उन्होंने कहा-कि हम इसलिए पधारे है, इसलिए विराजे हैं कि तुम्हारी विज्ञानशाला को दृष्टिपात करने के लिए, हमने यह श्रवण किया है कि तुम्हारा शब्द विज्ञान के ऊपर बड़ा अधिपत्य रहा है और वह जो शब्द विज्ञान है उसके ऊपर तुम्हारी मानवीयता सर्वत्र और मानव दर्शन भी उसी के ऊपर निहित रहता है।

द्यौ लोक में रथ

मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा-हे प्रभु! आप जानना क्या चाहते हैं, इन शब्दों के उच्चारण करने से? उन्होंने कहा-हम यह जानना चाहते हैं, हम वेद में यह अध्ययन करते रहते हैं चित्रं रथं ब्रह्मे यज्ञं ब्रह्मलोकं यज्ञमानाः मानो देखो, हम वेद में यह अध्ययन करते रहते हैं कि यजमान के साथ में जो होता-गण होते हैं उन सबका एक चित्र बन करके और चित्रों का रथ बन करके वह द्यौलोक में प्रवेश होता है। हम प्रायः इस द्यौलोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहते हैं? तो मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने ऐसा श्रवण किया तो उन्होंने कहा-आओ, भगवन! मैंने तो बहुत से यन्त्रों को दृष्टिपात किया है, बहुत से यन्त्रों को जानने का प्रयास किया है। जब मेरा बाल्यकाल था, क्योंकि हमारे उद्दालक गोत्र में विज्ञानवेत्ता बहुत हुए हैं और आध्यात्मिक उड़ान उड़ने वाले भी बहुत हुए हैं परन्तु देखो, यह जो भौतिक विज्ञान है यह अपने में अनूठा है। आध्यात्मिक विज्ञान अपने में पराविद्या को देने वाला, जो परमात्मा से मिलन कराता है। तो इसी प्रकार हमारा जो यह विज्ञानं ब्रहे ब्रहा, हमारा वेद का एक-एक मन्त्र, विज्ञान में हमें प्रविष्ठ करा रहा है। विज्ञान में हमें गमन करा रहा है। यह तो हमारी मानो देखो, एक सौभाग्य कृति ऊत मानी गई है तो मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने ऐसा वर्णन किया तो महर्षि ने अपने वाक्यों में कहा सम्भूति ब्रह्मणाः व्रतं देवाः हे भगवन। हम दृष्टिपात करना चाहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! उन्होंने सबसे प्रथम, अपने यहाँ जो यन्त्र विद्यमान थे सबसे प्रथम यन्त्र में ले गये और उन्होंने कहा हे भगवन! यह यन्त्र है और यन्त्र में यह विशेषता है कि जो याज्ञिक पुरुष है उनके चित्र आ रहे हैं मानो याज्ञिक चित्र आ रहे हैं और उससे जब उर्ध्वा में गमन करते हैं तो मानो देखो, हमारे पूर्वजों के भी चित्र आते रहते हैं क्योंकि हमारे यहाँ जब भी प्रभु ने, इस संसार का सृजन किया है तो मानो देखो, अबतक हमारे शरीरों में नाना माता-पिताओं के रक्तमयी मानो देखो, परमाणु और तरंगे विद्यमान रहती है उन्हीं रक्तमयी तरंगों, को ले करके मानो वही अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, द्यौलोक में प्रवेश कर जाते हैं और जब द्यौ लोक में प्रवेश हो जाते हैं तो ''द्यौयं ब्रह्मा लोकां द्यौयं ब्रह्मणे लोकां वाचन्नमं ब्रह्वा कृति'' हे प्रभु! यह मानो देखो, द्यौ लोक में प्रवेश हो जाते हैं। मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा ऋषि ने वर्णन किया है कि अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके प्रत्येक परमाणु अपने में परमाणित हो रहा है और वह गमन कर रहा है अन्तरिक्ष में क्या, द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है।

जड़ व चेतन का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र यही तो कहता है चित्रं रब्रहा अप्रतं रथं द्यौ लोका वाचन्म्नं ब्रह्मे मानो देखो, वही तो रथ बन करके जाता है। रथ मानो देखो, पितरों का रथ है हम अपने में पितरों के रथों को दृष्टिपात करते रहते हैं। और मेरे प्यारे! अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के गृह में, उनकी विज्ञानशाला में मानो देखो, उनके पचासवें महापिता का दर्शन यन्त्रों में होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषियों ने और वर्णन कराया तो सौंवे पिता तक के चित्र यन्त्रों में विद्यमान हुए। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो अग्नि है यह बड़ी विचित्र मानो देखो, एक रथ को दर्शाती है। शब्द को अपने में धारण करके वह द्यौ में प्रवेश करा देती है। मेरे प्यारे! देखो, द्यौ में वह चित्र रथों के साथ में विद्यमान रहते हैं।

तो इसलिए हमारे उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि परमपिता परमात्मा का जो अनूठा जगत है, यह बड़ा विचित्र है। यह मानो देखो, भौतिक विज्ञान में हमे ले जाता है। और आध्यात्मिक विज्ञान जिसे आत्मा का विज्ञान कहते हैं वह चेतना में माना गया है। वह सर्वत्र मानो देखो, चेतना के रूप में, चेतना उसे कहते हैं जहाँ गति हो और गति के साथ में ही मुनिवरो! देखो, वहाँ ज्ञान और प्रयत्न भी हो, तो वह चेतना का स्वरूप माना गया

है। परन्तु जड़वत उसे कहते हैं चाहे गमन भी हो, परन्तु देखो, उसमें ज्ञान और प्रयत्न नहीं है। ज्ञान और प्रयत्न नहीं है तो मानो देखो, वही मेरे पुत्रो। देखो, ब्रह्मणा कृतं ब्रहे वेद का वाक् यह कहता है कि मुनिवरो! देखो, उसमें चेतना नहीं मानी जाती। वह मानो देखो, गमनं गत्प्रमाणां गति तो हो सकती है परन्तु जहाँ ज्ञान और प्रयत्न नहीं है वहाँ मुनिवरो! देखो, चेतना का भान नहीं किया जा सकता। वहाँ जड़वत माना जाता है। यह पिण्ड रूप जगत माना गया है। तो इसलिए मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा को पिण्ड और चेतना को मानों जड़ और चेतन दोनों के स्वरूप में वह विद्यमान रहता है। तो इसलिए वह परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माना गया है।

आज का हमारा वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा है मुनिवरो! शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता था। विचार विनिमय होता रहता। परन्तु देखो, उनकी विचार धाराएं बड़ी विचित्र रही हैं। एक-एक वेद के मन्त्र में बेटा! ब्रह्माण्ड को परिणत कर दिया है मानो पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों को एक ही सूत्र में सूत्रित करते हुए मुनिवरो! देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड एक माला के रूप में दृष्टिपात आते रहते है। तो मुनिवरो! देखो, आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विवेचना केवल यह है कि हम पिण्ड, ब्रह्माण्ड और शब्द के ऊपर विचार विनिमय करते चले जाएं। हे यजमान! तेरी जो शब्दमयी वाणी है वह पुरोहित के साथ रहती है और वह पुरोहित परमपिता परमात्मा है। वह मानो देखो, पुरोहित बन करके हमारा कल्याण, वह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा, यज्ञमयी स्वरूप का वर्णन करते हुए और उसको जानते हुए इस सागर से पार हो जाएं, ऐसा हमारा मन्तव्य रहता है। आओ मेरे प्यारे! अमृतम् अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् दधि ब्रह्मणं वृत्यां आभ्यां देशः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, परमपिता परमात्मा की अनूठी चर्चा कर रहे थे मानो जड़ और चेतना में इस ब्रह्माण्ड और पिण्ड की कल्पना कर रहे थे। प्रायः हमारे ऋषि मुनि और पूज्यपाद गुरुदेव का तो इसके ऊपर बड़ा अधिपत्य रहा है मानो परम्परागतों से ही ऋषि-मुनि, एक-एक वाक् के ऊपर अपनी विवेचनाएं और संसार की आभा में सदैव रत रहे हैं। आज मेरा अमृतं ब्रह्मे पूज्यपाद गुरुदेव को मुझे अपने कुछ मानो देखो, विचार व्यक्त तो नहीं कह सकता, केवल यह कि यह जो हमारी वाणी है यह प्रायः देखो, ऐसी स्थली पर गमन कर रही है, जहाँ एक याग का आयोजन हुआ। मेरा अन्तरात्मा तो सदैव बड़ा प्रसन्न रहता है मानो परम्परागतों से ही जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ और मानव समाज की जब उत्पत्ति हुई तो उसी काल से एक विचित्र क्रियाकलाप ऋषि मुनियों के, तपस्वियों के हृदयों में, मस्तिष्कों में एक क्रियाकलाप आया कि याग एक सबसे उच्च महान कर्म है। श्रेष्ठतम कर्म माना गया है।

निरभिमानता में परमात्मा

हमारे यहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो मुझे कई काल में यह वर्णन कराते हुए कहा था कि याग तो विष्णु है, जो पालन करने वाला है। ऐसा पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया। परन्तु जहाँ विष्णु देखो, इस याग को माना है वहाँ राजा का नाम भी विष्णु माना है। जैसे याग निष्पन्न सुगन्ध देता है, तरंगे देता है, वेद मन्त्रों की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में प्रवेश करता है और वायु मण्डल को विचित्र और पवित्र बनाता है। इसी प्रकार राजा भी अपनी प्रजा का पालन करता है। प्रजा का पालन तो वास्तव में प्रभु ही कर रहा है यह राजा अपने में स्वीकार करता है। राजा अपने में मानो निरभिमानी बन करके, क्योंकि परमपिता परमात्मा निरभिमानी है। इसलिए

राजा और मानव दोनों को निरभिमानी होना चाहिए। क्योंकि निरभिमानी को ही देखो, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा प्राप्त होती है। तो इसीलिए वेद का आचार्य और पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वर्णन कराया। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना देने नहीं आया हूँ, केवल पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने अभी-अभी देखो, याग की चर्चाएं की। मेरा जो अर्न्तहृदय है वह यजमान के साथ रहता है। मैं यह कहता रहता हूँ हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखरड बना रहे क्योंकि तेरे सौभाग्य की धाराएं पवित्रता को प्राप्त होती रहे। ऐसी मेरी मनोनीत कामना रहती है। परन्तु रहा यह कि मैं एक राजा का वर्णन कर रहा था। राजा की चर्चा आ रही थी। मैं अभी-अभी देखो, जहाँ विष्णु याग को माना, वहाँ राजा का नाम भी विष्णु है।

राजा का विष्णु रूप

परन्तु देखो, राजा का नाम विष्णु है। तो राजा का नाम विष्णु क्यों है? क्योंकि राजा स्वयं अनुशासन में रहता है और प्रजा को अनुशासित करता है। वही राजा प्रजा को अनुशासित कर सकता है जो राजा स्वयं अपने में अनुशासन में रहता है। मानो देखो, वही माता-पिता बाल्य को अनुशासन में ला सकते हैं जो स्वयं अनुशासन में अपने जीवन को व्यतीत करने वाले हो और यदि माता-पिता अपने जीवन में आह संयमी है और मानो देखो, अपने में वह विचारवान नहीं बनेंगे तो अपने बाल्य-बालिका को विचारवान या अनुशासन में नहीं ला सकते। इसी प्रकार राजा को अनुशासित रहना चाहिए और राजा अनुशासित रहेगा मानो मनं ब्रह्मा व्रते जैसे देखो, राजा ऐसा होता है मानो देखो, जैसे दस इन्द्रियाँ हैं और इन्द्रियों के ऊपर मन रहता है और मन, जब तक उनकी कमान को, अपने में स्थिर करने वाला है वह 'रथं ब्रह्माः प्रभु' वह अपने में मन सारथी बन करके वह ऊर्ध्वा में ले जाता है। इसी प्रकार राजा, इस समाज का, राष्ट्र का एक नायक होता है। मन की भाँति सारथी होता है उसमें विद्यमान रहने वाली मनोनीत एक आत्मा आत्मवत मानो देखो, समाज का व्रत और चरित्र रहता है। तो इसी प्रकार राजा को चाहिए कि राजा स्वयं मन की भाँति और प्रत्येक इन्द्रियों को देखो, प्रजा को अपने में अनुशासित बनाता रहे। क्योंकि मन को अनुशासित बनाना बहुत अनिवार्य है। राजा तब ही ऊँचा बनता है जब मन अनुशासित हो जाता है।

भगवान राम का जीवन

आज का समाज मानो देखो, राम की कल्पना कर रहा है। आज का समाज देखो, वर्तमान का जो समाज है यह प्रत्येक रूपों में अपनी कल्पना कर रहा है। देखो, राम का आहार कैसा था? राम राजा कैसे थे, इसके ऊपर देखो, विचार विनिमय होना चाहिए। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन भी कराया और दृष्टिपात भी किया कि मानो देखो, भगवान राम प्रातः काल, जब अन्तरिक्ष में तारा मरडलों की दीपमालिका बनी रहती, उस काल में अपने आसन को त्यागते थे, त्याग करके देखो, अपनी शारीरिक क्रियाओं से निवृत्त हो करके, वह याग में परिणत हो जाते थे, याग में उपदेश देते, याग के माध्यम से ही वह राष्ट्र को सन्देश देते रहते थे और यह कहते रहते कि राष्ट्र में ऐसा होना चाहिए।

तमोगुणी तप

तो भगवान राम का जीवन बड़ा प्रिय और भव्यता में रमण करता रहता था। परन्तु जब मैं आधुनिक काल के राष्ट्र या माता-पिता को दृष्टिपात करता हूँ तो मेरा अन्तरात्मा बड़ा आश्चर्य युक्त होता है। मुझे ऐसा मुझे स्मरण आ रहा है मानो भगवान राम के काल में एक तपस्वी तप करने लगा और वह मानो तमोगुणी तप था। किसी का अनिष्ट करने के लिए वह कुछ तप कर रहे थे। राम ने अपने तीखे बाणों से उसें नष्ट कर दिया। तीखे शस्त्रों से उस पर प्रहार कर दिया। देखो, ब्रह्मवेत्ताओं में एक बड़ा मानो त्राहि-त्राहि हो गई, कि मानो ऐसा कैसे हुआ? राम के

समीप पहुँचे, उन्होंने कहा कि जिस राजा के राष्ट्र में दूसरों का अनिष्ट करने वाले अथवा तपस्वी व तपस्या का ह्रस होता हो उस राजा के राष्ट्र में, तो भगवान राम ने मानो देखो, उसको त्रास, उसको मृत्यु दण्ड दिया।

राजा का कर्तव्य

तो परिणाम यह है कि आज हमारे विचारों का, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ पूज्यपाद गुरुदेव तो सर्वत्र जानते हैं आधुनिक काल के राष्ट्र की चर्चाएं कि राजा ही मानो देखो, दूसरों का अनिष्ट करने वाले हो तो वह राष्ट्र कैसे स्थिर रह सकेगा देखो, राजा के राष्ट्र में हिंसा होती हो, ईश्वरवाद के ऊपर हिंसा होती हो प्रायः मानो देखो, यह कर्तव्यवाद माना गया है। हमारे यहाँ यह सिद्धान्त है कि राजा को प्रजा की रक्षा करने के लिए आततायी को दण्ड देना चाहिए और मानो देखो, महापुरुषों की शुद्धता की रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिए और जहाँ देखो, राजा अनिष्टता में यह विचार रहा हो कि मृत्यु हो रही है तो होने दीजिए मानो देखो, तेरी स्थली सुरक्षित बनी रहे, ऐसा जब विचार बना रहता है तो राष्ट्र या समाज कैसे ऊँचा बनेगा।

रूढ़ियों से अनिष्टता

आज मैं देखो, आधुनिक काल के ऊपर अपना कोई विचार देना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह है कि आज ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ बनी हुई हैं उन रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए। हे राजन! तेरा कर्तव्य है कि तेरे राष्ट्र में ये रुढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए। ये रुढ़ि ही तेरे राष्ट्र को अनिष्टता में ले जाती है, ये रुढ़ि ही मानो देखो, अग्नि के मुख में ले जाती है इसलिए रुढ़िवाद नहीं होना चाहिए। ऐसा मानो देखो, हमारे यहाँ माना गया है। देखो, हिंसा की आभा का राष्ट्र कितने समय तक जीवित रह सकेगा? यह विचार हमारे मस्तिष्कों में आता रहता है परन्तु यह जो ईश्वरवाद पर रुढ़िवाद है, हे राजन! यह समाप्त होना चाहिए, प्रजा का कर्तव्य है कि रुढ़िवाद को राजा के माध्यम से नष्ट कराए और यह कैसे नष्ट हो सकता है।

रूढि से पालन

मैंने तो कई काल में अपना विचार व्यक्त किया था पूज्यपाद गुरुदेव ने भी उन विचारों का समर्थन किया कि रुढ़िवाद जब बलवती हो जाता है। क्योंकि रुढ़ि के बिना पालन नहीं हो सकता, रुढ़ि तो होनी चाहिए जैसे माता-पिता है उनके द्वारा रुढ़ि होती है, तो बाल्य बालिका का पालन होता है। यदि राजा के राष्ट्र में भी रुढ़ि होती है तो उससे पालन होता है। परन्तु जो रुढ़ियाँ ईश्वर के नाम पर होती हैं। वे अधूरेपन में परिणत रहती हैं उसमें अग्नि के काण्ड होने प्रारम्भ हो जाते हैं। ऐसे समय में देखो, राजा को ब्रह्म ज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। ब्रह्मवादी बनना चाहिए और या ब्रह्मवेत्ताओं का एक समाज होना चाहिए, प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके, इनके विचारों में परिणत हो करके उनके विचार ले करके उनसे शास्त्रार्थ होना चाहिए, तर्क होना चाहिए। क्योंकि हमारे यहाँ तर्क, सिद्धान्त सृष्टि के प्रारम्भ से ही विचित्र माना गया है। मानो देखो, ऋषि मुनि अपने में तार्किक बन करके, वह दार्शनिक बनते हैं। क्योंकि तर्क पूर्व आता है दार्शनिक उसके पश्चात् बनता है। यदि तर्क देखो, विशुद्ध नहीं होगा, विशुद्ध तर्क नहीं होगा तो दार्शनिक भी विशुद्ध नहीं बन सकता। तो इसलिए देखो, तर्क होना चाहिए, तर्क में ही दर्शन होना चाहिए और वह जो दर्शन है देखो, ऐसा दार्शनिक राजा होना चाहिए। जिससे प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके उनसे शास्त्रार्थ होना चाहिए, मध्यस्थता राजा को, या ब्रह्मज्ञानी, जो पुरोहित होता है राष्ट्र में, उसे करनी चाहिए और वह अपना एक सूत्र निर्णय देता है और जब वह निर्णय देता है तर्क पर, तर्क पर, जो मानव दर्शन पर स्थिर हो जाए और विज्ञान में जो वैज्ञानिकता में परिणत हो जाए, उसी को स्वीकार करना राजा के राष्ट्र में देखो, रक्त भरी क्रान्ति का प्रभाव समाप्त हो जाता है, वह अपने में व्रतो में प्राप्त हो

जाता है।

समाज की ह्रासता का कारण

तो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह वर्णन कराया, राम के काल में भी प्रायः ऐसा हुआ है। देखो, रावण के काल में रूढ़ियाँ पनपी, विनाश हो गया। इसी प्रकार रूढ़ियाँ पनप रही हैं मानो देखो, ईश्वर के नाम पर जब रूढ़ियों पर रूढ़ि पनपने लगती है तो मानो देखो, एक हिंसा प्रारम्भ हो जाती है। राजा बुद्धिमान न होने के कारण, राजा में स्वार्थ और देखो, पद की लोलुपता के कारण ही यह रक्तभरी क्रान्ति के संचार आते रहते हैं। इसलिए चाहिए कि वह अपने में देखो, अपनेपन का दर्शन करके और दर्शनों की प्रतिभा में निहित हो जाए। ऐसा मानो देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में प्रगट करते हुए कहा था कि यहाँ मेरी पुत्रियों का, माताओं का ह्रस होता जा रहा है। मानो देखो, यहाँ नाना रूढ़ियों में माताओं का ह्रस होने से देखो, माता तपस्वी न रहने से तपस्वी पुत्र पुत्रियों का जन्म न होने से मानो देखो, यह ह्रसता को प्राप्त हो रहा है समाज। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा था कि माताएं अपने गर्भस्थल से वज्र सन्तान को जन्म देती रही है।

परन्तु देखो, आधुनिक काल में मेरी प्यारी माता एक मानो देखो, एक रेंगने वाले कीड़ों की प्रतिभा को जन्म दे करके, वह स्वयं अपने में कृतियों को प्राप्त नहीं हो रही है। इसलिए तपस्या होनी चाहिए, तपस्या का अभिप्रायः यह है कि अपने में तपस्वी बन करके ही रूढ़ियों का विनाश करें और मानो देखो, ईश्वरवाद पर जो रूढ़ियाँ है वही समाप्त हो करके राजा का राष्ट्र सार्थक बनता रहेगा। ये बहुत समय से रूढ़ियाँ चल रही हैं प्रायः वास्तव में इनका विनाश तो होने वाला है। प्रायः देखो, यह जब और भी बलवती हो जाती है तो अज्ञान पनपने लगता है। अज्ञान विज्ञान की धाराओं पर देखो, अज्ञान निकृष्ट हो जाता है। प्रायः समाप्त हो जाता है और परन्तु देखो, ऐसा वर्णं ब्रह्मे राजा तपस्वी बन जाए तो प्रजा में एक आनन्दवत आ जाता है जो अश्वमेध और गौमेध याग करने वाला है।

वाममार्ग

आज जब यह विचार हमारे हृदयों में परिणत होता है। पूज्यपाद गुरुदेव ने याग की चर्चाएं की, परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। वह परमपिता परमात्मा पुरोहित रूप माना गया है। हमारे यहाँ देखो, महाभारत काल के पश्चात जब यह मानो देखो, वाम मार्ग आया और इस वाम मार्ग में जब अज्ञान और देखो, वेद के मन्त्रों के अर्थों का अनर्थ प्रारम्भ हुआ तो उस समय रूढ़ियाँ अज्ञानता में पनपने लगी और वह इस प्रकार पनपी कि न राष्ट्र रहा, न समाज रहा। उसका परिणाम यह हुआ कि मेरी पुत्रियों और माताओं के ऊपर आक्रमण प्रारम्भ हुआ। उस आक्रमण का परिणाम यह हुआ कि सन्तानों का, सुसन्तानों का जन्म होना समाप्त हो गया। अखण्ड ब्रह्मे व्रत्तं रूढ़िवादी बन करके, समाज में तर्क शास्त्र को अपने से दूरी करके, दार्शनिक समाज नहीं रहा। जहाँ दार्शनिक न रहता हो वहाँ अज्ञान पनपता रहता है क्योंकि आत्मा का तो एक मानो तरंगवाद है आत्मा तो अपने में तरंगवाद में परिणत कराती रहती हैं।

उद्बोधन

तो इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा देने नही आया हूँ, क्योंकि विचार तो बहुत हैं देने के लिए, विचार केवल इतना उदगीत रूप में गाना है कि आदि ब्रह्म हे राजन! तू अपने राष्ट्र में रूढ़ियों को समाप्त करते हुए और तू अश्वमेध याग करता रहे। तू, मानो

ब्रह्म याग करता रहे, रूद्र याग करता रहे, हे राजन! तू अपनी ही मृत्यु से पार होने का याग न कर, तू समाज की मृत्यु से पार होने का याग प्रारम्भ कर। यह राजा का कर्तव्य है राजा के राष्ट्र में जब अश्वमेध याग होते हैं, विष्णु याग होते हैं जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी विष्णु याग का वर्णन किया। आज मैं विशेषता में, पूज्यपाद गुरुदेव से क्षमा पाता हुआ, केवल यह कि विष्णु याग, पालना का याग है। अश्वमेध याग देखो, ज्ञान का याग है अजामेध देखो, अपने में विजय करने का याग है, इसी प्रकार हमें वाजपेयी याग प्रकृति को अपने में वैज्ञानिक याग कहे जाते हैं। तो इस प्रकार के याग प्रायः हमें करने चाहिए। ऐसा देखो, यह राजा का कर्तव्य है। राजा ब्रह्मवेत्ता, वेद का पाण्डित्व उसके समीप होना चाहिए। ऐसा यह विचार आज इसलिए कि हे राजन! तेरे राष्ट्र में महानता होनी चाहिए और तेरे राष्ट्र में एक मानो ब्रह्म ज्ञान होना चाहिए, जिससे तर्क और मानव दर्शन पर देखो, धर्म परमात्मीय विज्ञान और ज्ञान प्रत्येक मानव के समीप होना चाहिए। यह आज का वाक् अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बड़े विचित्र एक विचार दिये, यह विचार क्रिया में कैसे आयेंगे यह विचार विनिमय इनका एक विषय है। इससे बहुत गम्भीर मुद्रा में, राष्ट्रीयता को परिणत हो जाना चाहिए। आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सागर से पार हो जाएं, यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् ब्रह्म गणाः आ पा रथं आभ्यां देवाः। ओ३म् यगहगः यन्त्वाम्। 27-8-1988 बरनावा।

५ महर्षि याज्ञवल्क्य का तप 02 09 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है मानो जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। हमारे यहाँ दो प्रकार का जगत माना गया है एक चैतन्यवत् है तो एक जड़वत कहा जाता है। हमारे यहाँ चेतना के सम्बन्ध में, वैदिक साहित्य में कुछ इस प्रकार की लोकोक्तियाँ आई है, जिसका हमारे आचार्यो ने, अपने में वर्णन किया है। चेतना का सम्बन्ध है ज्ञान, प्रयत्न और गति से और जितना भी यह जड़ जगत है वह पिण्ड रूप में विद्यमान है और उसकी गति भी है परन्तु ज्ञान और प्रयत्न नहीं है तो उसको जड़वत कहा जाता है।

परमात्मा का वसुन्धरा रूप

तो हमारे यहाँ दो प्रकार का जगत है। एक जड़वत और एक चैतन्यवत्। परन्तु परमपिता परमात्मा इन दोनों के सर्वत्र मूल में विद्यमान रहते है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता के ऊपर, प्रायः हमारे आचार्यों ने बेटा! उसके ऊपर अन्वेषण और उसको उपासना का अपना देवत्व स्वीकार किया है परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा को माता वसुन्धरा के रूप में वर्णन कर रहा है हमारे यहाँ वसुन्धरा की नाना विवेचनाएं होती रही है और नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना भी, प्रायः हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आती रही है। वसुन्धरा का अभिप्रायः यह कि जिसके गर्भ में, हम सर्वत्र मानो देखो, वशीभूत रहते है उसी के गर्भ में क्रीड़ा कर रहे है।

तो वह परमपिता परमात्मा एक वसुन्धरा के रूप में विद्यमान है। जिस प्रकार माता के गर्भ स्थल में शिशु मानो अपनी क्रीड़ा में रत रहता है, और वह शून्यतप प्रह्वाणा गृविद्यां देवां ब्रह्मणां लोकाम् माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु मानो वशीभूत रहते है। इसलिए माता का नाम वसुन्धरा कहा जाता है और जब माता वसुन्धरा के गर्भ से पृथक् हो जाते है तो मानो उस पृथ्वी-वसुन्धरा के रूप में विद्यमान जो खाद्य और खनिज पदार्थो का एक मूलक बनी हुई है मानो जिसके गर्भ में प्रत्येक प्राणी, अपने में गतिवान हो रहा है और उसी से सहायता को प्राप्त करता हुआ मुनिवरो! देखो, वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान है। तो हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में वसुन्धरा के बहुत से पर्यायवाची शब्द है। परन्तु वेद का मन्त्र कहता है वसुन्धरं ब्रह्मा वसुन्धरं रूद्रां भवितां ब्रह्मणां वसुन्धराः मेरे प्यारे! देखो, वह माता वसुन्धरा कहलाती है जिसके गर्भ में हम वशीभूत रहते हैं।

पालक विष्णु

तो आओ मुनिवरो! देखो, आज मैं इस सम्बन्ध में, वसुन्धरा के सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह कि आज का हमारा वेद मन्त्र 'भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रेरणा दे रहा है', भिन्न-भिन्न प्रकार की आभा में हमें आभायित कर रहा है। तो विचार क्या मुनिवरो! आज के वेद मन्त्र में विष्णु शब्द आ रहा है। हमारे यहाँ विष्णु के भी, इसी प्रकार के पर्यायवाची शब्द है। परन्तु विष्णु नाम जो पालन करने वाला है, विष्णु के मूल में एक ही वाक् कहा जाता है जो पालन करने वाला है। इसलिए परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है। जो सत में रत रहने वाला है। जो पालन कर रहा है। वह विष्णु है, वह कल्याण कारक है। तो मुनिवरो! देखो, इसी प्रकार विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है। मानो जिसके न रहने पर मानव की पालना, प्राणी की पालना शून्य

गति को प्राप्त हो जाती है। जैसे मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ विष्णु नाम माता को कहा गया है। उस माता का नाम विष्णु है जो कल्याण करने वाली अथवा जो पालन करने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, माँ, बालक को, हम जैसे शिशुओं को अपने में, पालना में परिणत करा रही है। कहीं लोरियों का पान कराती है, अपनी वाणी से मानो देखो, वाणी का संकलन बना लेती है वह माता विष्णु के रूप में विद्यमान है। वह पालना करने वाली है। कहीं मानो उत्पत्ति के मूल में विद्यमान है, कहीं मानो देखो, रजोगुण के रूप में विद्यमान रहती है। कहीं सतोगुण में, पालना रूप में, विष्णु रूप में वह परिणत होने वाली है।

विष्णु स्वरूप आत्मा

तो इसलिए बेटा! वेद का ऋषि कहता है कि माता का नाम विष्णु कहा जाता है। जहाँ परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु और विष्णु आत्मा ब्रह्मणे लोकाम् वेद का आचार्य कहता है कि विष्णु नाम आत्मा का है। आत्मा जब तक मानव के शरीर में रहती है तब तक ये मानो जीवन वृत्तियों का प्राप्त होता रहता है, गतिवान रहता है। ज्ञान में रत रहता है। परन्तु जहाँ ये आत्मा इस शरीर से पृथक् हुआ, तो मेरे प्यारे! शून्य गति को प्राप्त हो जाता है शरीर, आत्मा ब्रह्मणे मेरे प्यारे! देखो, उस आत्मा का नाम विष्णु है जो शरीर में वास कर रहा है, गतिवान बना रहा है, ज्ञान और सतोगुण में मानव को परिणत कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस आत्मा का नाम विष्णु है। विष्णु नाम जहाँ आत्मा का है वहाँ सूर्य का नाम भी विष्णु है, जो प्रकाश देता है ऊर्ज्वा देता है ऊर्ज्वा में परिणत करा देता है।

ऋषि-मुनियों की विचित्र शैली

आओ मेरे प्यारे! आज मैं पर्यायवाची शब्दों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ वेद का मन्त्र क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र कहता है, विष्णु! तू, कल्याणकारी है, पालना करने वाला है। चाहे तू किसी भी रूप में विद्यमान है परन्तु जहाँ पालना की वृत्तियाँ प्राप्त होती है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें जहाँ इन वाक्यों में ले जाने के लिए आया हूँ, वहाँ केवल यह कि हमारे यहाँ नाना प्रकार के विज्ञान में मानव रत रहता है। हमारे यहाँ यागां रुद्रं ब्रह्माः वैदिक आचार्यो ने बेटा! याग की बड़ी प्रशंसा की है। याग के ऊपर मुनिवरो! देखो, ऋषि-मुनियों ने अपने विद्यालयों में विराजमान हो करके, ब्रह्मचारियों को ऊर्ध्ववेत्ता बनाने का प्रयास किया। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन आता रहा है। आज के हमारे वेद के मन्त्र में भी यागां यज्ञनं ब्रह्मे यस्तुतं ब्रह्माः वृत्ताः मेरे प्यारे! देखो, याग का बड़ा वर्णन आ रहा था। हमारे यहाँ यू तो भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन आता रहता है परन्तु हमारे यहाँ एक याग का नाम है जो ब्रह्मवर्चोसि याग कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में विद्यमान रहते है और उन्होंने बेटा! देखो, आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों को एक याग के रूप में स्वीकार किया है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि-मुनियों की एक बड़ी विचित्र शैली रही है। विचार-विनिमय करने की कि उन्होंने ब्रह्माण्ड को पिण्ड और पिण्ड को ब्रह्माण्ड दोनों को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया है। यह भिन्न-भिन्न प्रकार के जो मनके है उन्हें एक ही सूत्र में लाने का उन्होंने प्रयास किया है।

तो मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें उन सूत्रों में ले जाना चाहता हूँ, जिन सूत्रों में विराजमान हो करके ऋषि-मुनि अपने में बेटा! अपनी आभा में रत रहे है। विचार आता रहता है बेटा! वेद का एक-एक मन्त्र, एक-एक शब्द हमें बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड की उड़ान उड़ाने के लिए तत्पर हो रहा है। परन्तु आज के वेद का आचार्य क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र क्या कहता है? मेरे पुत्रो! देखो, आओ, आज मैं तुम्हें एक विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ बेटा!

जहाँ ब्रह्मचारी, अपने में अध्ययन करते रहे है जहाँ बेटा! देखो, नाना प्रकार की तपोमयी चर्चा होती रही है। आज का हमारा वेद का मन्त्र भी कह रहा था तपं ब्रह्मणं तपं रूद्रो भागं, प्रमाणा व्रतं देवाः तपाः मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र कहता है कि मानव को तपना चाहिए। क्योंकि बिना तप के मानव का जीवन कदापि ऊंचा नहीं बन पाता, इसलिए मानव को तपस्वी बनना चाहिए।

महर्षि याज्ञवल्क्य का विद्यालय

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जिसकी वार्ताएं मैंने कई काल में तुम्हें प्रगट भी की है। आज भी कुछ वेद मन्त्र आ रहा है परन्तु देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में, प्रातःकालीन बेटा! याग करते थे, ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके। ब्रह्मचारी अपने में शान्त चित्त हो करके उन वेद मन्त्रों का उद्गीत अपने में श्रवण करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ब्रह्मणाव्राश्रम ब्रहे वेद के आचार्य ने कहा-हे ब्रह्मचारियों! आज का वेद का मन्त्र कहता है कि प्रत्येक मानव को तपना चाहिए। क्योंकि तपं ब्रह्मा तपं रूद्राः तपं पृथं ब्रह्मे तपं वाचन्नमं ब्रह्मा, सूर्याणि गच्छतं तपाः मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य, ब्रह्मचारियों के मध्य में कह रहा है कि हे ब्रह्मचारियों! ये पृथ्वी तपती है, जब मानो देखो, ग्रीष्म ऋतु आती है, तो तपायमान रहती है। और जब वर्षा काल आता है तो यह नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। यदि तप नहीं करेंगे, तपस्या देखो, पृथ्वी नहीं तपेगी तो नाना प्रकार के व्यंजनों वाली नहीं बन पाती। माता तपायमान रहती है तो ममतामयी बन जाती है। ब्रह्मचारी विद्यालय में तपकर अध्ययन करता है तो मानो वहीं आचार्य बनता है। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ प्रत्येक पदार्थ तप रहा है। सूर्य प्रातः काल से सायंकाल तक तपता रहता है इसलिए मानव को भी तपायमान रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने राष्ट्र में देखो, तपा हुआ होता है तो मुनिवरो! देखो, राष्ट्र को ऊँचे मार्ग पर ले जाता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रजा अपने में तपायमान बन जाती है।

तप से पवित्रता

तो विचार विनिमय यह, मुनिवरो! देखो, यहाँ प्रत्येक पदार्थ तप रहा है। इसीलिए प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए और तपं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आ रहा था, ब्रह्मचारी अपने में हर्ष ध्वनि और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने उपदेश और याग को सम्पन्न करने के पश्चात् ब्रह्मचारियों से कहा-हे ब्रह्मचारियों! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं तप करने चला जाऊं? क्योंकि आज हमारा वेद का मन्त्र कहता है तपं तपश्चं ब्रह्मा तपं रुद्रो तपं ब्रह्मा तपं वायु सम्भवब्रहे यहाँ देखो, प्रत्येक पदार्थ तप रहा है इसलिए हमें भी तपना चाहिए। हे ब्रह्मचारियों! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तप करने चला जाऊँ।

बेटा! ब्रह्मचारियों ने एक स्वर में हो करके कहा-हे प्रभु! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है मानो देखो, जिस विद्यालय में आचार्य तपा हुआ होता है वह विद्यालय पवित्र होता। जिस राजा के राष्ट्र में राजा तपस्वी होता है वह राष्ट्र पवित्र होता है। जिस मानव गृह में देखो, माता-पिता तपस्वी होते है वहाँ के बाल्य बालिका तपस्वी बन जाते है। तो हे भगवन! आप तप करने के लिए जा रहे है ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। हम अपने में हर्ष ध्वनि कर रहे है मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा तो-हे ब्रह्मचारियों! मुझे आज्ञा दो, मैं तप करने जा रहा हूँ। भयंकर वनों में तप करना है मुझे, मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने हर्ष ध्वनि करते हुए कहा-प्रभु! तपिये और अपने विद्यालय को इसी प्रकार दृष्टिपात् कीजिए।

मन की तरंगों का प्रभाव

मेरे पुत्रो! मुझे ऐसा कुछ स्मरण आ रहा है कि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने आसन को त्याग दिया और विद्यालय को त्याग करके बेटा! भयंकर वनों में, एक स्थली पर विराजमान हो गये, न्यौदा में मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे, मन्त्र कह रहा था भव व्रहे भव व्रते वातं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे मना वाचो सम्भवा; मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र कह रहा था कि देखो, मनस्तं ब्रहि वह मानव तपस्वी बनता है जिसके मन से किसी का समन्वय नहीं होता। मानो देखो, मन ही मानव को, मन से मन की प्रतिभा और मन प्राण के सहित गमन करके मानो उससे सम्बन्धित हो जाता है। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने विचारा कि मैं तप करने तो जा रहा हूँ परन्तु मेरे गृह में दो पत्नियां है एक का नाम कात्यायनी है दूसरी का नाम मैत्रयी है। मानो यदि मैं अप्रतं ब्रहे यदि इन दोनों को सन्तुष्ट नहीं कर पाऊँगा तो तपस्या में इनके मन की तरंगे मेरे मन को तरिंगत करेंगी और मेरी तपस्या नष्ट हो सकती है मानो देखो, मन की धाराएं यहाँ प्रदीप्त हो करके, मुझे मानो बाध्य कर सकती है। ऐसा याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा ने, वेद मन्त्रों का अध्ययन करते हुए विचारा, और भयंकर वन को त्याग करके अपने गृह के लिए उन्होंने गमन किया और भ्रमण करके अपने गृह में पहुँचे।

ऋषि का कात्यायनी से सम्वाद

मेरे प्यारे! सबसे प्रथम वह कात्यायनी के द्वार पर पहुँचे कात्यायनी ने बेटा! ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्हें आसन दिया, विराजमान हो गये। देवी ने कहा-हे प्रभु! आज बिना सूचना के मेरे गृह में आने का मूल कारण क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि बोले-हे देवी! हे दिव्या से! मैं इसलिए तुम्हारे गृह में पधारा हूँ क्योंकि आज प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में वेद मन्त्रों का अध्ययन कर रहा था तो उसमें तप की बड़ी विशेष महिमा आ रही थी, इसलिए मैं तप करने जा रहा हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तप करने चला जाऊँ? मेरे प्यारे! महर्षि के वाक्यों को पान करके कात्यायनी ने कहा-हे प्रभु! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। भगवन्! जिस गृह में मानो देखो, पत्नी का स्वामी तपस्वी होता है वह तो बड़ी सौभाग्यशालिनी होती है। हे प्रभु! मैं तो बड़ी सौभाग्यशालिनी हूँ यदि आप तप करने के लिए जा रहे है। क्योंकि तप ही तो मानव का जीवन है और तपश्चर है तो स्वतः तपस्या हो ही जाएगी।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने कहा-हे कात्यायनी हम तपस्या करने जा रहे है अब तुम आज्ञा दो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे प्रभु! आप तपस्या के लिए जाईये। मुनिवरो! उन्होंने अपने हृदय में हर्ष ध्वनि करते हुए कात्यायनी को त्याग करके मैत्रेयी के गृह में प्रवेश किया। मैत्रेयी ने भी उसी प्रकार उनका स्वागत किया और मैत्रेयी ने नतमस्तक हो करके कहा-हे प्रभु! आज मानो देखो, बिना सूचना के गृह में आने का जो कारण है इसमें कोई रहस्य है? उन्होंने कहा-हाँ देवी! मैं तपस्या करने के लिए जा रहा हूँ। न्यौदा में मन्त्रों का मैं अध्ययन कर रहा था और उस अध्ययन में मानो देखो, तप की बड़ी विशेष महिमा आ रही थी। तो हे देवी! मैं तपस्या करने जा रहा हूँ, यदि तुम्हारी इच्छा हो।

ऋषि का मैत्रेयी से सम्वाद

तो मेरे प्यारे! देखो, मैत्रेयी ने कहा हे प्रभु! आप तप करने जा रहे है, मैं आपकी अर्धांगनी हूँ मानो तपस्यं ब्रह्मे हे प्रभु! मेरा क्या बनेगा? मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! यह तुम क्या उच्चारण कर रही हो? मानो देखो, तुम्हें तो यह प्रतीत होना चाहिए कि संसार में जो भी मानव कर्म करता है, वह अपने लिए किया करता है। मानो देखो, पत्नी जो होती है वह पति तक सीमित होती है और यदि ब्रह्मणे वह स्वतः अपने लिए पत्नी बन जाए तो वह प्रभु के समीप चली जाए जैसे मानो देखो, पति केवल स्वानं ब्रहे पत्नी तक सीमित रहता है यदि

स्वयं अपने लिए वह पति बन जाए तो प्रभु को प्राप्त हो जाए। जैसे माता का पुत्र है वह माता के लिए ही पुत्र है परन्तु यदि अपने लिए पुत्र बन जाए और प्रभु को अपना स्वामी और पिता स्वीकार कर ले तो उसका मोक्ष हो जाएगा। हे देवी! पुत्री जो होती है वह पिता तक सीमित रहती है परन्तु यदि वह स्वयं अपने लिए पुत्री बन जाए तो मेरे प्यारे! उसका कल्याण हो जाएगा।

प्रत्येक कर्म स्वयं के लिए

मुनिवरो! देखो, जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप कर रहा है वह अपनी आत्म तृप्ति के लिए कर रहा है, वित्त है, वह आत्मा के लिए कर रहा है। तेजोमयी है, वह अपनी आत्मा के लिए कर रहा है। एक विज्ञानवेत्ता बनता है परन्तु देखो, प्रेरणा आती रहती है, प्रकृति के गर्भ में प्रवेश होता रहता है। परन्तु वह भी अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए कर रहा है। हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए कि यह जो मधु विद्या है इसका हमारे यहाँ, वैदिक साहित्य में बड़ा विस्तार से वर्णन आया है। आज तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए कि जिस समय तुम्हारा मेरे से, बाल्यकाल में शास्त्रार्थ हुआ था आत्मा और परमात्मा के ऊपर तो मानो देखो, तुमने नाना ऋषि मुनियों को परास्त किया, परन्तु देखो, जब तुम्हारा और मेरा शास्त्रार्थ हुआ तो उस समय तुमने आत्मा की चर्चा की, परमात्मा की चर्चा की और जिस समय मैंने यह कहा था कि मेरे गृह में कात्यायनी है तो उस समय तुमने यह कहा था कि मैं मानो अपने लिए तपस्विनी बनना चाहती हूँ, मैं तप के लिए आपको गृहण करना चाहती हूँ। हे देवी! तुम्हारे वे उद्गार कहाँ चले गये, तुम्हें यह अज्ञान कहाँ से आ गया है? तुम्हें ये अज्ञान व्यापना नहीं चाहिए था, क्योंकि देखो, हमारे यहाँ वेद का मन्त्र कहता है श्रवणं ब्रहे विरां भ्रह्रे देवाः मानो जो भी कर्म करता है वह अपने लिए होगा, वह अपने लिए, ही कर रहा है। अपने लिए ही मानो देखो, कर्म की धाराओं को जन्म दे रहा है। हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि यह संसार मानो देखो, परम्परागतों से गतिवान हो रहा है। देखो, इसमें इसी प्रकार, अपनी अपनी आभाओं में सदैव निहित रहा है। ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने वाले भी ऋषि-मुनि रहे है जिन्होंने बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी है। परन्तु आज मैं उन उड़ान वेत्ताओं के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं करना चाहता। तुम्हें यह वर्णन कराना चाहता हूँ कि संसार में जितना भी मानव कर्म करता है वह अपने लिए करता है। शुभ करता है, या अशुभ करता है दोनों प्रकार का कर्म मानो देखो, वह स्वतः अपने लिए करता है। उसके सम्बन्ध जितनी घनिष्ठता है वह भी उसके भोगतव्य वाला बन जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वाक्य प्रगट किया तो उस समय मैत्रेयी ने कहा प्रभु! आपने तो मेरे ज्ञान के चक्षु पुनः से प्रकाश में ला दिये है। हे प्रभु! आपको धन्य है, आपने मुझे अज्ञान से ज्ञान में पहुँचा दिया है। हे प्रभु! अमृतं ब्रह्मे प्रभु आप तप करने के लिए जाईये। मेरे प्यारे! देखो, न्यौदा में से मधु विद्या का जब ऋषि ने अध्ययन कराया तो मुनिवरो! देखो, मैत्रेयी मौन हो गयी और मैत्रेयी ने यही कहा-कि प्रभु! आप तपस्या करने के लिए जाईये। यह तो मेरा सौभाग्य है।

मेरे पुत्रो! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने दोनों पत्नियों को कहा-कि हे दिव्या! मैं तुम्हारे द्रव्य का बटवारा किए देता हूँ, उन्होंने कहा-कि प्रभु! आप तप करने के लिए जाईये। हम स्वयं अपने द्रव्य का बटवारा कर पायेंगे, न कर पायेंगे, यह तपस्या का एक चरण है। क्या हम तपस्या नहीं कर सकते? मेरे प्यारे! देखो, दोनों ने एक स्वर में जब यह कहा तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मौन हो गये और वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, भयंकर वनों में जा पहुँचे और भयंकर वनों में जा करके विचार-विनिमय करने लगे। वेदां तपं ब्रह्मा विश्वं ब्रह्मा देवो तपाः वेद का आचार्य बेटा! शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके वेद मन्त्रों का अध्ययन करके यह

विचारने लगा कि यह तप क्या है? मैंने यह अध्ययन तो कर लिया है कि तप करना चाहिए और तप ही अमृत है मानो वहीं अमृत, वहीं वृत्ता है अब मुझे विचारना चाहिए कि तप है क्या? तप कैसे उत्पन्न होगा।

अन्न से तप

मेरे प्यारे! ऋषि ने वेद मन्त्रों का अध्ययन करना प्रारम्भ किया। तो वेद में एक मन्त्र आ गया अन्नं ब्रह्मा अन्नं रुद्रो भागा तपं ब्रह्मे मनाः वेद के आचार्य ने बेटा! यह विचारा कि अन्न को पवित्र बनाना है। अन्न के पवित्र होने पर मन पवित्र है और मन के पवित्र होने पर मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है। तो मुनिवरो! देखो, अन्न के ऊपर विचार-विनिमय करने लगे तो ऋषि ने बेटा! उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं होता। मानो उस अन्न को शिलस्थ अन्न कहा जाता है, उस शिलस्थ अन्न को उन्होंने एकत्रित करना प्रारम्भ लिया। मेरे पुत्रो! देखो, उस अन्न को एकत्रित किया और उस अन्न का पान करते थे और तपस्या करते थे लेखनियाँ बद्ध करते रहते थे।

ब्राह्मण

तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि उन्होंने बारह वर्ष तक इस प्रकार का तप किया और बारह वर्ष के तप करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, उनका मन पवित्र हो गया। इन्द्रियाँ पवित्र हो गयी क्योंकि देखो, वेदं ब्रह्मे देखो, मन ही तो इन्द्रियों का स्वामित्व करने वाला है। मेरे प्यारे! जब मन पवित्र होता है तो इन्द्रियाँ पवित्र हो जाती है इन्द्रियों के पवित्र होने पर बेटा! क्रियाकलाप पवित्र हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, मुझे तो ऐसा स्मरण आ रहा है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! देखो, बारह वर्ष तक तप करने के पश्चात् एक पोथी का निर्माण किया, जिसका नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। मुनिवरो! देखो, शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया और उस पोथी में सबसे प्रथम बेटा! उन्होंने एक लोकोक्ति प्रगट की। उन्होंने बेटा! देखो, उसमें एक प्रश्न किया- उन्होंने कहा ब्रह्मचारी कौन है? मेरे प्यारे! द्वितीय प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी ब्रह्मणां ब्रहे वेदाः कृति लोकाः उन्होंने सबसे प्रथम कहा-ब्राह्मण कौन है? ब्रह्मचारी कौन है? और ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? उन्हीं तीन शब्दों की व्याख्या करने लगा, ऋषिवर। मेरे प्यारे! देखो, ब्राह्मण वह, जो एक-एक, कण कण में ब्रह्म को स्वीकार करता है, ब्रह्म को अपने में और अपने को जो ब्रह्म में स्वीकार करता है उससे निश्चित हो गया है बेटा! वह ब्राह्मण कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मचरिष्यामि मेरे प्यारे! देखो, जो ब्रह्म को जानने वाला है वह एक-एक श्वास को बेटा! देखो, ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है जैसे नाना मनके है और वह धागे में पिरोने से, सूत्र में पिरोने से बेटा! देखो, एक माला बन जाती है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, जो प्रत्येक श्वास को, ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने इन तीन ही शब्दों की ब्रह्मचारी और ब्रह्म वर्चो ब्रह्मणो मानो देखो, वह ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? वह ब्रह्मचारी ही, ब्रह्म की चरी को चरने वाला है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार देता हुआ विचार यह प्रारम्भ हो रहा था कि बेटा! देखो, तपस्या की चर्चा चल रही थी। मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी, जो ब्रह्म में अपनी चरी को परिणत कर देता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्राह्मणा ब्रहे व्रताम् वह ब्राह्मण है जो ब्रह्म को एक-एक कण-कण में स्वीकार करता है। कोई स्थली ऐसी नहीं, जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हो। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार ऋषि ने जब यह वर्णन किया; तो एक पोथी का निर्माण किया जिसको शतपथ नाम की पोथी कहा जाता है। जिसमें उन्होंने नाना प्रकार के यागों का वर्णन किया है और तप की महिमा का वर्णन किया है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विशेष विवेचना न देता हुआ, आज केवल यह कि हम ब्रह्म को जाने, ब्रह्मचरिष्यामि देखो, ब्रह्मचारी अपने परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बना करके बेटा! देवता बनते है। उन्हीं परमाणुओं की ध्रुवा गति होने से वह पितर यागी बनते है। मेरे प्यारे! देखो, उन्हीं परमाणुओं की गति बनाने से पाण्डित्व बन जाते है, ब्राह्मणत्व बनते है। जो ब्रह्म को एक-एक, कण-कण में और अपने को ब्रह्म में स्वीकार कर लेते है।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! बारह वर्ष तक, अखण्ड तपस्यां ब्रह्मणे वह तपस्या प्राप्त करते हुए, अपने में महान और मृत्यु के मूल को जानने लगे। उन्होंने यह जाना कि मृत्युं ब्रह्मे व्रताम् मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती संसार में, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी लेखनियों में यह बद्ध किया है कि मृत्यु कोई शब्द नहीं होता। यह अंधकार है, अज्ञान है अश्वत है। मानो देखो, जहाँ ज्ञान है, प्रकाश है, आत्म ज्ञान है, मानो देखो, वही परमात्मा का राष्ट्र कहा जाता है। तो हम परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र कहता है वसुन्धरं ब्रह्मा हे वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है, अपने में हमें धारण करने वाली हैं, तू वसुन्धरा कहलाती है। हम तेरे में ही वस रहे है मानो देखो, वेद का एक-एक मन्त्र, तेरी महिमा का गान गा रहा है, तेरे गुणों का वर्णन कर रहा है, तेरी प्रतिभा में रत हो रहा है। जिससे मुनिवरो! देखो, मानव उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

शतपथ पोथी

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। आज हम कोई व्याख्या नहीं देने आये है, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आये है कि मानव को तपस्वी बनना चाहिए। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से तपस्या करने के पश्चात्, शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी को ले करके उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! बारह वर्ष के तप करने के पश्चात् अपने विद्यालय में पहुँचे, ब्रह्मचारियों ने बेटा। हर्ष ध्वनि की और आचार्य के चरणों को स्पर्श किया, ब्रह्मवेत्ता के चरणों में विद्यमान हो गये। ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! आप बारह वर्षों में क्या वस्तु ले करके आये हैं विद्यालय में, उन्होंने कहा-यह शतपथ नाम की एक पोथी है इसका अध्ययन करो। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने जब इसका अध्ययन प्रारम्भ किया, ब्रह्मचारी अपने में मानो देखो, अपने में अपना दर्शन करने के लिए तत्पर हो गये। और आचार्य से कहा-धन्य है, प्रभु, आपने तपस्या करने के पश्चात्, हमारे मानवीय जीवन को मानो उद्धृत बनाने का प्रयास किया है। हे प्रभु! आपको धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि तपस्या वह है जो मानव मृत्यु से विजय हो जाए, मृत्यु से उपरामता को प्राप्त हो जाए। यह चर्चा तो बेटा! हम कल ही प्रगट करेंगे।

आराधना

आज का वाक्य हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाए जिससे बेटा! हमारा मानवीय जीवन ऊँचा बन जाए, और हम उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार करते हुए, अपने को उसी में रत करते रहे, उसी में अपने को दृष्टिपात करते रहे। ऐसा बेटा! आज का हमारा यह वाक्य हमें उस मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है।

आओ मेरे प्यारे! आज का वेद मन्त्र कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते रहे, उसके वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के जो पर्यायवाची शब्द है, उसका विशुद्ध रूप, अपने समीप लाते रहे, यह है बेटा! आज का वाक्य, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का

अभिप्राय यह कि हे माता! हे वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। तेरे ही गर्भस्थल में हम सब विद्यमान है जब तेरे गर्भ में प्रवेश कर जाते है तो वहाँ न आलस्य है, न प्रमाद है मानो न रात्रि है, वहाँ सदैव प्रकाश रहता और प्रकाश में ही मुनिवरो! देखो, वसुन्धरा की गोद में विद्यमान रहता है। यह है बेटा! आज का वाक्य अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा, आज का वाक्य समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं बृ वरूणा आ पा रथम्। ओ३म् शानुगृहितां रेव सरं सरौ वरूणाहं आ पा यौ सर्वम्। ओ३म् रथश्चमा दिव्यां म ना रेवं आ पाः। ओ३म् अग्नं ऋषि वायाः अग्नं दिव्यां म नाः। अच्छा भगवन् आज्ञा, आनन्द शान्ति 2/9/1988 लारेन्स रोड, दिल्ली।

६ देवासुर संग्राम का स्वरूप 03 09 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्त और आनन्दं ब्रह्वे सम्भवो मानो वह आनन्दमयी है, स्रोतमयी है और वे इस प्रकृति के एक-एक कण-कण में व्याप्त है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की, प्रायः महिमा का गुणगान गाते रहते है क्योंकि वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित कहा है। जो पराविद्या के देने वाला है। मानो जो परम ब्रह्मे व्रणोः जो परम है, आनन्दवत् और जिसकी महिमा मानो प्रकृति का एक-एक, कण-कण, उसकी गाथा कह रहा है। मेरे पुत्रों! उस परमपिता परमात्मा को हमारे यहाँ यज्ञोमयी माना है और यह कहा है कि यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है यह उस परमपिता परमात्मा की निर्माणित की हुई यज्ञशाला है। जिसमें बेटा! देखो, ये पंच महाभूत अपने में क्रीड़ा कर रहे है और यह संसार रूपी यज्ञशाला अपने में क्रियात्मकता में परिणत हो रही है।

प्रेरणा का स्रोत

तो आओ मेरे पुत्रों! वेद का मन्त्र, हमें भिन्न-भिनन प्रकार की प्रेरणा दे रहा है क्योंकि यहाँ संसार में प्रत्येक मानव, एक प्रेरणा का स्रोत माना गया है, प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है, प्रेरित होता रहता है। और अपने में मानो देखो, अपनेपन का भान करने लगता है तो बेटा! यहाँ वेद मन्त्र नाना प्रकार की विवेचना दे रहा है। आज का हमारा वेद मन्त्र माता वसुन्धरा की महिमा का गुणगान गा रहा है जहाँ माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहा है, वहाँ वह परमपिता परमात्मा ब्रह्माण्ड का नेतृत्व करने वाला है। जहाँ वह ब्रह्माण्ड का नेतृत्व करने वाला है वहीं वह परमपिता परमात्मा मेरे प्यारे! वह आनन्दमयी स्रोत, पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों को सुगठित करने वाला है। क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों की बड़ी एक विचित्र देन रही है, उनके विचार विनिमय करने वालो ने विचारवेत्ताओं ने पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया है और यह कहा है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वहीं पिण्ड में है। पिण्डे ब्रह्माण्डे वरणासुताः मानो पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों की ही कल्पना करता रहा है। हमारे यहाँ बेटा! ऋषि-मुनियों का वो समाज, स्मरण आता रहता है जहाँ ऋषि-मुनि, विज्ञान के युग में प्रवेश करते हुए मानो उन्होंने विज्ञान को देखो, इस आत्मतत्व से कटिबद्ध किया। और आत्मा का जो समन्वय है वह उस परमपिता-परमात्मा के मौलिक रूप में विद्यमान रहता है। तो मुनिवरो! देखो, आज इसीलिए कहा जाता है कि पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों का अपना समन्वय रहता है। और जब दोनों का एक सूत्र, में ही समन्वय हो जाता है तो मानव बेटा! अपने में विचित्र बन जाता है।

संसार रूपी यज्ञशाला

आओ मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, मानव अपनी विचित्र उड़ाने उड़ता रहा है। वेद के आचार्यो ने कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है। बेटा! उस यज्ञशाला में परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा नियुक्त होते है। आत्मा यजमान बनता है और यह जो पंच महाभूत है बेटा! ये होता बन करके, यह संसार रूपी एक याग चल रहा है। यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में बेटा! हमें दृष्टिपात आ रहा है। यहाँ पंच महाभूतों में रत रहने वाला, यह संसार मानो ये ब्रह्माण्ड एक माला के सदृश्य माना गया है। जैसे माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके होते है और मानो देखो, वे

सूत्र में पिरोये जाते है तो वह माला बन जाती है। इसी प्रकार बेटा! यह माला के सदृश्य, यह माला रूप में विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में भी जब शिशु विद्यमान होता है तो मानो सूत्रों में माला को ही धारण कराया जाता है और वह सूत्रित हो करके बेटा! एक शरीर के रूप में रचित हो जाता है। तो इसी प्रकार, यह जो ब्रह्माण्ड है, प्रकृति है मानो देखो, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ पंच महाभूत अपना क्रियाकलाप कर रहे है।

तो आओ मेरे प्यारे! यहाँ पिण्ड और ब्रह्माण्ड को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया। और एक सूत्र में ला करके बेटा! उसे सूत्रित कर दिया है, पिण्ड के रूप में परिणत हो गया है, तो इसीलिए यह ब्रह्माण्ड एक पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आता है। मानव शरीर भी पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आता है। मेरे पुत्रो! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हुए बेटा! मैं आज तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, माताएँ अपने जीवन को महान बनाने के लिए तत्पर रही है। माता जब तपस्विनी होती है तो उसके गर्भ से महान तपस्वी ब्रह्मचारियों का जन्म होता है।

तपस्वी माता

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, महाराजा कंस के कारागार में माता अपने में तपस्विनी बनी हुई है। गायत्री छन्दों का पठन-पाठन कर रही है और मानो देखो, देवकी के गर्भ से ही भगवान कृष्ण का जन्म होता है। जब वह जन्म हुआ तो मेरे पुत्रो! देखो, संसार अपने में वृत्तियों में रत हो गया। मेरे पुत्रो! देखो, उनके जीवन में एक महानता की प्रतिभा रही है। मुनिवरो! देखो, जब वह जन्म लेता है तब ही उसकी महानता का जन्म होता है। उसके साथ-साथ जब महानता का जन्म होता है तो मुनिवरो! देखो, राजा कंस के, जो उस कारागार में प्रहरी थे, वे भी निंद्रा को प्राप्त हो गये। मेरे पुत्रो! देखो, वह द्वितीय द्वारं ब्रह्मे द्वार को त्याग करके पिता ने द्वितीय स्थान पर उसे अवृत्त कराया।

तो विचार विनिमय क्या, बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना नहीं दूंगा, केवल विचार यह कि जिस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तमयी महानता जिनके ऊपर होती है बेटा! कारागार भी उसको मृत्युदण्ड नहीं दे सकता। मानो कारागार में भी वह जीवन को ले करके ही आता है। तो इसलिए हे माता! तू तपस्विनी बन। और जब तेरे तपस्यामयी पुत्र का जन्म होता है तो माता तेरा जीवन एक सौभाग्यशाली बन जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, माता का जीवन सौभाग्यशाली बन गया। मानो कितना समय हो गया है भगवान कृष्ण के जीवन को, उनके जीवन की गाथाएँ, उनकी मनोनीत गाथाएँ बेटा! प्रत्येक प्राणियों के हृदयों में उद्गीत रूपों में गान गाती रहती है। और गान गाती ही रहेगी। क्योंकि जब भी कोई माता अपने गर्भ से तपस्वी को जन्म देती है, महानता वाले को जन्म देती है तो उस माता का जीवन धन्य हो जाता है। तो हे माता! तू तपस्वी बन करके, तेरे जीवन में तपस्या के प्रकाश-अंकुरों के अंकुरित हो करके, तू महानता को जन्म देती रहे। तो मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में भी कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया, विचार केवल यही देने के लिए आया हूँ कि मानव को पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पना करनी चाहिए। क्या, पिण्डे सो ब्रह्माण्डे और ब्रह्माण्डे सो पिण्डे। मेरे पुत्रो! देखो, प्रभु ने यह जगत रचा है एक दूसरे में मानो देखो, यह जगत ओत-प्रोत हो रहा है।

देवासुर संग्राम

आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें कुछ वैदिक साहित्य में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! कल इससे पूर्व

काल हमने सम्पन्न किया था और वह सम्पन्न यह, मुनिवरो! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बारह वर्ष के तप करने के पश्चात् एक पोथी का निर्माण किया। जिस पोथी का नाम शतपथ ब्रह्मण कहा जाता है। उस शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी में बेटा! एक लोकोक्ति उन्होंने प्रगट की और वह लोकोक्ति क्या थी? मैं उस गाथा को तुम्हें वर्णन कराना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! मुझे वह स्मरण है जो उन्होंने लोकोक्तियाँ प्रगट की है। उन्होंने कहा है कि एक समय देवासुर संग्राम हो रहा था। देवासुर संग्राम बेटा! परम्परागतों से ही इस पृथ्वी तल पर भी होता रहा है और मानव के जीवन में भी मानो देवासुर संग्राम होता रहता है। देवासुर संग्राम का अभिप्रायः यह है कि कहीं देव प्रवृत्ति है, तो कहीं असुर प्रवृत्ति बलवती हो जाती है। जब देव प्रवृत्ति बलवती होती है तो यह संसार मानो देवत्व बन जाता है और जब असुर प्रवृति हो जाती है तो यह संसार असुर प्रवृत्ति वाला बन जाता है तो मुनिवरो! देखो, ऐसा मुझे स्मरण है जब उन्होंने यह लेखनियाँ बद्ध की तो उन्होंने एक लोकोक्ति देते हुए कहा कि एक समय देवासुर संग्राम होता रहा। तो मुनिवरो! देखो, सहस्रो वर्षो तक, देवासुर संग्राम होता रहा।

ध्वनि

तो मुनिवरो! देखो, एक समय देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया जब देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया तो देवता आनन्दवत होने लगे। देवताओं की देखो, एक आनन्दवत स्वर ध्वनियाँ होने लगी। तो कहते है कि वहाँ मुनिवरो! एक ध्वनि का जन्म हुआ। देवताओं की सभा में एक ध्वनि का जन्म हुआ। उस ध्वनि को बेटा! देखो, देवताओं ने अपने एक वृख को उसे प्रदान कर दिया। मेरे पुत्रो! देखो, वृख में वह ध्वनि प्रवेश कर गई। जब प्रवेश कर गई तो बेटा! देखो, वह वृख ब्रह्मा, अब जो इस वृख के सम्पर्क में आता, वही देवता बनने लगा। बेटा! जब यह देवताओं का, संसार बनने लगा तो दैत्यों को यह प्रतीत हुआ कि जब देवता बलवती हो जाऐंगे तो हम दैत्यों का क्या बनेगा? बेटा! उन्होंने देखो, शुभ, निशुम्भ, रक्तबीज ये तीनों दैत्य अपने स्थान से गमन करते है और भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, यह अप्रतम् विरोचन के द्वार पर पहुँचे। महाराजा विरोचन ने कहा तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! देवताओं की सभा में एक वृख का जन्म हुआ है और वह जो वृख है उसके मुखारबिन्दु से एक ध्वनि उत्पन्न होती है और जो भी उस ध्वनि की श्रवण करता है वही देवताओं का बन जाता है, तो प्रभु! यह संसार देवताओं का बन रहा है। हम दैत्यों का क्या बनेगा?

मेरे पुत्रो! ऐसा मुझे स्मरण है, जो लेखनियाँ बद्ध आई है कि मुनिवरो! देखो, शुम्भ-निशुम्भ इत्यादि सब दैत्यों का एक समाज एकत्रित हुआ और महाराजा विरोचन से जब यह प्रश्न किया गया तो महाराजा विरोचन ने कहा इस वृख को छलो। तो मेरे पुत्रो! देखो, शुम्भ-निशुम्भ, रक्तबीज इन तीनों दैत्यों ने उनको छलने का कर्म बनाया। बेटा! जब उसको छलने के लिए मानो छलित किया गया। तो छलने से पूर्व ही उसे यह ज्ञान हो गया था कि आज तू दैत्यों के द्वारा छला जायेगा। उसने बेटा! उस ध्वनि को, देवताओं की धरोहर को, रेणुका को समर्पित कर दिया और वह रेणुका में समाहित हो गई। जब वृख को छला गया तो बेटा! वृख छलने के पश्चात् उसका मन्थन किया गया तो उसमें वह ध्वनि नहीं थी, जिससे यह संसार देवताओं का बन रहा था। उन्होंने कहा-वह ध्वनि कहाँ गई? तो विरोचन जी ने कहा वह तो रेणुका में समाहित हो गई है।

अब मुनिवरो! देखो, रेणुका को छलने का उन्होंने कर्म बनाया। अगले दिवस जैसे ही उन्होंने रेणुका को छलना चाहा, तो रेणुका को यह ज्ञान हो गया था कि तू आज दैत्यों के द्वारा छली जाएगी। उन्होंने बेटा! उस ध्वनि को, देवताओं की धरोहर को, उस ध्वनि को बेटा! यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया। अब मेरे पुत्रो! वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में समाहित हो गई और दैत्यो ने बेटा! रेणुका को छला। अब रेणुका क जब मन्थन

किया गया तो रेणुका में भी बेटा! वह ध्वनि नहीं रही। उन्होंने कहा-वह ध्वनि कहाँ गई? वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में समाहित हो गई है। हे दैत्यो! तुम उसे निकाल नहीं सकोगे।

देवासुर संग्राम का अभिप्रायः

तो मेरे पुत्रो! जब उन्होंने ऐसा कहा तो विचार आता है ये रेणुका कौन है? यह वृषभ कौन है? मेरे पुत्रो! देखो, मानव जब योगाभ्यास में, साधना में प्रवेश होता है तो देवासुर संग्राम होता है। देव प्रवृत्ति और असुर प्रवृत्ति दोनों का जन्म हो जाता है। तो मानो देखो, दैत्य बलवती होते है तो देवताओं को कहीं विजय कर लेते है, कहीं देवता बलवती होते है तो दैत्यो को विजय कर लेते है। तो बेटा! देखो, देवता जब आनन्दित हो गये तो उनके यहाँ एक ध्वनि का जन्म हुआ, जिसको हमारे यहाँ धर्म ध्वनि कहते है। वह धर्म ध्वनि बेटा! देखो, मन के द्वारा प्रकाशित होती है। इस मन को हमारे यहाँ, वैदिक साहित्य में बेटा! वृषभ कहते है, वृख भी कहते है परन्तु वैदिक साहित्य में परमपिता परमात्मा का नाम भी वृषभ है और मुनिवरो! गऊ के बछड़े का नाम भी वह वृषभ, वृख कहा जाता है। सूर्य का नाम भी वृख है।

धर्म ध्वनि

मुनिवरो! देखो, यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप में वृख की विवेचना, प्रकरण के आधार पर मुनिवरो! देखो, मन को वृषभ माना है, वृख माना है वृषप्रह्वा वृखो सम्भवाः जब यह स्वीकार कर लिया, तो बेटा, देखो, जब इसके द्वार से, मन के सम्पर्क में आता है तो वह इतना पवित्र बन गया कि वही देवता बनने लगा। बेटा! देव, धर्म ध्वनि मानो देवताओं की जो धरोहर थी, उसका नाम धर्म था। वह धर्म ध्वनि कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो, जो भी सम्पर्क में आता, जब देवता बनने लगा, देवत्व को प्राप्त होने लगा तो मेरे प्यारे! कुछ ऐसा लोकोक्ति कहती है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की, कि मुनिवरो! देखो, देवता बनने लगे तो उस समय शुम्भ, निशुम्भ रक्तबीज जो ये दैत्य है इनका एक समाज एकत्रित हुआ। क्योंकि रक्त बीज में यह सत्ता होती है कि वह तृष्णा के रूप में विद्यमान रहती है, यह मन को अपवित्र बना देता है। क्योंकि जो रक्त बीज कहलाया गया तो यह मुनिवरो! देखो, काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि इन्हीं से दैत्य इत्यादि बन जाते है यह सब दैत्य कहलाते है।

बुद्धि के प्रकार

तो मुनिवरो! देखो, जब मन को छला गया तो वह ध्वनि बेटा! रेणुका में समाहित हो गई और जब धर्म ध्वनि को स्वीकार न कर पाया तो उन्होंने कहा-वह तो रेणुका में समाहित हो गई। बेटा! मन छला गया, मन अपनी आभा में रत हो गया। अब रेणुका नाम बेटा! हमारे यहाँ बुद्धि को कहा गया है। बुद्धि के चार प्रकार कहलाये जाते है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी कहलाती है। परन्तु यहाँ पांचवी बुद्धि का नाम रेणुका है। रेणुका उसे कहते है जो अपने में मानो ज्ञान को संचित करके समाहित कर लेती है। तो मेरे पुत्रो! देखो, रेणुका में समाहित हो गया। अब रेणुका को इन्होंने छला तो क्योंकि बुद्धि जहाँ शुद्ध विचारती है, वहाँ अशुद्ध भी विचार लेती है, तो वह वहाँ पतित हो जाती है। जैसे मन शुद्ध संकल्प और अशुद्ध संकल्प दोनों में छला जाता है, इसी प्रकार रेणुका भी छली जाती है। अब जब रेणुका छली गई, तो उन्होंने देवताओं की धरोहर को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया और मुनिवरो! देखो, यज्ञ के दस पात्र क्या है? इसके ऊपर विचार-विनिमय करना है।

यज्ञ के दस पात्र

वैदिक साहित्य में बहुत से पर्यायवाची आते है परन्तु देखो, इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने कहा कि पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों एक सूत्र में रहते है। दोनों के ऊपर हमारे यहाँ कल्पना की जाती है। मेरे प्यारे! यज्ञ के दस

पात्र क्या है? मुनिवरो! देखो, जब परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने जब इस मानव शरीर का सृजन किया तो मेरे पुत्रो! देखो, मानव शरीर एक यज्ञशाला के रूप में परिणत हुआ, और यज्ञशाला के दस पात्रों का निर्माण किया मुनिवरो! देखो, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती है। यह यज्ञ के दस पात्र कहलाते है। जब धर्म इनमें समाहित हो जाता है तो दैत्यराज मानो देखो, इसका छेदन नहीं कर सकते, दैत्यराज इनमें से धर्म ध्वनि को नहीं निकास सकते। यज्ञ एक ऐसा शुभ कर्म है, ऐसा शुद्ध क्रियाकलाप है, यह देवताओं का भोज कहलाता है। यह देवताओं की धरोहर कहलाता है इसको केवल देवता पान करते रहते है।

तो मेरे पुत्रो! विचार आता रहता है जब मैं बेटा! इस लोकोक्ति में प्रवेश करता हूँ तो प्रायः सृष्टि के पिता ने इस मानव शरीर की रचना की और यह मानव शरीर इतना भव्यतव कहलाता है, इतना महानतव कहलाता है। इसके ऊपर बेटा! नाना प्रकार की उड़ाने और कल्पना की जाती है आज मैं उस कल्पना में न जाता हुआ, उस काल्पनिक क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहता हूँ। विचार केवल यह कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ है जिनमें बेटा! धर्म समाहित रहता है। कर्तव्य का नाम ही बेटा! धर्म कहलाता है। और जब प्रत्येक इन्द्रिय अपने-अपने कर्तव्य में रत हो जाती है तो मेरे प्यारे! देखो, वहीं मानव योगी बन जाता है और यौगिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। जैसे नेत्रो का धर्म दृष्टिपात करना है। सुदृष्टिपात करना है, कुदृष्टिपात करना नही। मुनिवरो! जब तक सुदृष्टिपात करता है, वह पूज्य बना रहता है मानो देखो, सुगन्ध लेता रहता है। तो सुगन्ध पान करता हुआ, सुगन्धित रहता है यदि वह देखो, श्रोत्रों से अच्छे शब्दों को ग्रहण करता है, सु-ग्रहण करता रहता है तो मानो ये उसका कर्तव्य है। सु को पान करना कर्तव्य है, अशुद्धता को त्यागना है।

चौबीस स्तम्भ

मेरे पुत्रो! देखो, वह यज्ञ के दस पात्र कहलाते है। ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ मुनिवरो! देखो, इसके ऊपर बहुत ऊँची कल्पना की और यह कहा ऋषि-मुनियों ने कि मुनिवरो! देखो, चौबीस स्तम्भ कहलाते है इस गृह के, यह जो ब्रह्माण्ड है, मानव का शरीर इसके चौबीस स्तम्भ कहलाते है। मेरे प्यारे! देखो, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, दस प्राण, मन, बुद्धि, चित और अहंकार यह बेटा! देखो, चौबीस स्तम्भ कहलाते है।

तो आज मैं बेटा! तुम्हें यौगिकता में ले जाना नहीं चाहता हूँ, यौगिक क्षेत्रों में नहीं, केवल यह कि मुनिवरो! देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पना की, जैसे चौबीस स्तम्भ है इस मानव शरीर के है ऐसे ही इस ब्रह्माण्ड के भी चौबीस स्तम्भ कहलाते है। यह चौबीस तत्त्वों का ब्रह्माण्ड है। इसमें बेटा! दस प्राण है, पंच तन्मात्रा कहलाती है, सूक्ष्म महाभूतों की और मनस्तव और प्राणस्तव मेरे प्यारे! देखो, यह वृत्तियाँ कहलाती है। मानो देखो, यह चौबीस स्तम्भ कहलाए। तो यह ब्रह्माण्ड को स्थिर करने वाले, पिण्ड को स्थिर करने वाले है। मेरे प्यारे! जब मैं इस क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ और इनको एकाग्र करने का प्रयास किया जाता है, तो मेरे प्यारे! यह विज्ञान हमारे समीप आ जाता है। यह जो जितना भौतिक विज्ञान है यह हमारे समीप आ जाता है। यह जो जितना भौतिक विज्ञान है, आध्यात्मिक विज्ञान है दोनों का समन्वय हो करके मानवीयतव, पवित्रत्व को प्राप्त होता रहता है।

देवताओं की धरोहर

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं यह उच्चारण करने जा रहा था कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी में सबसे प्रथम जो लोकोक्ति प्रगट की वह यह थी कि अव्रतं रथं ब्रहे क्या मानो देखो, देवताओं की धरोहर क्या है? बेटा! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियों में समाहित हो गई। विरोचन ने यह कहा दैत्यों से कि अब तुम निकास नहीं कर सकोंगे। मेरे प्यारे! देखो, वृख नाम सूर्य का

कहलाता है, जो नाना प्रकार की किरणों के द्वारा, इस पृथ्वी मंडल का शोधन करता है नाना पृथ्वियों को जो अपने में धारण कर रहा है, जैसे गऊ अपने बछड़े को धारण करती हुई, उसे वृख कहती है, वह चंचल है वह मानो अथर्वा है वह अपने में अपनेपन का भान कर रहा है बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा भी मानो देखो, अथर्वा कहलाता है, वह भी वृख कहलाता है। जो संसार को गति देने वाला है, प्रकाश में ही निर्माणित करने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, वही तो आभा में नृत करा रहा है।

आध्यात्मिक विज्ञान

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह वाक्य प्रगट कर रहा हूँ कि हम परमपिता परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड को चिन्तन में लाने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है ये लोकोक्तियँ अपने जीवन में महानता को प्राप्त होनी चाहिए। पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों को एक सूत्र होना चाहिए, मैंने ब्रह्माण्ड की बहुत सी चर्चाएँ तुम्हें प्रगट की है। नाना मालाएं तुम्हें धारण कराई है बेटा! उन मालाओं का समन्वय, मानवीय जीवन से विशेष रहता है। मैं जब विज्ञान के युग में प्रवेश करता हूँ, विज्ञान की आभा में रत होने लगते है तो बेटा! विज्ञान अपनी स्थली में बड़ा विचित्र विशुद्ध बन करके रहा है। जो भौतिक विज्ञान वेत्ता है वे मानो प्रकृति की उड़ाने उड़ते रहते हैं, अणु और परमाणु में रत रहते है और जो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है वह मनस्तव को स्थिर करते हुए ज्ञानेन्द्रियों में जो उपार्जन ज्ञान है उसे बुद्धि में निर्माणित करते हुए परमपिता परमात्मा की आभा में रत हो, करके बेटा! वह आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश कर जाते है। हमारे यहाँ दो प्रकार के विज्ञान की विवेचना परम्परागतों से ऋषि-मुनियों ने मानी है। बेटा! एक भौतिक विज्ञान, एक आध्यात्मिक विज्ञान है।

तो हमारे यहाँ परमपिता-परमात्मा को वृषभ के रूप में स्वीकार करना, पाँच ज्ञानेन्द्रियों को बेटा! देखो, एक यज्ञ के पात्र स्वीकार करना, यह सब आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है। इसमें भौतिकवाद की पुट लगी रहती है परन्तु यह अपनी आभा में बड़ा विचित्र और विशुद्धता में रमण करता रहा है। तो मुनिवरो! देखो, इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह वाक्य प्रगट करने के लिए, हम आये है, कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे और हम उस परमपिता परमात्मा मानो जो देवासुर संग्राम हो रहा है, उस देवासुर संग्राम को समाप्त करके अपने में साधक बन जाए और परमपिता परमात्मा का मान करने लगे, मानो देखो, यहाँ महापुरुषों का जन्म होता रहता है, महापुरुष अपनी अपनी आभा में परिणत रहे है, उन माताओं को चुनौती प्रदान की जाती है, जिन माताओं ने अपने गर्भ से तपस्वी बन करके, बाल्यों को जन्म दे करके उनके और मानवीयत्व को उन्होंने अमरावती को प्राप्त कराया।

रूपान्तरण

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह क्या, देवर्षि नारद मुनि की एक विवेचना बेटा! देखो, प्रायः आती रहती है जो राजा कंस के जीवन में बड़ी घटित रही है और राजा कंस यह नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जाए, परन्तु यह भी विचारा जाता है कि मृत्यु तो संसार में प्रायः, शरीर को त्यागना है। शरीर तो जाना है परन्तु देखो, आत्मा का ह्रस नहीं होता, आत्मा का विनाश नहीं होता, मृत्यु नहीं होती, शरीर की भी मृत्यु नहीं हुआ करती, परन्तु इसका रूपान्तर हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, नारद जी ने यही कहा था कि हे प्रभु! आपको भोजप्रहा उनके गर्भ से बाल्य का जन्म होगा। परन्तु उन्होंने देखोः सात रेखा उन्होंने निवृत्त कर दी। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा बन करके अपने में संयमी और मृत्यु से भय बना रहता है तो वह कोई राजा नहीं हुआ करता, वह राजा तो मृत्यु को प्राप्त हो ही गया। तो इसीलिए आज मैं विशेषता में न जाता हुआ, केवल यह कि

मृत्यु तो शरीर को त्यागना है और मृत्यु आती नहीं है क्योंकि जो प्रभु के राष्ट्र में गमन करता है, वह मृत्यु से पार हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह आज का विचार, मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल तुम्हें यह वाक्य प्रगट करने के लिए आया हूँ कि हम बेटा! देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड को एक सूत्र में लाने का प्रयास करे और सूत्रों की माला मानो सूत्रों में मनके पिरोकर के माला बनाये और माला को धारण करके अपने कण्ठ को सजातीय बनाए। तो मेरे पुत्रो! आज का विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाए, आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है मानो देखो, जिसका यह संसार आयतन है, गृह है, सदन है, वह इसी में वास कर रहा है इसीलिए बेटा! उस परमपिता परमात्मा की महती, उसकी अनन्तता और इस संसार रूपी यज्ञशाला को विचारने वाले बने, पिण्ड और ब्रह्माण्ड को एक सूत्र में लाने का प्रयास करें, और इस सागर से पार हो जाए, यह है बेटा! आज का वाक्य, अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। ओ३म् देवाः यं रथश्चमा गतं आभ्यां रूद्राः वायु रथाः। ओ३म् यौ सर्वा मां रथश्चाहं आ पा रेवं आभाः। ओ३म् यंचमा रथं आभ्यां ऋषि वा याः। ओ३म् तनुधन्नं वृताहं आ पा योगायन त्वामानं रथाः। अच्छा भगवन आज्ञा 3.9.1988 लारेन्स रोड, दिल्ली।

७ वेद की महिमा 06 09 1988

जीते रहो, देखो मुनिवरो, आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा कर रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद-वाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है, और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चेतन्य जगत, हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्मांड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। जब भी मानव उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने लगता है, तो उसी काल में उसकी महती और अनुपमता, उस मानव के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती है। मानो उसकी महती, इतनी अनन्तमयी है कि इस ब्रह्माण्ड की महती और अनन्तता जब मानव के समीप प्रारम्भ हो जाती है तो मानो एक ब्रह्माण्ड उस मानव के समीप आना प्रारम्भ हो जाता है।

तो इसलिए हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है हे मानव! तू उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार विनिमय कर; क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक मानो उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, अथवा उसकी जो सृष्टि है, रचना है, उसके ऊपर वह विचार-विनिमय करता रहा है। मानो कहीं विज्ञान के द्वारा, कहीं आध्यात्मिकवाद के द्वारा वह उस परमपिता परमात्मा की महती को जानना चाहता है। ये परम्परागतों से ही बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में अथवा हृदय में यह प्रेरित होता हुआ, उस परमपिता परमात्मा की महती में रत होना चाहता है।

वेद का ज्ञान

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है। प्रत्येक मानवों के अन्तर्हृदयों में यह विचार-विनिमय होता रहा है, कि हम उस परमपिता परमात्मा के वैदिक ज्ञान को जानने के लिए तत्पर रहे। परन्तु वेद में जो ज्ञान और विज्ञान है उसके ऊपर भी मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है। परन्तु किसी काल में जब वह महान बलवती हो जाता है तो मुनिवरो! देखो, बलवती हो करके, वह अग्नि के काण्डों में समाप्त हो जाता है। परन्तु वह न्यून बन जाता है। और किसी काल में जब अनुसन्धानवेत्ता, विशेषज्ञ विशेष हो जाते हैं तो वह पुनः बलवती होना प्रारम्भ हो जाता है। परन्तु इसी प्रकार ये परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है इसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से अन्वेषण कर रहा है परन्तु देखो, यह इतना अनन्तमयी है और मानव का जीवन बड़ा सीमित है परन्तु जहाँ इसकी सीमा होती है वहाँ तक जानता है। परन्तु उसके पश्चात् वह न्यून हो जाता है।

तपस्वी मानव को वेद ज्ञान

तो विचार आता रहता है कि परमात्मा की अनन्तता के ऊपर, विचार विनिमय करना, अणु और परमाणुओं में गतिवान होना मानो देखो, समाधिष्ट हो करके, अपने को वायुमण्डल के आश्रित कर देना मानो उसकी उड़ानें उड़ना, यह सर्वत्र एक मानवीयतव माना गया है परन्तु विचार आता रहता है कि हमारा वेद का मन्त्र क्या कहता है, वेद के मन्त्र में क्या-क्या प्रतिभा आती रहती है, इसके ऊपर भी मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए। मानव यह चाहता है कि मैं एक-एक वेद मन्त्र के रहस्यतम को जानने वाला बन जाऊँ, परन्तु वह जानता भी रहता है। परन्तु विचार पुनः यह आता है कि वेद के मन्त्रों को तो वह मानव जानता है, जो तपस्वी होता है। जो मानव देखो, प्राण को अनुदात्त में, अनुदात्त को प्राण में, प्राण को मन में और मन को मुनिवरो! देखो, अपने में परिणत करता हुआ,

मानो वह जब वेद के मर्म को जानता है।

वेद मन्त्र में तीन भाव

मैंने बहुत पुरातन काल में यह वर्णन करते हुए कहा था कि जब वेद का आश्रय आता है तो एक-एक वेद मन्त्र में मानो तीन प्रकार का भाव हमें प्रतीत होता है। वेद मन्त्र में जब मानो श्रद्धामयी ज्योति जागरूक हो जाती है तो मुनिवरो! देखो, वह तीन प्रकार के भाव में परिणत हो जाता है। सबसे प्रथम मानो देखो, अपने में श्रद्धा में परिणत होता है, उसके पश्चात मुनिवरो! देखो, श्रद्धा उसको कर्मकाण्ड की प्रतिभा बना लेता है और कर्म काण्ड के पश्चात् वह उसकी मानो देखो, उपासना करना प्रारम्भ करता है और उपासना के पश्चात उसके वैज्ञानिक तथ्यों में रत्त हो जाता है। तो मुनिवरो! देखो, एक ही वेद मन्त्र है, और वह तीन प्रकार की प्रतिभा का हमें वर्णन कर रहा है। परमात्मा की महती का वर्णन करा रहा है। आओ मुनिवरो! देखो, इस सम्बन्ध में आज तुम्हें कुछ ऋषि मुनियों के विचारों में ले जाना चाहते हैं।

ब्रह्माण्ड में सर्वत्र याग

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, कुछ ऋषि मुनि, उनके समीप पहुँचे जो, मानो देखो, एक सभा थी ऋषि-मुनियों की और महर्षि बटुक मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला वह समाज, जिसमें मुनिवरो! देखो, नाना ऋषिवर विद्यमान थे, महर्षि वैशम्पायन इत्यादि उद्दालक के गृह में पहुँचे, और महर्षि उद्दालक मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही अतिथि सत्कार करना, यह विचित्र माना गया है। उनके द्वारा कुछ कन्दमूल थे, अन्न इत्यादियों से उनका स्वागत किया और यथाशक्ति उन्हें स्थान प्रदान किया गया। वह विराजमान हो गये।

तो मेरे प्यारे! विराजमान हो करके ऋषि ने कहा-कहो भगवन! मुझे कुछ आज्ञा दीजिए; आज आपका आगमन, मेरे आसन पर क्यों हुआ है? क्योंकि यह वास्तव में मेरा सौभाग्य है, कोई भी बुद्धिमान, कोई भी महापुरुष, किसी के आसन पर बिना निमन्त्रण के उसका पदार्पण होता है तो यह उसका सौभाग्य बना रहता है। यह हमारा सौभाग्य है, तुम में कोई ब्रह्मवेत्ता है, कोई ब्रह्मनिष्ठ है कोई मानो देखो, उदगीत गाने वाला एक अव्यय-वृत्तियों में आनन्दवत् को ग्रहण करने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि अपने में शान्त हो गये और उन्होंने मुनिवरो! देखो, महर्षि वैशम्पायन से कहा कि महाराज! अपना वर्णन करो।

मेरे प्यारे! महर्षि वैशम्पायन बोले कि हे प्रभु! कुछ समय हुआ जब मैं राजा अश्वपति के यहाँ एक वृष्टि याग में पहुँचा था। तो जब मैं वृष्टि याग में पहुँचा तो उन्होंने मेरे से एक प्रश्न किया कि वेद का अर्थ केवल याग है, या याग से अन्य भी कुछ इसका मन्तव्य माना गया है। तो मानो देखो, भगवन् जब उन्होंने यह प्रश्न किया, तो हम यह जानते नहीं थे। हमारा ज्ञान अल्पज्ञ था। हम यह जानना चाहते हैं प्रभु! क्योंकि आप वेद के मन्त्रों के दृष्टा है और विज्ञान उसमें निहित रहता है। आप के द्वारा ज्ञान भी है तो भगवन्! हम यह प्रश्न करने के लिए आये हैं, जानने के लिए आये हैं जो उन्होंने मेरे से यह प्रश्न किया था कि महाराज! याग से अनन्य भी कुछ संसार में और भी कोई वस्तु है अथवा नहीं।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज ने कहा-हे ऋषि, मुनियों! तुम विराजमान हो जाओ। वे एक पंक्ति लगा करके विराजमान हो गये। उन्होंने कहा कि हे वैशम्पायन! तुम इसका उत्तर क्यों नहीं दे सके? क्योंकि याग से अनन्य कोई वस्तु संसार में है ही नहीं। जिस भी रूप में तुम दृष्टिपात करोगे वहीं तुम्हें याग

प्रतीत होने लगेगा। तो तुम कैसे वहाँ मौन हो गये। ऋषि के प्रश्नों का उत्तर तुम क्यों नहीं दे सके? मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा-प्रभु! हमारा याग के सम्बन्ध में मानो ज्ञान, अल्पज्ञ था और अल्पज्ञता के कारण मानो उन्हें उत्तर नहीं दे सके। उन्होंने कहा-तो विराजो, मैं तुम्हें उसका उत्तर दिये देता हूँ। वास्तव में संसार में तुम्हें यह तो ज्ञान है कि भौतिक विज्ञान से ले करके आध्यात्मिक विज्ञान तक मानो देखो, सर्वत्र ये यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। जितना भी मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड है आकाश और निहारिका से और अवन्तिका से ले करके मानो देखो, पृथ्वी ब्रह्माण्ड तक सर्वत्र एक प्रकार का एक-दूसरे में याग हो रहा है।

संसार यज्ञ रूप

याग का अभिप्रायः यह है कि एक-दूसरे में पिरोया हुआ, जगत है। एक-दूसरे में पिरोया हुआ होने से यह संसार एक यज्ञ रूप माना गया है। जैसे भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके है और मनके एक सूत्र में पिरोने से ही वह माला बन जाती है। जब वह माला बन जाती है तो उन्हीं सूत्र और देखो, धागे और सूत्र का समन्वय होने से ही वह माला बन जाती है और माला में एक सुमेरू होता है मानो देखो, वह अपने में बड़ा महत्वदायक है। इसी प्रकार ये जो संसार है यह नाना प्रकार के याग को ले करके, यह ब्रह्मसूत्र में जो पिरोया हुआ है, मानो, वैदिक मन्त्रों में जो पिरोया हुआ है और मन्त्र सूत्र में पिरोया हुआ है ब्रह्मसूत्र में पिरोने से मानो संसार एक माला के सदृश्य बन जाता है। जैसे मानो देखो, एक कुटुम्ब है, उस कुटुम्ब में माता है, पिता है, विधाता है, भौजाई है मानो देखो, सर्वत्रता में वह अपने में एक-दूसरे में पिरोये हुए है। माता पुत्र में पिरोई हुई है, पुत्र मानो देखो, माता में पिरोया हुआ है। पुत्री पिता में पिरोई हुई है। पिरोई हुई का अभिप्रायः यही कि एक-दूसरे से समन्वय रहता है। एक-दूसरे से समन्वय रहने से एक माला बनी रहती है। उस माला को हमें अपने में धारण करना है तो इसी प्रकार यह जो यज्ञमयी स्वरूप है यह मानो देखो, शब्द है, सुमेरू की भाँति है और यह भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में परिणत रहता है।

अश्वमेध याग

परन्तु देखो, पुत्रो ब्रह्मे जब माता-पिता की यह इच्छा होती हे कि हम पुत्र याग करेंगे, तो वहाँ भी मानो देखो, याग की इच्छा जागरूक हुई। जब मानव यह विचारता है कि हम परमाणु याग करेंगे तो वहाँ भी परमाणु, विज्ञान हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। जहाँ यह आता है कि हम देव पूजा करेंगे, तो देवताओ की पूजा का अभिप्रायः यह कि देवताओं का जो गुण है उसे अपने में धारयामी बनाना, अपने में धारण करना। धारण करने का नाम ही मानो देखो, वह याग कहलाया गया है। यागां ब्रह्मणां ब्रह्मे मानो देखो, उसको जानना ही हमारे लिए विशेषज्ञ माना गया है। वह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। परन्तु रहा यह कि वेद में तीन प्रकार का आश्रय माना गया है। एक मानव को देखो, वाजपेयी याग करना है, वाजपेयी याग करने वाला अपने में याज्ञिक बन करके वाचं ब्रह्मे व्रतम् मेरे प्यारे! वह पृथ्वी के गर्भ को जानने के याग में लगा हुआ है, वह वाजपेयी याग कर रहा है। एक मानव अजामेध याग करना चाहता है, वह अपने को अजा में परिणत करना चाहता है, तपस्या के द्वारा, किसी से अजय न होऊ, मानो देखो, मैं सदैव दूसरों को अपने में धारण करता चला जाऊँ। मैं अपनी नम्रता से दूसरों को नम्र करता चला जाऊँ, जिससे मैं अजामेध याग का अधिकारी बन जाऊँ। मानो देखो, एक अश्वमेध याग करना चाहता है, अश्वमेध याग वह कहलाता है जो राजा अपनी मेध, प्रजा को अपने वशीभूत करना चाहता है मानो देखो, शिक्षा दे करके, उन्हें उपदेश दे करके, दण्डित करता हुआ मुनिवरो! देखो, वह समाज को ऊँचा बनाता है, उस मेध को अपने आश्रित बना करके स्वयं मानो देखो, उनके ऊपर सुमेरू की भाँति, अपने में शासन करता हुआ,

स्वयं अपने में, अपने अन्तरात्मा में मानो देखो, शासक बन करके ही समाज पर शासन करने का अधिकार उसे होता है। तो मानो वह अश्वमेध याग कर रहा है।

उसका एक आध्यात्मिक स्वरूप है एक मानो देखो, भौतिक स्वरूप माना गया है। ये दोनों प्रकार के स्वरूपों में अश्वमेध याग कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, एक प्रजामयी बनना चाहता है। माता यह चाहती है कि मैं प्रजामयी बन जाऊँ मुनिवरो! पितर भी यह चाहता है, मैं प्रजामयी बन जाऊँ। बेटा! देखो, वह भी एक याग माना गया है। अप्रतं ब्रह्मे पुत्रो समं ब्रह्मा यागाः मेरे प्यारे! देखो, वह सर्वत्र एक याग रूप माना गया है।

मन्त्र विज्ञान की प्रतिभा

तो मुनिवरो! देखो, शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने अपना उपदेश, अपनी जानकारी देते हुए कहा कि महाराज! मैंने तो वेद के आश्रय को इतना जाना है कि मानो देखो, एक-एक वेद मन्त्र के ऊपर केवल वह पूजा की स्थली नहीं मानी गयी है, वह विज्ञान की प्रतिभा मानी गई है। एक मानव वेद मन्त्र को ले करके अपनी उड़ान उड़ रहा है, अपने में तपस्या कर रहा है। वाणी से मानसुक जाप कर रहा है। जाप करता हुआ उसकी प्रतिभा को अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश कर रहा है। परन्तु वही अन्तरात्मा का ज्ञान जब बाह्य जगत में आता है तो वह मानो देखो, बुद्धि के रूप में परिवर्तित हो जाता है और वह बुद्धि के रूप में परिवर्तित हो करके मानो वह मोहनी एक स्वरूप बन जाता है। उसे कहते हैं यह पाण्डितव बड़ा बुद्धिमान है मानो ये आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों में पारायण है यह अपनी अन्तरात्मा को जानता है, यह तपस्वी है। ऐसा मुनिवरो! देखो, उसके लिए विशेषण मानो कृतियों में परिणत करने लगते हैं।

पूजन का अभिप्राय

तो मेरे पुत्रो! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा देना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय यह है कि मुनिवरो! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने यह वर्णन करते हुए कहा हे ब्रह्मणं! हे वैशम्पायन! हे ऋषि मुनियो! तुम यह जान गये होंगे कि संसार में एक-एक शब्द भी एक याग है मानो देखो, एक याग हो रहा है। याग का अभिप्रायः यह है कि एक मानव अग्नि में प्रवेश करना चाहता है गृहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन कर रहा है। वही मानो देखो, वैश्वानर नाम की अग्नि का पूजन कर रहा है, वही मानो देखो, गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन कर रहा है वही मानो ब्रह्मा-अग्नि का पूजन कर रहा है। मुनिवरो! देखो, पूजन का अभिप्राय यह है कि जो अग्नि में गुण है, जो अग्नि हमें प्रेरणा देती है उसे धारण करना, उसे क्रिया में लाने का नाम ही मुनिवरो! देखो, उसकी पूजा कही जाती है। वेद मन्त्र यह कहता है कि पूजा का अभिप्राय उसको जानना है, और जान करके उसको क्रियात्मकता में लाना है।

अणु विद्या

मुनिवरो! देखो, एक मानव ने यह अध्ययन किया है कि एक अणवङ्गति ब्रह्मा व्रते देवाः मानो देखो, एक अणु का वर्णन आता रहता है वैदिक साहित्य में, और वह जो अणु है मानो देखो, जब उसका विभाजन किया जाता है तो उसी अणु में मुनिवरो! देखो, वृत्तियों का जन्म होता है। तरंगों का जन्म हो जाता है। उन तरंगों में मानो देखो, संसार की प्रत्येक वस्तु विद्यमान है। जब उस तरंग का भी विभाजन किया जाता है तो उसमें से मानो देखो, अणु विद्या का जन्म होता है। जब अणु विद्या का जन्म हो गया, जब उस अणु का विभाजन करते हैं तो बेटा! उसमें से मानो देखो, विशाल एक अणुवृत्तियों की शक्ति उत्पन्न होती है। बेटा! जिससे मानव सूर्य के सम्पर्क में प्रवेश करता हुआ, द्यौ के रूप में प्रवेश करता हुआ, उन परमाणुओं को मुनिवरो! देखो, एकत्रित करके यन्त्रों का निर्माण करने

लगता है। तो मानो देखो, यह क्या है, यह सर्वत्र एक प्रकार का, वेद के मन्त्रों का विचार है, जो वैज्ञानिक तथ्य है, इसमें जो मानो देखो, उपासना तथ्य माना गया है उसको हमें अपने में धारण करना है।

तो मुनिवरो! देखो, वेद के आश्रय को वह मानव जानता है जो मुनिवरो! देखो तपस्वी होता है। और कैसा तपस्वी कि उसके विचारों को कोई भी, एक स्थली से द्वितीय स्थली पर परिणत न कर दे, ऐसा वह तपस्वी कहलाता है। जैसे एक वेद के मन्त्रों को जानने वाला ऋषि, यह कहता है कि मैंने एक समय पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो करके, मानो पृथ्वी के गर्भ में एक अग्नि की तरंगों का प्रभाव गमन कर रहा था और वह तरंगें रूप में गमन कर रहा था और वही तरंगें बन करके मानो देखो, बाह्य जगत में, वही अग्नि के स्वरूप में मानो देखो, वह खनिज शक्ति बन गई और उसी खनिज शक्ति का जब वैज्ञानिकजन विभाजन करता है तो उससे यन्त्रों का निर्माण हो गया। तो मानो देखो, यह उनका तपश्चर है, वह तपस्या के रूप में अपने को ले जा करके पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करके, उन्होंने सर्वत्रता को जानने का प्रयास किया। तो मानो देखो, उनका वह शब्द अकाट्य बन गया, उसको कोई नष्ट नहीं कर सकता। इसलिए बेटा! देखो, तप और तपस्या की आवश्यकता होती है।

तप में मानव

जब मानव तप में परिणत हो जाता है, तो मुनिवरो! देखो, तपस्या के द्वार पर वह दैनिक शिक्षा प्रदान करता है। माता-पिता अपनी स्थली पर विद्यमान हैं मुनिवरो! देखो, विराजमान हो करके माता और पिता दोनों बाल्यों को शिक्षा प्रदान करते हैं और वह शिक्षा देते हैं, वह गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते हैं, वह गृह याग हो रहा है। माता कहती है हे पुत्र! तुम्हारा जीवन उज्ज्वल होना चाहिए। तुम तपस्वी बनो। मेरे पुत्रो! पिता कहता है-हे बाल्य! तुम तपस्वी बनो। तपस्या का अभिप्राय यह है कि तुम अपना मन, कर्म और विचार मानो देखो, या यूँ उच्चारण कर दो कि मन, प्राण और विचार दोनों को एक सूत्र में ला करके उसके ऊपर तुम्हारा गम्भीर अध्ययन होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, बाल्य उसका अध्ययन करना प्रारम्भ कर देता है। बाल्य-बालिका जब गृह में, स्वर्ग की वृत्तियों को बिखेर देते हैं तो गृह बेटा! प्रकाशित हो जाता है। तो उनका जो वह शब्द है, वह अकाट्य बन गया है।

मानो देखो, मुझे वह काल भी स्मरण आता रहता है शिकामकेतु उद्दालक ने यह कहा है कि यदि वेद के मन्त्र के आधार पर गृह और मानो देखो, प्रत्येक राष्ट्र अपनी आभा में रत होता रहे, तो राजा के राष्ट्र में मानो स्वर्ग आ जाए, प्रकाश आ जाए और राजा के राष्ट्र में क्या मानो देखो, माता-पिता से प्रथम पुत्र का निधन नहीं होगा। ऐसा मुझे स्मरण आता भी रहा है। भगवान राम ने भी इसका वर्णन किया कि यदि माता-पिता यह चाहते हैं कि हमारा जीवन वैदिक साहित्य के आधार पर, याग के रूप में परिणत होता रहे और हम प्रत्येक क्रियाकलाप को याग स्वीकार कर ले, तो मानो देखो, पिता से प्रथम, पुत्र का निधन नहीं हुआ करता है। ऐसा हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आया है। राम के काल में देखो, पिता से प्रथम पुत्र का निधन नहीं होता था उससे पूर्व काल में भी एक काल ऐसा आया क्योंकि देखो, जब राजा के राष्ट्र में, प्रत्येक गृह में याग होना प्रारम्भ हो जाता है एक-दूसरे से ऋणों का अवऋण होना प्रारम्भ हो जाता है, तो मानो देखो, मानव आने में मानवीयता में परिणत हो जाता है। ऐसा क्यों? निधन क्यों नहीं हो सकता?

मेरे पुत्रो! माता-पिता बुद्धिमान होने चाहिए। वेद के मर्म को जानने वाले होने चाहिए, जिससे देखो, वैदिकता को ला करके, हम उसी के आधार पर पुत्र, सन्तान को जन्म देना भी एक यागमयी स्वीकार कर लेते हैं। चाहे वह राजा हो, चाहे प्रजा हो, चाहे मानो देखो, किसी भी प्रकार का प्राणी क्यों न हो। जब वेद के मन्त्र के आधार पर

अपनी सन्तान को भी याग स्वीकार करता है तो वह याग रहेगा। याग शब्द ऐसा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानो देखो, अब तक शब्द की मृत्यु नही हो सकी है। वह सदैव रहा है और रहता रहेगा, क्योंकि वेद मन्त्र उसका उद्गीत गाता रहता है।

संसार यज्ञ स्वरूप

तो आओ मुनिवरो! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, एक समय महर्षि भृचि मुनि महाराज ने गृह-सूत्रों का पठन-पाठन किया। मानो देखो, ब्रह्मा जी ने भी गृह सूत्रों के ऊपर अपनी टिप्पणिया दी हैं। ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा थे उन्होंने भी इस सम्बन्ध में अपनी टिप्पणियाँ दी हैं और ये टिप्पणियाँ दे करके उन्होंने यह सिद्ध किया है कि संसार में यदि माता-पिता अपने जीवन को एक यज्ञशाला के रूप में स्वीकार करे, पाण्डितव भी उसी यज्ञशाला के रूप में जीवन को स्वीकार करे, राष्ट्र भी और मानव भी तो मानो देखो, यह संसार एक यज्ञमयी स्वरूप बन करके रहेगा।

तो वेद के ऋषि ने यह कहा है कि जितना भी संसार का क्रियाकलाप है, वह तपस्या के आश्रित होना चाहिए, तपस्या के आश्रित होने वाला, क्रियाकलाप मानो वह सर्वत्र एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है, वह याग माना गया है। एक विज्ञानवेत्ता है, वह विज्ञानवेत्ता मुनिवरो! देखो, विज्ञान की उड़ानें उड़ता है और वह याग के माध्यम से, याग की उड़ान उड़ता है। तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि हे प्रभु! मैं और मेरी देवी ने, जब याग करना प्रारम्भ किया, तो याग करते करते हमने अनुसन्धानीय दृष्टि से याग को प्रारम्भ किया। मानो याग में से जो तरंगों का प्रादुर्भाव हुआ, उन तरंगों के गर्भ में पहुँचे, और तरंगों के गर्भ में जा करके उसको क्रियात्मकता में लाने का प्रयास किया तो हे ऋषिवर! एक समय मेरी दिव्या ने कहा-हे प्रभु! ये जो हमारा शब्द है, यह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होता है और जो भी क्रियाकलाप मानो, जो साकल्य, शब्द में विद्यमान होता है। साकल्य का अभिप्रायः यह है जैसे देखो, मन वाणी, तरंगों में जो विचार होता है, वह विचार और मानव का शब्द, मानव का आकार मुनिवरो! देखो, वह विचार सहित, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में प्रवेश करता है। वह द्यौ लोक मुझे दृष्टिपात आता है भगवन्!

द्यौ गामी आकार के दो स्वरूप

तो मेरे प्यारे! देखो, जब देवी न यह कहा तो उसके ऊपर हमने अनुसन्धान प्रारम्भ किया, अन्वेषण प्रारम्भ करने लगे, तो मानो देखो, यज्ञं ब्रह्मे अब याग करके देखो, हम यहाँ तक पहुँचे कि हमारा जो शब्दं ब्रह्मे मानो देखो, तरंगों में वह आकार हमें दृष्टिपात आने लगे। जब तरंगों में आकार दृष्टिपात आने लगे, उन्हीं तरंगों के ऊपर जब और अन्वेषण किया तो मानो देखो, उसका दो-स्वरूपों में विभाजन हो गया। अन्तरिक्ष में दो स्वरूप में विभाजन हो गया। एक पारिवारिक हो गया, और एक मानो देखो, सामूहिक हो गया। वह जो सामूहिक था वह तो केवल अग्नि की धाराओं पर, शब्द के साथ में चित्र अन्तरिक्ष में रमण कर रहे है ओर भी चित्र आ रहे है, वह तो सामूहिक स्वरूप बन गया। एक पारिवारिक बन गया कि इसका हमारे रक्तों से समन्वय रहता है मानो देखो, तरंगों से समन्वय रहता है। पिता, महापिता, पडपिता वह मानो देखो, उनके चित्र दृष्टिपात आने लगे। यन्त्र निर्माणित करने लगे, यन्त्रों में चित्र आने लगे, मानो देखो, पचासवें महापिता का चित्र भी दृष्टिपात आ रहा है और एक मानो वही यन्त्र में, विभक्त क्रिया में जब परिणत हो गया, तो हमारे में देखो, उस काल का जो राष्ट्र था, उस काल का जो समाज था, उस काल का जो क्रियाकलाप राजा के राष्ट्र में होता था एक यन्त्र में देखो, वह दृष्टिपात आने लगा।

तो मानो देखो, सामूहिक और पारिवारिक दोनों प्रकार के चित्र उस यन्त्र में प्रवेश होने लगे मानो देखो, मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है कि उन यन्त्रों में मेरे पचासवें महापिता का दर्शन आ रहा है। और दूसरे यन्त्र में पचासवें

राष्ट्रवेत्ता का चित्रण हो रहा है। उसके क्रियाकलाप उसकी मानो देखो, धृष्टता का भी और महानता का भी उसमें चित्रण हो रहा है। तो ऐसे ऐसे विज्ञान, जो यह हमारा वैदिक विज्ञान है, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में जिसकी स्थिति है, वह सर्वत्र मानो देखो, वह याग माना गया है। वह याग के स्वरूप में विद्यमान है। तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र कहता है यागां ब्रह्मणां ब्रह्मे व्रतम् कि मानव का जितना भी सुसंकलन है, सुविचार है, वे सर्वत्र एक प्रकार के याग के रूप में परिणत रहता है।

तो मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो ऋषि के वाक्यों को पान करके, ऋषि अपने में मौन हो गया। उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! तो ऋषि ने सर्वत्रता में यह वर्णन किया कि जितना भी यह संसार है, यह सर्वत्र एक याग रूप में विद्यमान है। हमारे यहाँ कन्या याग का वर्णन आता रहता है और वाजपेयी, अग्निष्टोम याग भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन, उनकी क्रियाएं उनका क्रियाकलाप वह प्रायः हमारे मस्तिष्कों में निहित रहता है।

सृष्टि का सृजन

तो आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है बेटा! वेद मन्त्र कह रहा है कि वेद के आश्रय को और मन्त्रों को वह मानव जानता है जो तपस्वी है, जो तपस्वी भी देखो, तीव्र क्रिया वाला है। मानो देखो, जैसे सृष्टि के प्रारम्भ में, जब सृष्टि के पिता ने सृष्टि का सृजन किया तो उसकी उग्र क्रिया ने उन परमाणुओं को एक-दूसरे परमाणु से सुगठित कर दिया। यह संसार रचना में आ गया। रचित हो गया। परमपिता परमात्मा की उग्र क्रिया का नाम ही तो सृष्टि का सृजन है। तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार ऋषि ने जब वर्णन किया तो ऋषि अपने में मौन हो गये और मौन हो करके बोले कि मेरा तो अन्तिम मन्तव्य यही रहा है कि देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड, पिण्ड ब्रह्माण्डे मानो देखो, एक दूसरे में कटिबद्ध, माला के सदृश्य यह जगत माना गया है। जिसके ऊपर परम्परागतों से मानव, अपने में अनुसन्धान कर रहा है विज्ञान में रत हो रहा है। नाना प्रकार के विज्ञान को अपने में धारण करता हुआ, विज्ञान के स्वरूप में अपने को ले जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार यह आता रहता है कि हम, अपने में अपनेपन को जाने और अपनेपन को जान करके परमपिता परमात्मा की सृष्टि में रत हो जाए और वह जो सृष्टि है। वह परमात्मा की चेतना में रत करते हुए स्वयं चेतना को जान करके, चेतना के स्वरूप में प्रवेश हो जाए।

वेद की महिमा

तो मेरे पुत्रो! देखो, वेद का ऋषि आगे कहता है कि वेद के मन्त्रों में, एक वेद मन्त्र में तीन प्रकार का भाव विद्यमान है। इन तीनों प्रकार के भावों को जानने के लिए मानव को तत्पर रहना चाहिए। जिसमें भौतिक विज्ञान मानो व्यवहार विज्ञान, और देखो, इसमें आध्यात्मिकवाद है। इन तीन प्रकार की धाराओं को जो जानता है वह वेद के आशय को जानता है सबसे प्रथम वेद में व्यवहार है। व्यवहार, कैसे मानव को जगत में रहना चाहिये, किस प्रकार एक दूसरे से कटिबद्ध होकर के रहना चाहिये मानो देखो, जैसे राष्ट्र है, राष्ट्र से प्रजा है प्रजा से राष्ट्र है इसी प्रकार मानो उसको ध्रुवा और ऊर्ध्वा दोनों प्रकार के स्वरूप में उसको जानना चाहिए। ध्रुवा और ऊर्ध्वा के रूप में मानो जैसे राजा, राजा से प्रजा और मुनिवरो! देखो, प्रजा से राजा, एक-दूसरे में कटिबद्ध रहते हैं, एक दूसरे में निहित रहते हैं इसी प्रकार व्यवहार होना चाहिए। वेद के मन्त्र में सबसे प्रथम व्यवहार है, जगत में प्रभु की सृष्टि में कैसे रहे, और उसके पश्चात् ब्रह्मणां ब्रहे मानो देखो, विज्ञान होना चाहिए। विज्ञान में कौन-कौन-सी वस्तु है। कैसे वैज्ञानिक तथ्य उसमें विद्यमान है। तो वह वैज्ञानिक होना चाहिए और विज्ञान के साथ में आध्यात्मिकवाद होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार का व्यवहार जिसमें होता है वही इस वेद के आशय को जानता है। वेद की

महिमा को जानता है।

मुनिवरो! देखो, यह आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और वेद के मन्त्रार्थ को जान करके बेटा! देखो, उसकी आभा में रत हो जाएं और उसके आशय को जान करके मुनिवरो! देखो, उस परमपिता परमात्मा की महती में रत हो जाए।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ। आज मैं कोई बेटा! तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ, केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता और मानो देखो, उसका भोज का यह जगत मानो उसमें हमें परिणत हो जाना चाहिए। जितना यह ब्रह्मांड है यह अपने में ही, अपने में विद्यमान रहता है और उसी में हम रत हो जाएं जैसे बेटा! एक यज्ञ रूप है, एक शब्द-रूप है मानो उसका कितना विशाल रूपं ब्रहे, कितना विशाल है, उस विशालता के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए मानो व्यष्टि को, समष्टि में प्रवेश कर देना चाहिए और समष्टि मानो वह परमपिता परमात्मा की महती और वेदां प्रकाशं ब्रहे यह वेद एक प्रकाश रूप माना गया है, उस प्रकाश में मानव को प्रकाशित हो जाना चाहिए। क्योंकि परमात्मा के राष्ट्र में तो प्रकाश रहता है, परमात्मा के राष्ट्र में तो प्रकाश ही प्रकाश रहता है। जहाँ वेद की अनुभूति होती है, जहाँ तरंगों में हम तरिंगत रहते है और मुनिवरो! देखो, जहाँ यह संसार ममता वाला है, यह अन्धकार में रत, ले जाने वाला है तो इसलिए मानव को वेद के मन्त्र के आधार पर अपनी ऊँची-ऊँची उड़ानें उड़नी चाहिए। याग में हमारा मन्तव्य रहना चाहिए, यज्ञ में ही अपने को स्वीकार करते हुए, यह संसार मानो देखो, इसी प्रकार परम्परागतों से गमन कर रहा है, करता रहेगा, हमें तो अपने मानवीय आत्म तत्व के ऊपर विचार करना है। और परमात्मा की सृष्टि को जानना है।

चेतना का गुण

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या मुनिवरो! देखो, जितना भी यह जड़ जगत और चेतन्य जगत है इन दोनों स्वरूपों में वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं, बेटा! देखो, जड़ जगत और चेतनता की मीमांसा करते हुए महर्षि श्वेतकेतु ने कहा है कि ब्रहे सम्भव कृता मुनिवरो! देखो, ऋषि कहता है कि जहाँ ज्ञान और प्रयत्न विद्यमान होता है मानो वह चेतना का गुण है और जहाँ मुनिवरो! देखो ब्रहे पिण्ड रूप है और पिण्ड में ज्ञान और प्रयत्न का अभाव है वह मानो देखो, जड़ जगत माना गया है। इन दोनों प्रकार के जगत को जानना और मुनिवरो! देखो, अपने अन्तर्हृदय में उसका मनन करना और प्रकाश में रत रहना यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे, आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। यह विचार बेटा! एक गम्भीर तथ्य माना गया है, इस गम्भीरता में मानव को प्रवेश करके जैसे समुद्र में मानव प्रवेश हो करके अन्तिम तथ्य को जानने लगता है इसी प्रकार देखो, अपने को गम्भीर मुद्रा में, वेद रूपी समुद्र में प्रवेश हो करके, स्वयं अपने को ही अपने में दृष्टिपात करना यह मानवीय कर्तव्य कहलाता है। यह आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म मा रथं गायाः। ओ३म् यशश्चां मा वसु आभ्यां देवाः। ओ३म जनिता ऋषि वरुणाहं आप्यां मधु पृ वरुणाश्च माः मां धेनु। ओ३म् यशो पृ वरुणां ब्रह्म पृ वरुतश्चमा आभा रथं आपाः । अच्छा भगवन् 6/9/1988 ग्राम-दाहा, बागपत।

८ रावण राष्ट्र की चर्चायें 07 09 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और वे इस महान जगत में व्याप्त रहने वाले हैं क्योंकि वे यज्ञोमयी स्वरूप है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः अपने में गुणगान गाते रहते हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा पुरोहित है। वे पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं। मानो जितना भी ज्ञान और विज्ञान का जो पुंज है, उसका स्वामीत्व, नेतृत्व करने वाले, वे प्रभु ही माने गये है। क्योंकि मानव अपने में भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ानें उड़ता रहता है और विचारता रहता है, परन्तु जब वे परमात्मा के विज्ञान को अपने में धारण करने के पश्चात् परमपिता परमात्मा की प्रतिभा स्वस्तम मानो उसी में ओत-प्रोत हो जाता है, तो परमात्मा के विज्ञान को अपने में और अपने को परमपिता परमात्मा में स्वीकार करने लगता है। मानो ये जो संसार, जो अंधकार में ही दृष्टिपात आता है मानो उससे वह दूरी हो जाता है मानो उससे ओझल हो जाता है। तो इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपना पुरोहित स्वीकार करें। वे पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं, पुरोहित है। मानो वे यज्ञोमयी स्वरूप है, याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वे उसी में निहित रहने वाले हैं।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है। जिस प्रकार माता का निर्णय देने वाला, उसका गुणवादन करने वाला, उसके गुणों का वर्णन करने वाला, माता का पुत्र होता है इसी प्रकार वेद का एक-एक शब्द, एक-एक आख्यिकाएँ उस परमपिता परमात्मा की महती का गुण गान गाती रहती हैं अथवा उसके गुणों का वर्णन करती रहती हैं। तो इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपना गुणाधानम् स्वीकार करके उसको अपना पुरोहित स्वीकार करते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें।

अनुशासन में महानता

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि हमारा एक-एक वेद मन्त्र हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा में ले जाता है अथवा अपने में गुणों का वर्णन करना ही एक मानवीयत्व माना गया है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें कुछ कह रहा है। हम जब वेद मन्त्रों की प्रतिभा में अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान में रत हो जाते हैं, ज्ञान और विज्ञान में उड़ाने उड़ने लगते हैं तो हमारा एक मानवीयतव, हमारे समीप आ करके उस परमपिता परमात्मा को अपने में धारयामी बना लेते हैं। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र, जहाँ मानव की, मानव दर्शन की चर्चा कर रहा है जहाँ परमात्मा के गुणों का गुणवादन कर रहा है वहाँ बेटा! देखो, राष्ट्र की प्रतिभा भी आती रहती है। क्योंकि संसार में सबसे प्रथम मानव के लिए एक अनुशासन ही माना गया है। कोई भी प्राणी हो, वह अपने में अनुशासन को धारण करता हुआ ही मुनिवरो! देखो, महान बनता रहता है। जब मानव अपने अनुशासन में परिणत न हो तो उस मानव का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसलिए प्रत्येक मानव को अपने में अनुसन्धान करना चाहिए और अपने में अनुसन्धान करके अनुशासन में रत्त रहना चाहिए। अनुसन्धान भी वही प्राणी करता है जो मुनिवरो! देखो, अनुशासन में निहित हो जाता है। और जिसका अनुशासन मानो बिखर जाता है तो वह अनुसन्धान से भी वंचित हो जाता है।

अनुशासन से याग

तो इसलिए प्रत्येक मानव को अनुशासन में प्रवेश करना चाहिये जैसे एक मानव योगाभ्यास में परिणत होना चाहता है तो मुनिवरो! देखो, योगी बनने के लिए, उसे अनुशासन में लाना होगा, अपनी पांच ज्ञानेन्द्रियों को अनुशासन में लाने के लिए, उसे तप की आवश्यकता होती है। वह तप करता है अखंगतियों में प्रवेश हो जाता है और मुनिवरो! देखो, अपने में प्रविष्ट होता हुआ, और तरंगों को प्रविष्टता में परिणत करता हुआ, मेरे प्यारे! वह योग की पगडंडी को ग्रहण कर लेता है। वह प्राण में प्रवेश हो जाता है। मानो देखो, हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणों की चर्चाएं आती रहती हैं उनके क्रियाकलाप जब मुनिवरो! हमारी स्मरण क्रिया में प्रविष्ट हो जाते हैं तो मुनिवरो! देखो, हमारा जीवन एक बड़ा भव्यता को प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणायाम होते हैं। एक संकल्पोमयी प्राणायाम होता है। संकल्प मात्र से बेटा! सुरों का ज्ञान हो जाता है और वही प्राणायाम जब कुम्भक और रेचक में प्रवेश हो जाते तो मानो देखो, वह एक-दूसरा प्राण, एक-दूसरे की सीमा में मानो जैसे देखो, सूत्र में मनके पिरोये जाते हैं ऐसे प्राण मानो देखो, चेतना में जब पिरोया जाता है तो मुनिवरो! देखो, वह रेचक, कुम्भक प्राणायाम नाना प्रकार के रूपों में, दृष्टिपात होने लगता है। वही प्राण इतना अनुशासन में लाना प्रारम्भ हो जाता है कि वह प्राणायाम मुनिवरो! देखो, रेचक, कुम्भक और सूर्य में प्रवेश हो जाता है तो प्राण मेरे प्यारे! मस्तिष्क को ललाहट में परिणत कर देता है और वही प्राणायाम मेरे प्यारे! देखो, एक दीपावली के रूप में प्रविष्ट हो जाता है।

प्राणायाम की प्रतिभा

तो विचार आता रहता है मेरे पुत्रो! देखो, यह प्राण अपने में कितना अनूठा है, तुम्हे यह प्रतीत हो गया होगा, कि प्राण के द्वारा ही हमारे यहाँ विज्ञान में मानव प्रवेश कर जाता है। मैंने तुम्हें कई कालों में ये वर्णन कराते हुए कहा था कि यह प्राण, एक-एक अंग में लाने के लिए मानव तत्पर हो जाता है। और यह प्राण अपने में इतना विशाल, इतना वशिष्ठ बन जाता है कि मुनिवरो! देखो, मानव के शस्त्र भी शरीर में प्रवेश नहीं कर सकते। वह भी दूरी चले जाते हैं। क्योंकि मानव प्राणायाम की प्रतिभा में परिणत हो जाता है।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं आज तुम्हें प्राण विद्या के लिए कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार केवल बेटा! देखो, यह राष्ट्रवाद की चर्चा करने के लिए कि राजा के राष्ट्र में मेरे पुत्रो! देखो, बुद्धिजीवी प्राणी होने चाहिए। राजा अपने राष्ट्र को यदि ऊँचा बनाना चाहता है तो बुद्धिजीवी प्राणियों की आवश्यकता होती है, बुद्धिजीवी प्राणी वे होते हैं जो मेरे प्यारे! देखो, सांत्वना से और बुद्धि से मानो क्रियाकलापों में जब वे परिणत हो जाते हैं तो उस राजा के राष्ट्र में बुद्धिमत्ता, अनुशासन मानो उसी के राष्ट्र में विवेक जागरूक हो जाता है। और जिस राजा के राष्ट्र में विवेकी पुरुष होते हैं उतना ही राजा का राष्ट्र पवित्र देखो, राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके अपनी प्रजा को ऊँची बनाता है। अपनी प्रजा में मानो देखो, वह खिलवाड़ करने लगता है, अश्वमेध याग करने लगाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में, विशेषता में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ, विचार केवल यह कि मानव को अनुशासन की आवश्यकता है। वह चाहे प्राणायाम हो, चाहे वह साधना हो, चाहे वह उग्र क्रिया हो, चाहे मेरे प्यारे! मानवीयता में मानव का तत्पर हो जाना हो, चाहे वह देखो, भौतिक विज्ञानवेत्ता हो, उसे अनुशासन की आवश्यकता रहती ही है। अनुशासन में प्रवेश करके ही मानव दार्शनिक बनता है, अनुशासन में प्रवेश करके चित्त की वृत्तियों का निरोध करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, वह नाना प्रकार के जन्म जन्मात्तरों की प्रतिभा को जानने लगता है। उसे अपने में स्मरण करने लगता है तो इसलिए प्रत्येक मानव को अनुशासन की आवश्यकता है। प्रत्येक

परमाणु बेटा! अपने में अनुशासित हो रहा है अग्नि अपने में अनुशासित हो करके काष्ठों में वास कर रही है कहीं मानो देखो, जलां, अरतियों में अपने में प्रवेश कर रही है यह अग्नि मानो देखो, अग्न्याधान रूपों में, अग्नि अपने में अनुशासित रहती है।

त्रेता काल का वर्णन

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरो! देखो, आओ, आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ। मैंने तुम्हें यह वाक् कई कालों में प्रगट कराया है आज भी मानो मुझे स्मरण आ रहा है कि राजा के राष्ट्र में जब मुनिवरो! देखो, अनुशासन की हीनता हो जाती है, राजा के राष्ट्र में विज्ञान हो, ऊँचे-ऊँचे भवन हो मानो किसी प्रकार के जलाशय हो तो बेटा! वह राष्ट्र कदापि ऊँचा नहीं बनता, राष्ट्र ऊँचा उस काल में बनता है जब प्रत्येक मानव उसके राष्ट्र में अनुशासित होता है। अनुशासन में निहित होता है। आओ मेरे प्यारे! मैंने कई काल में तुम्हें यह वाक् प्रगट कराते हुए कहा था, आज भी मुझे वह काल और वह मानो देखो, गाथाएं स्मरण आ रही है जिन्होंने अपने जीवन में मानो बड़े विज्ञानमयी, रहस्यतम को जाना है। परन्तु अन्तिम परिणाम अन्धकार ही प्रतीत हुआ। तो बेटा! आओ, देखो, मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ, राजा रावण के उस काल में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो, ऊँचे-ऊँचे भवन हैं, ऊँचे-ऊँचे मानो देखो, जलाशय अप्रतियों में रत्त हो रहे हैं और मुनिवरो! देखो, विज्ञानशाला है, उस के पश्चात् भी राजा का राष्ट्र कोई विशेषता में दृष्टिपात नहीं हुआ।

गुरुत्व परमाणु के विभाग

आओ मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल, आज स्मरण आ रहा है मानो देखो, जब नाना प्रकार के वैज्ञानिक एक स्थली पर विद्यमान हो करके विज्ञान में रत्त होते रहे हैं और विज्ञान अपनी स्थलियों में बड़ा नृत करता रहा है तो बेटा! देखो, एक समय वैज्ञानिकों ने, राजा रावण से कहा हे भगवन! आज मानो देखो, विज्ञान भवन में, हम सब विराजमान होंगे और आपकी अध्यक्षता में कुछ विज्ञान की विवेचना होंगी अथवा उसके ऊपर विचार-विनिमय होगा। आप भगवन्! देखो, उस सभा में विराजिये। मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा स्मरण है राजा रावण ने स्वीकार कर लिया। बेटा! प्रातःकालीन विज्ञान भवन में नाना वैज्ञानिक मुनिवरो! देखो, विद्यमान थे। राजा रावण की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन हुआ, और उस सभा में यह निर्णय होने लगा था कि देखो, गुरुत्व के कितने भाग हैं।

मेरे प्यारे! देखो, गुरुत्व जो परमाणु है वह पृथ्वी से सम्बन्धित रहने वाला हैं, क्योंकि पृथ्वी को गुरुत्व के रूप में परिणत किया जाता है उसमें गुरुत्व विशेष माना गया है। तो नाना वैज्ञानिक बेटा! ऊपर विचार-विनिमय कर रहे थे मानो देखो, विचार-विनिमय करते करते बहुत समय हो गया। प्रातः काल से सायंकाल हो गया। अपने में कोई निम्बटारा नहीं हो सका, राजा रावण भी अपना कोई वक्तव्य, अपना कोई निर्णय नहीं दे सका। क्योंकि वह अपने में निम्बटारा न होने के कारण मेरे पुत्रो! देखो, उस सभा में देखो सुदेशु नाम के वैज्ञानिक थे, उन्होंने कहा-प्रभु! इस पृथ्वी के मुझे चार भाग दृष्टिपात आते हैं, उन्होंने कहा सबसे प्रथम गुरुत्व, तो इसमें है ही, परन्तु तरलत्व भी इसमें विद्यमान रहता है और तेजोमयी की तब तक पुट नहीं लगती जब तक यह गतिवान नहीं होती, इसलिए वायु भी प्रतिष्ठित दृष्टिपात आती है।

मेरे प्यारे! देखो, ये वाक् सबने स्वीकार किया, परन्तु इसमें एक वाक् आया कि परमाणु तो तीन ही प्रकार के हैं, तुम चार प्रकार की गति का कैसे अवधान कर रहे हो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि भगवन! देखो, चतुर्थ उसमें गति है, उन्होंने कहा तृतीय आभा जब परिणत हो जाती है तो मानो देखो, गति का संचार स्वतः हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का विचार-विनिमय होते-होते सांयकाल हो गया, परन्तु इसमें कोई निम्बटारा नहीं

हो सकता। निम्बटारा होने के कारण सभा विसर्जित हो गई, राजा रावण जब अपने में यह अनुभव करने लगा कि तू अपने क्रिया-कलापों में असन्तुष्ट हो गया है।

राजा रावण को अशान्ति

मेरे प्यारे! देखो, रात्रि छा गई, सब अपने कक्ष में जा पहुँचे। राजा रावण जब अपने विश्राम गृह में प्रवेश कर गये। तो विचार-विनिमय करने लगे कि यह तो बड़ा आश्चर्य हुआ है कि मैं अपने में निम्बटारा नहीं कर सका। बेटा! इसी चिन्तन में मानो देखो, रात्रि समाप्त हो गई। यही चिन्तन चलता रहा, परन्तु हृसता अपने में दृष्टिपात करने लगे। मेरे पुत्रो! ऐसा स्मरण है कि रात्रि के अन्तिम प्रहर में, प्रातः काल जब होने को हुआ तो यह निर्णय हुआ कि मेरे अन्तरात्मा में अशान्ति छा गई है और राजा के हृदय में जब अशान्ति छा जाती है तो राजा का राष्ट्र या उसकी प्रवृत्तियाँ मानो देखो, बिखर जाती है। ज्ञान का माध्यम समाप्त हो जाता है। तो मानो देखो, राजा रावण ने यह विचारा कि मैं किसी महापुरुष के द्वार पर जाकर अपने में शान्ति की स्थापना करूँ, उसके पश्चात मेरा राष्ट्र में आना सुयोग्य होगा।

तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण इसी विचार में, जब प्रातः काल हो गया, सूर्य उदय हुआ तो उन्होंने अपने मन्त्रियों की मानो एक पंक्ति लगाई और उन्होंने कहा-हे मन्त्री-गणों! तुम अपने राष्ट्र को सुचारू रूप से, गति देते रहना, परन्तु अपने को सु-आभा में परिणत करते हुए, मुनिवरो! देखो, मन्त्रियों ने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा-प्रभु! जैसी आपकी इच्छा हो, मानो वैसा ही होगा। हे मेरे प्रभु! ऐसा प्रह कृतम् हम ऐसा ही, जैसी आपकी मनोकामना है, इच्छा है, वैसा ही कर पायेंगे। आप अपनी आत्मा में शान्ति की स्थापना कीजिए।

मेरे पुत्रो! देखो, राजा रावण राष्ट्र को समर्पित करके बेटा! अपने वाहन में विद्यमान हो करके वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, वह भयंकर वन में पहुँचे, सबसे प्रथम मानो देखो, भयंकर वनों में पारेत्वर ऋषि महाराज का आश्रम उन्हें प्राप्त हुआ, पारेत्वर ऋषिवर ने राजा का बड़ा स्वागत किया, उन्होंने कहा-आओ, भगवन्! विराजो। वह विराजमान हो गये, कुछ चर्चाएं हुई, आत्म चर्चाएं हुईं, परन्तु आत्मा की चर्चा में अपने को सन्तुष्ट दृष्टिपात नहीं किया। वहाँ से उन्होंने गमन किया, भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, वह महर्षि सोमवृत्तिका मुनि के आश्रम में पहुँचे। सोमवृत्तिका मुनि महाराज ने राजा रावण का स्वागत किया, उन्होंने कहा-आईये, भगवन! कुछ कन्द मूल दिये, अतिथि सेवा करने के पश्चात बोले-कहो, राजन! आज अशान्त प्रतीत हो रहे हो। उन्होंने कहा-ऋषिवर! मुझे आत्म शान्ति की आवश्यकता है। मुझे आत्मतत्व को प्राप्त कराईये।

ज्ञान के अभाव में अशान्ति

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कुछ चर्चाएं की, आत्मा की विवेचना करने लगे, परन्तु राजा रावण को शान्ति प्राप्त नहीं हुई, उन्होंने वहाँ से भी गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! नाना ऋषियों से मिलान करते हुए, वह अन्त में महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे, और महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने कहा आईये, भगवन! राजा रावण को आसन दिया, विराजमान हो गये, कन्द मूल फल इत्यादि प्रदान कराएं, वह तृप्त हो गये। राजा से महात्मा कुक्कुट ने कहा-कहो, राजन! आज अशान्त कैसे प्रतीत हो रहे हो? उन्होंने कहा-हे भगवन! मैं देखो, इससे पूर्व जो दिवस चला गया है, वैज्ञानिकों के मध्य में विद्यमान था और मैं अपने में मानो हृस हो गया, कोई निर्णय न हो सका। मेरे हृदय में अशान्ति छा गई है। मुनिवरो! उन्होंने कहा तो व्यस्प प्रहे तुम्हारी अशान्ति का मूल क्या है? उन्होंने कहा-महाराज! ज्ञान न रहने से ही अशान्ति होती है। मुझे कुछ ज्ञान कराइये।

शरीर की तीन अवस्थायें

मेरे प्यारे! महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज, वायु मुनि महाराज के साढ़े तीन हजारवें पडपौत्र कहलाते थे। मेरे पुत्रो! महात्मा कुक्कुट ने कहा-हे रावण! तुम विराजो, वे विराजमान हो गये, विराजमान होने के पश्चात उन्होंने यह प्रश्न किया-हे रावण! तुम्हारे आचार्यों ने जो अब तक तुम्हें निर्णय दिया हो, आत्मा के सम्बन्ध में उसको तुम मुझे उदगीत रूप में गाओ। तो राजा रावण ने कहा-प्रभु! जब मैं बाल्यकाल में अध्ययन करता था तो मुझे ब्रह्मा जी ने यह वर्णन कराया था कि इस शरीर की चार अवस्था होती हैं। मानो देखो, इस मानवीय आभा में रत्त होने की चार वृत्तियाँ होती हैं। उनका सबसे प्रथम नामोकरण मानो देखों, जागरण है, जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति और एक तुरया कहलाती है मानो तुरया को तो योगीजन ही जानते हैं और ये तीन अवस्थायें प्रायः मानव के शरीरों में प्रवेश होती रहती है। ये प्रत्येक प्राणियों के शरीरों में प्रवेश है, चाहे वे जलचर है, चाहे वे अग्नि तत्वों में रमण करने वाले, चाहे वे जलों में वास करने वाले हैं, कहीं भी हो, चाहे वे वृक्ष योनियाँ है मानो देखो, अप्रोति सम्भवा चाहे वे वृक्षों पर वास करने वाले प्राणी है चाहे वे मानो, देखो, पृथ्वी के गर्भ में है, ये तीन अवस्था सभी की मानी जाती हैं। यह मेरे पूज्यवाद ब्रह्मा जी ने मुझे वर्णन कराया था और मैं उसी वर्णन शैली के ऊपर विचार-विनिमय करता रहता हूँ। तो हे भगवन! मुझे यह आभा वृत्तियों में निर्णय हुआ।

तो मुनिवरो! देखो, जब उन्होंने यह श्रवण कर लिया, तो उन्होंने कहा-तुम, क्या जान पाये? उन्होंने कहा-जागृत जो संसार में, हम दृष्टा बने रहते हैं, दृष्टिपात करते रहते हैं और द्वितीय हमारे यहाँ स्वप्न अवस्था है जो अपनी-अपनी क्रियाओं में, जो सूक्ष्म चित्त में विराजमान है, उनको साकार रूप में हम भोगने लगते हैं, वह साकार रूप का एक पथिक बन करके, हम साकार अप्रत्तियों में रत होते रहते हैं। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया, उस वर्णन शैली में उन्होंने कहा-तुमने यह जान लिया। उन्होंने कहा-प्रभु! आप और निर्णय दीजिए।

जाग्रत अवस्था

उन्होंने कहा-हे रावण! जागृत अवस्था उसे कहते हैं जो संसार में प्राणी दृष्टा बना रहता है, उसमें विभक्त क्रिया होती रहती है। जैसे एक मानव अपने कुटुम्ब का परिचय देता है, वह कहता है, यह मेरी माता है, यह महामाता है, यह पुत्री है, यह पुत्र वधू है, यह मानो देखो, मेरी पत्नी है। वह निर्णय देता रहता है, पटल, उसी प्रकार का परिवर्तित होता रहता है। मानो देखो, इसी प्रकार अपने कुटुम्ब का निर्णय देता है यह पिता, महापिता, विधाता और मानो और भी ऋणसम्बन्धी संसार है। उसका वह निर्णय देता रहता है तो इसका नाम जागरूक कहा जाता है। विभक्त क्रिया मानो विभाजन होती रहती है। वह अपने में विभक्त क्रिया मानो क्रियाशील रहती है।

स्वप्नावस्था

उन्होंने बेटा! देखो, द्वितीय में कहा कि द्वितीय अवस्था का नाम, स्वप्न कहा जाता है। इस स्वप्न अवस्था में निर्णय देने वाला, निर्णय देता रहता है यह मानो देखो, ब्रह्मणां ब्रहे का स्वप्न मेरे पुत्रो! देखो, अन्तर्मुखी हो करके स्वप्न अवस्था में यह मानव अपने को अन्तर्मुखी ले जाता है, चित्त में जो संस्कार होते हैं, उनका एक साकार रूप बनता है, मानो उनका साकार रूप बन करके उन्हें साक्षात्कार मानो यह सुषुप्ति में परिणत हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, स्वप्न में पत्नी नहीं होती, परन्तु पत्नियों के निर्माण हो जाते हैं। पति नहीं होते, पतियों का निर्माण हो जाता है। राष्ट्र नहीं होते, राष्ट्रों का निर्माण हो जाता है। समुद्र नहीं होते, समुद्रों का निर्माण हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, नद, नदियाँ नहीं होती, उनका निर्माण हो जाता है। अरे कैसा विचित्र बेटा! देखो, यह स्वप्न अवस्था है। चित्त में सूक्ष्म संस्कार होते हैं उनको मुनिवरो! देखो, यह मन आत्मा के प्रकाश से बेटा! उनका साक्षात्कार कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, यह मन और आत्मा दोनों का समन्वय, मात्र से ही बेटा! देखो, यह

जगत बन जाता है। आओ मेरे प्यारे! स्वप्न में देखो, द्रव्यपति बन जाता है द्रव्य पति से द्रव्यहीन बन जाता है, कैसा विचित्र मेरे प्यारे! प्रभु की यह अनुपमता है, एक रचना है, एक चित्त का मण्डल है। मन और आत्मा दोनों के सम्पर्क से बेटा! देखो, साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारे! मुझे बहुत-सा काल स्मरण है योगियों से अयोगी बन जाता है और अयोगियों से योगी बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्त में, जो सूक्ष्म रूप से संस्कार विद्यमान है उनको वह भोगतव्य में लाना प्रारम्भ कर देता है। तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा मानो देखो, स्मरण है जो उन्होंने ज्ञान दिया, उन्होंने कहा-हे राजन! मानो देखो, यह अप्रतम् यह आत्मा न तो जागृत है और न स्वप्न है केवल मन के सन्निधान मात्र से क्रिया हो रही है। और मुनिवरो! देखो, यह आत्म ब्रह्मे न यह आत्मा सुषुप्ति है, न स्वप्न में बेटा! देखो, मन बुद्धि, चित्त और अहंकार यह अपनी साम्यावस्था में परिणत हो जाते हैं। तो मुनिवरो! देखो, यह आत्म ब्रहे आत्मा प्राण के साथ गमन करता है और यह सुषुप्ति में मानो प्रवेश कर जाते हैं। बेटा! देखो, गाढ़ निद्रा में परिणत हो जाता है।

प्राण के साथ आत्मा

तो मुनिवरो! देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह सर्वत्र जो जगत हमें दृष्टिपात आता है यह मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार तक ही मानो देखो, सीमित रहता है और उसके पश्चात् आत्मा केवल एक प्राण के साथ में गमन करता है, वह जागरूक बनाए रहता है। वही मुनिवरो! देखो, उसे चेतना में परिणत करने वाला है, वही चेतना में रत्त करने वाला है। जब बेटा! देखो, ऋषि ने इस प्रकार निर्णय दिया तो राजा के हृदय में शान्ति की स्थापना हो गई और ऋषि ने कहा-हे राजन! तुम्हें यह प्रतीत है कि देखो, परमात्मा का इतना नितान्त, इतना अद्भुत जगत है कि यह मानव जानता रहता है, परन्तु उसके पश्चात् भी उसका जगत एक विशेष बना रहता है इसलिए मानव अपने में यह चाहे कि मैं सर्वत्र विद्याओं को, यह परमात्मा के सर्वत्र ज्ञान में प्रवेश हो गया हूँ तो यह असम्भव है। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान नितान्त माना गया है।

चित्त का विशाल मण्डल

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण की ओर भी शान्ति की स्थापना हो गई। उन्होंने कहा-रावण! तुम्हें प्रतीत है कि मेरा जो गोत्र है वह अंगिरस कहलाया गया है, मेरे एक महापिता हुए हैं जिनका नाम सुदिशु मानववृत्ति ऋषि कहा जाता था तो वृत्ति ऋषि महाराज ने, एक समय जब अपने में अनुष्ठान करने लगे तो उन्होंने यह विचारा कि मैं अपने चित्त में जो संस्कार विद्यमान है, उन्हें मैं जान लूं। तो वह एक समय विराजमान होकर एकान्त मुद्रा में वायु सेवन करने लगे, वायु पोषक तत्वों को, अपने में ग्रहण करने लगे और चित्त के मण्डल को जानने लगे, उन्होंने सत्य का उच्चारण किया, सत्य को ही जाना। इक्यासी वर्ष तक तपस्या करने के पश्चात उन्हें लगभग मुनिवरो! देखो, बहत्तर लाख जन्मों के संस्कार उनके उदबुद्ध हो गये। तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट ने कहा-हे राजन! ये चित्त का मण्डल इतना, विशाल मण्डल है कि मानो देखो, जब उन्होंने जाना तो उसको जानते, जानते यह विचारने लगे कि यह तो बड़ा विशाल वन है।

तो मुनिवरो! देखो, जब मानव साधना में प्रवेश करता है, साधना करने लगता है चित्त के मण्डल को जानने के लिए तो बेटा! देखो, तपस्या में परिणत हो जाता है।

परमात्मा की प्राप्ति

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो राजा रावण अपने में मौन हो गये और राजा रावण ने कहा-धन्य है, प्रभु! आपने मेरे अन्धकार को दूरी कर दिया हैं उन्होंने कहा-हे रावण! तुम्हें यह प्रतीत है कि

मेरे जो महापिता थे, जिससे इस वंशलज का निकास हुआ, अंगिरस ऋषि महाराज, परमात्मा की तपस्या में परिणत रहते थे माना वेद के प्रकाश में सदैव रत्त रहते थे, और वेद के प्रकाश में ही विचारते थे, उसी में शयन करते थे, उसी में श्वास लेते थे, उसी में अन्न को ग्रहण करते थे मानो देखो, उन्होंने पिचासी वर्षों का, इस प्रकार का अध्ययन करने के पश्चात उनके चित्त में जो दुरिता संस्कार थे, वह मानो दग्ध हो गये थे, और दग्ध होते हुए मानो देखो, वे परमात्मा को प्राप्त हो गये।

मोक्ष की पगडण्डी

तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है कि जो मानव अपने में यह संकल्प बना लेता है कि मैं साधना में प्रवेश करके, परमात्मा के राष्ट्र में प्रवेश करना चाहता हूँ और ये परमात्मा का ही राष्ट्र है तो मानो देखो, उसी में रत्त रहता है। उसी में श्वास लेता है, उसी में आहार करता है, उसी में शयन करता रहता है, उसी में अभ्योदय होता रहता है। मेरे प्यारे! न उदय होता है, और न मुनिवरो! देखो, वह शयन करता है। वह विवेक में इतना रत्त हो जाता है मेरे प्यारे! चित्त के संस्कार स्वतः ही मानो देखो, उसे स्मरण नहीं आते, वह दूरी चले जाते हैं मानो एक समय आता है कि वे दग्ध हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है, तो बेटा! मैं इन वाक्यों को गम्भीरता में ले जाना नहीं चाहता हूँ। यह तो बड़ा विशाल वन है, इस प्रकार का।

आज का विचार तो केवल यह कि राजा रावण और महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज की चर्चा हो रही थी, और महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने, अंगिरस ने, अपने गोत्रों की चर्चा की, देखो, अपने ऋषि मुनियों की चर्चाएं की, उनके यहाँ जो विज्ञान पनपता रहता था, उसकी भी चर्चाएं की। तो मेरे प्यारे! ऐसा, कुछ स्मरण आता रहता है कि राजा रावण की अन्तरात्मा में मानो शान्ति की स्थापना हो गई, क्योंकि ज्ञान के बिना शान्ति नहीं होती, जब तक मानव का ज्ञान और विवेक दोनों का समन्वय हो जाता है तो दोनों में शान्ति की स्थापना हो जाती है। उन्होंने कहा-हे भगवन! आप तो बड़े महान हैं, तो विचार विनिमय करते-करते सायंकाल से मानो प्रातःकाल हो गया और प्रातःकाल होते ही मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा-भगवन! मेरी इच्छा ऐसी है कि आप मेरी लंका का भ्रमण करे, क्योंकि बहुत समय हो गया है, लंका का भ्रमण किये। आप भगवन्! मेरी लंका का भ्रमण करें।

महात्मा कुक्कुट ने कहा-हे प्रभु! देखो, ब्रह्मणां ब्रहे कृतो सम्भवा मुझे बहुत समय हो गया है जब मानो देखो, तुम्हारे राज्याभिषेक में मैं गाया था, उसके पश्चात मैं नहीं पहुँच पाया। हे रावण! मुझे इतना समय नहीं है, मैं प्रभु के चिन्तन में रहता हूँ, मैं प्रभु की प्रतिभा में रहता हूँ, मुझे इतना समय आज्ञा नहीं देता है कि आज मैं मानो तुम्हारे राष्ट्र का भ्रमण करूं। मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण और ऋषिवर मानो दोनों का विचार विनिमय होने लगा। राजा रावण ने कहा-हे प्रभु! आप मेरी लंका का भ्रमण तो अवश्य ही कीजिए, आपको मेरी लंका बहुत प्रिय लगेगी। मेरे प्यारे! ऋषि ने मानो सदैव उनको अवृत्तियों में परिणत कर दिया। उन्होंने कहा-नहीं, रावण! मुझे समय नहीं है। मेरे प्यारे! राजा नम्र थे, विवेक में प्रवेश हो करके चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने नम्रता से प्रार्थना की तो राजा ने जब नम्रता से प्रार्थना की तो बेटा! ऋषि का हृदय तो प्रायः उदार होता है वे उदारता में परिणत हो गये उन्हांने कहा-रावण! मैं तुम्हारे राष्ट्र का भ्रमण अवश्य करूँगा। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम, अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हुआ।

महात्मा कुक्कुट मुनि लंका में

तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण और महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज बेटा! राजा रावण के वाहन में विद्यमान हो करके, वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए, नाना ऋषियों से मिलान करते हुए, मेरे पुत्रो! देखो,

उनका लंका में प्रवेश हुआ। जब लंका राष्ट्र में प्रवेश हो गया, तो राजा रावण भ्रमण कराते हुए मुनिवरो! देखो, अपने राष्ट्र-गृह में पहुँचे, और अपनी महारानी मन्दोदरी से कहा-हे दिव्या से! बहुत समय के पश्चात् आज ऋषि का आगमन हुआ है, इन्हें मानो देखो, नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराओ। मेरे प्यारे! देखो, महारानी मन्दोदरी ने ऋषि के चरणों को स्पर्श करते हुए, उन्हें आसन दिया। वह आसन पर विराजमान हो गये। राजा रावण ने आज्ञा पाई-हे प्रभु! मैं मन्त्रियों के समीप हो करके आता हूँ, आप कुछ कन्दमूल खाईये।

महारानी मन्दोदरी की कामना

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण तो मन्त्रियों में जा पहुँचे और महारानी मन्दोदरी ने नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराया और पान करने के पश्चात् ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, ऋषि ने कहा-धन्य है। मेरे प्यारे! नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराने के पश्चात, महारानी मन्दोदरी ने कहा-प्रभु! आप जब लंका से प्रस्थान करोगे, तो मेरे पति को भी कोई ऊँची शिक्षा देते जाना। मेरे प्यारे! देखो, राजा नम्र तं ब्रह्मे ब्रह्मा ब्रह्मस्त देवी ने कहा-कि यह राजा है, आप ऋषि है भगवन! क्योंकि ऋषि ही राजा को उदगीत गा सकते हैं। ऋषि ने कहा-देवी! मैं प्रयत्नशील रहूँगा, हे देवी! मैं प्रयत्नशील हूँ। देखो, यहाँ से गमन करूँगा, तो कुछ ऊँची शिक्षा अवश्य दूँगा। क्योंकि संसार में कोई पत्नी यह नहीं चाहती, कोई देवी यह नहीं चाहती कि मानो मेरे पति के जीवन में किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना हो जाए, अप्रिय कर्म हो जाए या दूरिता में परिणत हो जाए। सदैव देवी यह चाहती है कि मेरा पति महान बने, तपस्वी बने, योगेश्वर बने। सदैव उसकी यह कामना रहती है।

लंका-दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, महारानी मन्दोदरी की यह कामना रही, तो मेरे प्यारे! देखो, ये वार्ताएं हो रही थीं, इतने में राजा रावण आ पहुँचे, राजा रावण ने कहा-आईये, भगवन! आप मेरी लंका का भ्रमण कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-धन्य है। मुनिवरो! देखो, वह भ्रमण करने लगे। राजा रावण सबसे प्रथम उस भवन में ले गये, जिसका निर्माण महात्मा कुबेर ने किया था, जब कुबेर भवन में ले गये तो उन्हें कहा-भगवन! यह कुबेर भवन है इसका निर्माण कुबेर ने किया है। मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण ने कहा-प्रभु! मेरे से प्रथम लंका का स्वामी महाराजा कुबेर था और कुबेर से पूर्व लंका का स्वामी महाराजा महीदन्त था और महाराजा महीदन्त से पूर्व लंका का स्वामी महाराजा शिव था और महाराज शिव से पूर्व लंका का स्वामी विक्रम था और विक्रम से पूर्व लंका का स्वामी मानक्रीती था और मानक्रीती से पूर्व लंका था स्वामीत्व कर ने वाला, व्रेतकेतु था और व्रेतकेतु से पूर्व लंका का स्वामी मांधाता था और मांधाता से पूर्व लंका स्वामी कृतिभानु था, रेंगणी था, स्वामभुक था, मुनिवरो! देखो, कात्यानी वृत्तियों में बहुत से नामों का उदगीत गाया। उद्गीत गा करके आज मैं बेटा! पूर्व की भाँति तो गान नहीं गाऊँगा, परन्तु विचार केवल इतना तो अवश्य है सम्भूति ब्रह्मे सम्भूति लोकां वाचन्नं ब्रहे वाचो ब्रह वृत्ती देवाः हे प्रभु! मेरी लंका में ये ऊँचे-ऊँचे भवन है, स्वर्ण के भवन है। हे प्रभा सम्भव लोकां वायु वृत्ति देवाः हे प्रभु! देखो, यह स्वर्ण के भवन, जो वायु की आभा में अवृत्त हो रहे हैं, गमन करने वाले है। मेरे प्यारे! देखो, ऊँचे-ऊँचे भवन, गतिवान होने वाले भवन, नाना उन्होंने भ्रमण कराये। मेरे प्यारे! देखो, ऋषिवर अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके, राजा रावण अपनी चर्चाएं करने लगे और चर्चा करते करते उन्होंने कहा राजा रावण अब रात्रि छा गई है और रात्रि छाने के पश्चात विश्राम करना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज, राजा रावण मानो उनको अपने विश्राम गृह में ले गये, शेष चर्चाएं, मुनिवरो! देखो, कल प्रगट की जा सकेंगी। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि मुनिवरो!

देखो, यह संसार अपने में प्रतिभाषित होता रहा है और ज्ञान और विज्ञान मुनिवरो! देखो, यह मानव का एक मौलिक गुण कहा गया है और राष्ट्र अपने में देखो, आभा में रत्त होता रहा है। यह राष्ट्र की चर्चा तो बेटा! हम कल ही प्रगट करेंगे।

अनुशासन की अनिवार्यता

आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गाते हुए, आभा में रत्त होते हुए अपने में अपनी वृत्तियों में रत हो करके बेटा! देखो, यह विचारते चले जाएं कि अनुशासन बहुत अनिवार्य है, अनुशासन के बिना राष्ट्र और समाज और ऋषिवर बेटा! कोई भी ऊँचा नहीं बनता। इसलिए अनुशासन होना बहुत अनिवार्य है, आत्मा के अनुकूल मानव को अपने क्रियाकलापों को परिणत करना चाहिए और इससे विपरीत की चर्चाएं तो कल ही उच्चारण करूँगा यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए परमात्मा को सर्वज्ञ, अपना पुरोहित स्वीकार करके इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करे। यह है बेटा! आज का वाक्, समय मिलेगा, शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकेंगे। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मां पृ वरुणा वाचन्नमः। ओ३म् मधु मन्था वायु रथं पृवरूणां आ पाः ऋषि 7/9/1988 दाहा, बागपत।

८ रावण राष्ट्र में विज्ञान 08 09 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद-मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद-वाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गये हैं, याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। मानो वह उसी में व्याप्त है। तो वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं, जिस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना प्रकार की उड़ानें उड़ते रहे हैं और विचारते रहे है कि वे परमपिता परमात्मा क्या है, जिसे हमें पाना है। अथवा जिसकी आभा में हमें रत्त रहना है।

साधना

तो मुनिवरो! देखो, जो साधक होते हैं वे परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर विचारते रहते हैं, परमात्मा ने ये संसार रचाया है ये कैसा अनुपम है? मानो एक-एक परमाणु, परमाणु से गुँथा हुआ है, एक तरंग, तरंगों से मानो सुगठित रहती है। तो मुनिवरो! जैसे मानव एक दूसरे में पिरोया हुआ सा है वैसे ही प्रत्येक प्राणी मात्र बेटा! एक-दूसरे में पिरोया हुआ दृष्टिपात आता है जैसे मानो चारों प्रकार की सृष्टि है वह भी एक दूसरे में पिरोयी हुई है एक-दूसरे की सहायक बनी हुई है तो इसी प्रकार परमात्मा के इस अनुपम ब्रह्माण्ड के ऊपर मानव अपनी उड़ानें उड़ता रहता है और वह साधक बन करके मानो उस आभा में रत रहते हैं जिसमें वे प्रवेश करके अपने मनोनीत प्रभु की आभा में रत हो जाते हैं। तो मुनिवरो! देखो, यहाँ विचार आता रहता है प्रत्येक मानव साधक बनना चाहता है, प्राणी मात्र एक साधक बना हुआ मानो देखो, साधना कर रहा है और वह उस महान देव की, उस आराध्य देव की महिमा में रत्त होने के लिए तत्पर है। तो इसलिए मानव को रंगना चाहिए, परन्तु वह अपने में, अपने पन और संसार की प्रतिभा को अपने में दृष्टिपात करता रहे। इस संसार के जितने भी अव्यव हैं वे एक-दूसरे में पिरोये हुए हैं।

राष्ट्रपिता

तो मुनिवरो! देखो, इस विचार को मैं विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह कि जैसे राष्ट्रवेत्ता के है, राष्ट्रवेत्ता भी राष्ट्र के विचार एक-दूसरे से गुँथे हुए रहते हैं, क्योंकि इससे पूर्व काल में, हम एक अनुशासन की चर्चा कर रहे थे, अनुशासन की प्रतिभा में रत हो रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, आचार्यजनों के चरणों में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे हैं, वे जो अध्ययन की प्रतिक्रियाएं हैं वे बड़ी विचित्रत्व मानी गई हैं। परम्परागतों से बेटा! उसके सम्बन्ध में यह मानव उड़ाने उड़ता हुआ, विचारता रहा है और यह विचारता रहता है कि परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है अथवा जिसमें हम सब विद्यमान है ये संसार एक प्रकार की राष्ट्रीय वेदी के स्वीकारने, वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता है। संसार का पिता है और हम सब जितने प्राणी है मानो उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में वास करते रहते हैं। मुनिवरो! देखो, मानव जब परमात्मा के राष्ट्र के सम्बन्ध में विचारने लगता है तो बेटा! वहाँ आलस्य, प्रमाद का क्षय हो जाता है। प्रमाद और देखो, आलस्य नहीं रह पाता, न अन्धकार है। वहाँ केवल ज्ञान रूपी प्रकाश, मानव को केवल ज्ञान के लिए बाध्य करता रहता है। तो इसलिए बेटा! देखो, मानव इस सम्बन्ध में भी विचारता रहा है। वेद का एक मन्त्र नहीं, नाना मन्त्र इस प्रकार के आते रहते हैं।

अनुशासन से राष्ट्र

आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं राष्ट्र की चर्चा कर रहा था, इससे पूर्व काल में भी राष्ट्र की चर्चाएं की। आज मैं बेटा! तुम्हें राष्ट्र के उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जैसा हमने पूर्व काल में वर्णन करते हुए कहा था कि ये जो संसार है यह बेटा! देखो, भवनों से ऊँचा नहीं बना करता है, यह जो मानो देखो, राष्ट्रवाद है यह मुनिवरो! देखो, विज्ञान से भी ऊँचा नहीं बनता, यह उस काल में ऊँचा बनता है जब एक दूसरा मानव अनुशासन में निहित रहता है। मुनिवरो! देखो, राजा अनुशासन में हो, उसका मन अनुशासित हो और मन में तपस्या के भाव और ब्रह्म ज्ञान के तन्तु होने चाहिए और मुनिवरो! देखो, राष्ट्र के जो कुल पुरोहित होते हैं उनके अनुसार अपने राष्ट्र की प्रणाली को संचालित करने वाला हो। तो मेरे प्यारे! देखो, ऐसा जो राष्ट्र है, वह अपने में अनुशासन बनाए रखता है, और अनुशासन का नाम ही राष्ट्र है। जब राजा स्वयं अनुशासन में रहता है तो प्रजा भी अनुशासन में रहती है और जब प्रजा अनुशासन में रहती है तो वायु मण्डल पवित्र बना रहता है। मेरे प्यारे! समय पर वृष्टि होती है, समय पर मुनिवरो! देखो, सब क्रियाकलाप प्रकृति के हुआ करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, विचारों से ही तो गृहों का निर्माण होता है। माता-पिता जब गृह में सुसज्जित होते हैं तो मानो देखो, उनके विचार याग में, महानता में परिणत रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, वह गृह पवित्र होता है और गृह की पवित्रता मेरे पुत्रो! मानव के विचारों पर निर्धारित रहती है। जैसे राजा का राष्ट्र राजा के विचारों पर, माता-पिता के विचारों पर देखो, गृह और आचार्य के विचारों पर मानो विद्यालय निहित रहता है।

राजा रावण का राष्ट्र

तो मेरे पुत्रो! देखो, आज मैं विशेष सम्बन्ध में चर्चा देने नहीं आया हूँ। विचार क्या, मुनिवरो! देखो, मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ, राजा रावण के उस राष्ट्र में, जहाँ मुनिवरो! देखो, मानव अपने में उड़ाने उड़ता रहा है। तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण जब महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज के सहित बेटा! अपने राष्ट्र में भ्रमण करने लगे। तो भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, राष्ट्र में जब उन्होंने नाना भवनों को दृष्टिपात किया, स्वर्ण के गृहों को दृष्टिपात कराने लगे। राजा रावण ने कहा-प्रभु! यह मेरा मानो राष्ट्र है जिसमें स्वर्ण के गृह है, यहाँ स्वर्ण के गृह का निर्माण महाराजा शिव ने भी कराया था। स्वर्ण का एक भवन है जिसको कोलुवर्ततो भवन कहते हैं मानो देखो, इसका निर्माण मांधाता ने कराया था। यहाँ देखो, जैसे कुबेर भवन है, ऐसे-ऐसे भवन हैं। इसी प्रकार मांधाता भवन कहलाता है। नाना प्रकार के मानो देखो, यहाँ ज्ञान और विज्ञान के ऊपर उड़ानें उड़ी जाती हैं। मेरे वृण स्वाहा मुनिवरो! राजा रावण ने कहा मेरे जो विधाता कुम्भकरण है मानो ये बाल्य काल के सुनेतुकेतु नाम के ब्रह्मचारी है। मानो बाल्यकाल का नाम सुनेतुकेतु है। मानो देखो, यह कुम्भकरण छः माह तक विद्यालय में अनुसन्धान और ब्रह्मचारियों को शिक्षा देते है और छः माह तक यह मानो देखो, भयंकर वनों में, हिमालय की कन्दरा में चले जाते हैं। वहाँ विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान करते रहते हैं। यह उनका स्थान है मानो इसको हमारे यहाँ देखो, वरुण भवन के नाम से, यह भव्यता में हमें दृष्टिपात आ रहा है।

रावण राष्ट्र की विज्ञान शालाएं

मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है राजा रावण ने महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज को अपने राष्ट्र में भ्रमण कराते हुए वे विज्ञानशाला में ले गये और विज्ञानशाला में सबसे प्रथम उस विज्ञान भवन में ले गये, जहाँ मुनिवरो! देखो, पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा था। उन्होंने कहा-प्रभु! ये नाना विज्ञानवेत्ता हैं ये पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान करते रहते हैं पृथ्वी में गुरुत्व परमाणु है, उस परमाणु की आभा में लगे रहते हैं, और जानना चाहते हैं कि पृथ्वी

के गर्भ में कितनी दूरी पर कौन-सा खनिज विद्यमान है। कौन-सा खनिज कहाँ प्राप्त हो सकता है। मानो मेरे राष्ट्र में ये नाना विज्ञानवेत्ता इस आभा में मानो परिणत है।

मेरे पुत्रो! देखो, आगे जब भ्रमण कराने लगे तो उन्होंने कहा प्रभु! यह हमारे यहाँ जल अनुसन्धानशाला है। जल के ऊपर अन्वेषण होता रहता है, क्योंकि पृथ्वी में जब जल गमन करता है तो मानो कहीं किसी प्रकार का जल है, कहीं किसी प्रकार का स्वादन-जल गमन कर रहा है। तो उसके ऊपर हमारे यहाँ ये विज्ञानवेत्ता देखो, पाठ्यक्रम करने वाले इसके ऊपर अनुसन्धान कर रहे हैं और करते रहते है। मेरे प्यारे! देखो, यह जल प्राणवर्धक है, प्राणों को संचार रूप में संचारित कर रहा है।

मुनिवरो! देखो, आगे भ्रमण कराते हुए वे चन्द्र अनुसन्धानशाला में ले गये कि चन्द्रमा किस समय पर, समुद्र में से, किस प्रकार से जलों का उत्थान करता है और जल की अन्तरिक्ष में क्या प्रतिक्रिया होती है, परमाणु रूप में किस प्रकार बनता है, चतुर्दशी के और पूर्णमासी के दिवस मानो देखो, चन्द्रमा जहाँ विशेष जल को अपने में सिंचन कर लेता है, समुद्रों से, तो मानो कहीं विशेष देखो, अति वृष्टि और अनावृष्टि के रूप में परिणत हो जाता है। उसके ऊपर अनुसन्धान करते रहते हैं विज्ञानवेत्ता, हे प्रभु! ये विज्ञानशालाएं हैं।

सूर्य अनुसंधानशाला

आओ देखो, भगवन! देखो यह सूर्य अनुसन्धानशाला है ये सूर्य ऊर्जा के देने वाला है। ये सूर्य मानो देखो, प्रकाश और तेजोमयी बना हुआ है मुनिवरो! देखो, इसके ऊपर अन्वेषण करने वाले, विज्ञानवेत्ता यह अनुसन्धान कर रहे हैं कि सूर्य कैसी ऊर्जा, किस समय देता है? कौन से राष्ट्र पर कौन सी किरणें अपने प्रभाव से प्रभावित कर लेती हैं और पृथ्वी किस-किस प्रकार का खनिज, किस-किस प्रकार का खाद्य, कहाँ-कहाँ प्रदान करती है। मानो देखो, ये सूर्य की ऊर्जा अपने क्रियाकलाप में लगी रहती है। तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण ने कहा प्रभु! यह मेरे यहाँ सूर्य अनुसन्धानशाला है मानो सूर्य की किरणों के आश्रित कुछ यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं, अन्तरिक्ष में गमन कर रहे हैं। मानो देखो, कुछ यहाँ सूर्य यात्री हैं, कुछ यहाँ मानो चन्द्रयात्री हैं, कुछ शुक्र यात्री हैं। नाना प्रकार की देखो, यात्रा करने वाले, यन्त्र इसी ऊर्जा से प्राप्त करते रहते हैं।

तो मुनिवरो! देखो, जब इस प्रकार का विज्ञानमयी ऋषि ने दृष्टिपात किया, तो महात्मा कुक्कुट मुनि बोले-हे रावण! मुझे इतना प्रतीत नहीं था कि तुम्हारा राष्ट्र इतना भव्य है। तुम्हारा राष्ट्र तो मुझे बहुत ही प्रिय लग रहा है। मुझे तो तुम्हारा राष्ट्र मानो देखो, ऐसा प्रतीत होता है जैसे तुम सर्वत्र ब्रह्माण्ड का ज्ञान और विज्ञान तुम्हारे समीप हो। मेरे प्यारे! आगे रावण ने भ्रमण कराते हुए मुनिवरो! देखो, अपने पुत्र नारान्तक के द्वार ले गये। उन्होंने कहा-प्रभु! यह मेरा पुत्र नारान्तक है। यह मानो देखो, लोक लोकान्तरों की यात्रा करते रहते हैं। यह चन्द्र यात्रा में रत रहते हैं। कही मानो और भी लोक लोकान्तरों की यात्रा में प्रवेश कर जाते हैं।

वैज्ञानिक नारान्तक

मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है नारान्तक से कुक्कुट जी ने प्रश्न किया, कहा-हे, राजकुमार! तुम्हारी विज्ञान में, कितनी गति है चन्द्रमा में कितनी गति है? उन्होंने कहा-प्रभु! एक रात्रि और एक दिवस मेरे लिए चन्द्रमा में जाने के लिए बहुत है। हे भगवन! एक यन्त्र मेरे यहाँ ऐसा है जो मैंने महर्षि भारद्वाज मुनि से प्राप्त किया है, मैंने उन्हीं के चरणों में विद्यमान हो करके, इस विज्ञान की शिक्षा की प्राप्त किया है। हे प्रभु! वह यान ऐसा है, कि इस पृथ्वी मण्डल से, मेरी विज्ञानशाला से वह यान उड़ान उड़ता है और उड़ान उड़ करके ही वह चन्द्रमा में जाता है, चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है तो शुक्र में चला जाता है। शुक्र से उड़ान उड़ता है तो बुध में चला जाता है।

बुध से उड़ान उड़ता है तो वह मंगल में चला जाता है। मंगल से उड़ान उड़ता है तो यह मेरा यान मानो मृचिका मंडल में चला जाता है। मृचिका मंडल से उड़ान उड़ता है, तो रोहिणी केतु मण्डल में चला जाता है। रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ता है तो पुष्य नक्षत्र में चला जाता है। पुष्य नक्षत्र से उड़ान उड़ता है तो व्रातकेतु मण्डल में प्रवेश कर जाता है। व्रातकेतु मण्डल से उड़ान उड़ता है तो अरून्धती मण्डल में चला जाता है। अरून्धती मण्डल से उड़ान उड़ता है तो वशिष्ठ में चला जाता है। वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ करके यदि आगे गमन करता है तो रोहिणी कृतिका नक्षत्र मे ओत-प्रोत होता है। और रोहिणी नक्षत्र मानो देखो, वहाँ से उड़ान उड़ करके तो मृचिभोमकेतु मण्डल में प्रवेश कर जाता है। तो मुनिवरो! देखो, वे कहते हैं कि हे प्रभु! मैं कहाँ तक वर्णन करूं, यह बहत्तर लोकांे का भ्रमण करके मेरा यान मेरी ही विज्ञानशाला में पुनः प्रवेश कर जाता है।

त्रेताकालीन शल्य चिकित्सा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार श्रवण किया, तो बड़े मगन हो गये, हर्ष ध्वनि करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, आगे राजा रावण ने भ्रमण कराते हुए मुनिवरो! देखो, वह चिकित्सा-शाला में ले गये जब सर्वत्र विज्ञानशालाओं का भ्रमण कर लिया तो वह अश्विनी कुमार जो महात्मा भुंजु के दोनों पुत्र वह मानो आयुर्वेद के मर्म को जानते थे, उनके यहाँ देखो, एक वैद्यराज थे। जिनका नाम सुधन्वा कहलाया जाता, सुकेन वैद्य भी उन्हें कहते थे। परन्तु देखो, जब महर्षि कुक्कुट और राजा रावण भ्रमण करते हुए अश्विनी कुमारों के द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने कहा-प्रभु! ये अश्विनी कुमार है, और ये सुकेन वैद्यराज के चरणों में अध्ययन करते रहते हैं। मेरे यहाँ यह चक्रतां भूषं ब्रहे यह ऐसी विज्ञानशाला है जिसमें मानव के, आयुर्वेद के, ऊपर अन्वेषण होता रहता है और वैज्ञानिक रूपों से उसका निरीक्षण किया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने अश्विनी कुमारो से कहा-कहो, भगवन। तुम्हारी इस आयुर्वेद में कितनी गति है? उन्होंने कहा-प्रभु! आयुर्वेद में इतनी गति अब तक जान पाये हैं कि मानव के हृदय को और मानव के शरीर दोनों को हम पृथक्-पृथक् कर देते हैं और उसको ओषधियों में नृत कर देते हैं और छः-छः माह के पश्चात दोनों का समन्वय करके पुनः गति आ जाती है। पुनः देखो, वह शरीर गतिवान हो जाता है। हे प्रभु! अब तक हम इस मानव के सम्बन्ध में इतना जान पाए हैं। आपको यह तो प्रतीत होगा कि मैंने देखो, महात्मा दधीचि के यहाँ, एक विद्या को प्राप्त किया था, कि मानव के कण्ठ के भाग को दूरी कर दिया जाए और पुनः मानो कुछ ओषधियों का लेपन करने से पुनः मानव का कण्ठ ज्यों का त्यों स्थिर हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब अश्विनी कुमारो ने इस प्रकार निर्णय कराया तो ऋषि, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए, वे राजा रावण सुकेन वैद्य के मानो आयुर्वेदाचार्य के द्वारा ले गये कि महाराज! यह हमारे यहाँ वैद्यराज है। वैद्यराज ने बेटा! ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा कि ऋषि का और हमारा मानो दोनों का तारतम्य है। यह महान है, तपस्वी है और हम मानो देखो, इस प्रकृति के तत्वों के ऊपर विचार विनिमय ही करते रहते हैं। आप परमपिता परमात्मा की आभा में सदैव निहित रहते हैं।

भगवन! तो मुनिवरो! देखो, उनसे वार्ता प्रगट करने लगे। उन्होंने कहा-कहो, सुकेन! तुम्हारी कितनी विशाल गति है? उन्होंने कहा-हे प्रभु! हमारी गति ही क्या है, जो अश्विनी कुमारो ने निर्णय कराया, वह ही हमारी गति है। और भी नाना गतियाँ है मानव के सम्बन्ध में, हम इस शरीर के यन्त्रों के द्वारा मानो देखो, मन का भी अब तक निरीक्षण नहीं कर सके हैं। देखो, कितना बड़ा विज्ञान हमारे यहाँ है और आयुर्वेद भी है अब तक मन का ही चित्रण नहीं कर सके हैं, चित्र नहीं ले सके हैं। तो प्रभु! हमारा विज्ञान अभी अधूरा ही कहलाया गया है। तो मेरे प्यारे! इतना विशाल विज्ञान होने पर भी परमात्मा के राष्ट्र में वह अधूरा विज्ञान है।

तो विचार आता रहता है बेटा! ऋषि और राजा दोनों भ्रमण करते हुए, वैद्यराज को भी त्याग करके बेटा! वह मार्ग-शालाओं में ले गये और मार्ग-शालाओं में जहाँ मार्गवेत्ता बेटा! देखो, मार्गों के ऊपर अनुसन्धान कर रहे थे। सुन्दर-सुन्दर मार्ग-शालाएं हैं, मार्गों के निर्माण हो रहे हैं। मानो देखो, वे राष्ट्र में भी निर्माण है, क्रियाकलापों में भी निर्माणित हो रहे हैं। उन्होंने कहा-कि भगवन! मेरे यहाँ यह मार्गशाला है, मार्ग शाला के विशेषज्ञ है। तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण अपने राष्ट्र का भ्रमण कराने के पश्चात अन्त में बेटा! मौन हो गये और मौन होने के पश्चात मुनिवरो! देखो, ब्रह्म भूषणं कृताम् तो मुनिवरो! राजा रावण ने जब यह प्रश्न कि महाराज मेरा राष्ट्र आपको कैसा प्रतीत हुआ है। हे प्रभु! आप ने मेरे राष्ट्र का भ्रमण किया है। आप ब्रह्मवेत्ता हैं, आप राष्ट्र की निम्न प्रति क्रिया को भी जानते हैं। हे प्रभु! आप ने क्या दृष्टिपात किया? मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट ने कहा, रावण! मैं तुम्हें क्या उत्तर दे सकता हूँ? रावण ने कहा-प्रभु! जो आप ने दृष्टिपात किया, आप उच्चारण कीजिए? क्योंकि ऋषि स्पष्ट वक्ता होते हैं। देखो, ऋषि राज से या किसी भी वाक् से उपरामता को प्राप्त हुआ करते हैं। आप की जो इच्छा है, वह प्रगट करो।

रावण राष्ट्र में अग्नि का कारण

राजा रावण के वाक्यों को पान करके ऋषि ने कहा हे रावण! तुम्हारा राष्ट्र मुझे बहुत प्रिय लगा है। परन्तु उसके पश्चात भी मैं तुम्हारे राष्ट्र में यह अनुभव कर रहा हूँ, दृष्टिपात करने के पश्चात, कि तुम्हारे राष्ट्र में अग्नि प्रदीप्त हो जाएगी। जब राजा रावण ने यह श्रवण किया, तो रावण ने कहा प्रभु! ऐसा आपने क्यों कहा? उन्होंने कहा-हे रावण! तुम्हारे राष्ट्र में ऊँचे-ऊँचे भवन हैं, स्वर्ण के भवन हैं तुम्हारे राष्ट्र में देखो, नाना चिकित्सा-शालाएं हैं और नाना विज्ञानशालाएं है। जैसे पृथ्वी अनुसन्धानशाला, जल अनुसन्धानशाला, अग्नि अनुसन्धानशाला, चन्द्र अनुसन्धानशाला, सूर्य अनुसन्धानशाला और नाना देखो, यन्त्र शालाएं हैं और चिकित्सा-शालाए भी हैं। हे प्रभु! उसके पश्चात भी मुझे ऐसा दृष्टिपात हुआ। रावण ने कहा-प्रभु! ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने कहा हे रावण! इतनी शाला होने के पश्चात यदि राजा के राष्ट्र में कोई चरित्रशाला नहीं हुआ करती है तो राजा का राष्ट्र नष्ट हो जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब कुक्कुट ऋषि ने यह वाक् कहा तो रावण ने नतमस्तिष्क हो करके बेटा! ऋषि के चरणों में ओत-प्रोत हो गये। उन्होंने कहा-प्रभु! वास्तव में मेरे राष्ट्र में चरित्र का अभाव है। महात्मा कुक्कुट मुनि बोले हे राजन! तुम्हें प्रतीत है जब तुम्हारे महापिता महात्मा पुलस्त्य मुनि महाराज ने तुम्हारा राज्याभिषेक किया था, तो उस समय राज्याभिषेक की मुझे अध्यक्षता प्रदान की गयी और मैंने तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन करके, हृदय का अध्ययन करते हुए मैंने यह कहा था पुलस्त्य ऋषि से कि मैं इसका राज्याभिषेक नहीं करूंगा। उस समय तुम्हारा बाल्यकाल का नाम वरुण था। वरुण ब्रह्मचारी का मैं राज्याभिषेक नहीं करूंगा। उन्होंने कहा क्यों? क्योंकि यह मानो देखो, इस राष्ट्र और समाज को विज्ञान दे सकता है, परन्तु चरित्र नहीं दे सकता। ये राजा हो करके विज्ञान क्या देखो, नाना प्रकार के सुखद दे सकता है, भौतिक आनन्दवत करा सकता है, परन्तु आध्यात्मिकवाद से वंचित करा देगा समाज को। तो मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा-रावण! मैंने उस समय यह वाक् कह करके अपने आसन को त्याग दिया था, तो महात्मा भुंजु ने तुम्हारा राज्याभिषेक किया।

मेरे प्यारे! देखो, रावण ने यह स्वीकार किया। मुनिवरो! देखो, राजा रावण इतना वाक् उच्चारण करके वह भी अपनी स्थली को चले गये। ऋषि ने कहा हे राजन! अब मुझे आज्ञा दीजिए, अब मैं गमन कर रहा हूँ अपने आश्रम को। मेरे प्यारे! देखो राजा रावण ने अपने वाहन में विद्यमान करा करके उन्हें उनके आश्रम के लिए गमन कराया।

चरित्र से मानव

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या चल रहा है, विचार यह चल रहा है कि मानव को अपने में चरित्र की आभा, चरित्र का अभाव नहीं होना चाहिए, उसका भाव होना चाहिए। राजा का राष्ट्र हो या गृह हो, माता-पिता हो और विद्यालय हो, कोई भी स्थली हो, परन्तु जब तक मानव के द्वारा चरित्रता रहती है, मानवीयता रहती है मुनिवरो! देखो, उसी काल में ये समाज पवित्रता को प्राप्त होता रहता है। आज का हमारा यह वाक्, अब समाप्त होने जा रहा है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् दिव्यां गतं ब्रह्मणा वायु रथं गाया। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अपने बहुत प्रिय विचारों में, राष्ट्रीयता का चित्रण कर रहे थे। परन्तु जहाँ हमारी यह वाणी जा रही है वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा सदैव यजमान के साथ रहता है। मैं यह कहता रहता हूँ हे यजमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि यह जो वर्तमान का काल चल रहा है, इस वर्तमान के काल को, मैं वाममार्ग का काल कहा करता हूँ। वाम मार्ग उसे कहते हैं, जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे कि राजा रावण के यहाँ चरित्र का अभाव था, वही आधुनिक जो जगत है वहाँ भी चरित्र का अभाव है। जहाँ चरित्र का अभाव, राजा के राष्ट्र में होता है, आहार और व्यवहार दोनों भ्रष्ट हो जाते हैं। उस काल को मैं वाम मार्ग का काल कहा करता हूँ। वाम मार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला होता है, और सुल्टे मार्ग की निन्दा करने वाला होता है। तो वह जो समाज, वह जो काल है वह वाम मार्ग से गुँथा हुआ होता है।

तो इसलिए आज का विचार, पूज्यपाद गुरुदेव ने जो अभी-अभी अपने वाक्यों में प्रगट किया है। रावण के काल में भी एक वाम मार्गीय काल बन गया था। वाममार्गीय राष्ट्र हो गया था। परन्तु उस काल में देखो, महापुरुषों ने या ऋषि मुनियों ने अपनी गोष्ठियाँ करते हुए उस वाममार्ग काल को नष्ट कराया। परन्तु जब मैं आधुनिक काल में प्रवेश करता हूँ, यहाँ ऐसा एक काल है जिसमें भी नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं। ईश्वर के नाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ पनप रही हैं। वह एक वाममार्ग कहलाया जाता है क्योंकि यथार्थ मार्ग, यथार्थता को न जान करके, ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियाँ हैं वह राष्ट्र तक सीमित रह करके और राष्ट्र को भी वह नष्ट भ्रष्ट करने में तत्पर रहती हैं। इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से क्षमा पाते हुए यह कहा था कि आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है अथवा राष्ट्र के कर्मवेत्ता है उनके यहाँ अनुशासन नाम की कोई वस्तु नहीं है। क्योंकि जब अनुशासन नहीं है तो राष्ट्र कैसे ऊंचा बनेगा। क्योंकि केवल पद की लोलुपता के लिए, एक मानव मानव का संहार कर रहा है। इस प्रकार का यह जगत, इस प्रकार का यह राष्ट्र बनता जा रहा है। तो इसे मैं वाममार्ग का काल कहता हूँ। हे यजमान! तेरे जीवन का इसलिए सौभाग्य बना रहना चाहिए क्योंकि ऐसे वाम मार्ग के काल में तू भव्य देवताओं के भोज में लगा हुआ है। ये तेरा सौभाग्य है।

राष्ट्र में रूढ़ियाँ

आज मैं देखो, इस सम्बन्ध में कोई विशेषता नहीं। केवल यह कि हे राजन! यदि तू अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है। तो तेरे राष्ट्र में, ईश्वर के नाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। परन्तु वाक् उच्चारण कर सकते हैं; तो मैं भी अपने विचारों में यह व्यक्त करता रहा हूँ कि समाज में देखो, नरसंहार हो रहा है, केवल ईश्वर के नामों पर, ईश्वर के नाम पर मानव का संहार किया जा रहा है। मेरी पुत्रियों के श्रृंगार को हनन किया जा रहा है। जब इस प्रकार का राष्ट्र हो जाता है अरे राजा, जब पुत्रियों की रक्षा नहीं कर सकता। मानव,

मानव की रक्षा नहीं कर सकता वह राष्ट्रवेत्ता नहीं कहा जायेगा, उसको राष्ट्रवेत्ता नहीं कह सकते। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था कि राजा को ब्रह्मवेत्ता हो करके, राष्ट्र को ऊंचा बनाना है। आज वह ब्रह्मवेत्ता इतने है कहीं देखो, उनकी आयु की कामना करने वाला ब्राह्मणत्व हो तो उसका पूजन करते हैं वह मानो देखो, उस पूजन में लगे हुए हैं। वह पूजन के रहस्यों को नहीं विचार पाते। क्योंकि जब वेद का अध्ययन नहीं करते, ऋषि-मुनियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन नहीं करते तो उनका जीवन अधूरेपन में परिणत रहता है।

आज मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय देना है। हे प्रभु! महाभारत काल के पश्चात नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हुआ, उन रूढ़ियों में वाम मार्ग की तरंगें विद्यमान रहती हैं। तो मैं यह कहता रहता हूँ कि तुम इन तरंगों को नष्ट करो और मानव समाज को ऊर्ध्वा में ले जाओ, क्योंकि राष्ट्र ही उनको ऊंचा बना सकता है।

राष्ट्र का कर्तव्य

अब राष्ट्र कैसे ऊंचा बनाए, देखो, जितने भी धर्मज्ञ हैं, जितनी भी रूढ़ियाँ हैं उन रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करना चाहिए। उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए, तर्क, सिद्धान्त के आधार पर होना चाहिए और राजा उनकी मध्यस्थता करने वाला हो, राजा ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए, ब्रह्मज्ञान में उसकी उड़ानें होनी चाहिए और देखो, जो भी तर्क और सिद्धान्त और मानवीयता, आत्मीयता पर, राष्ट्रीयता पर स्थिर हो जाये वह धर्म और मानवता को अपना लेना चाहिए। ये राष्ट्र का कर्तव्य होना चाहिए। यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहता है, परन्तु राष्ट्र की प्रणाली इस प्रकार की है, कि वह कहते हैं कि यह जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं प्रभु के नामों पर, इनका संघर्ष होता रहे, इनमें रक्त को बहाया जाना चाहिए और हमें अपनी राष्ट्रीय प्रणाली में बने रहना चाहिए। ऐसी मानो देखो, विचारधारा है। जो एक समय मुनिवरो! देखो, इस संसार में अग्नि काण्ड हो करके, यह संसार, यह समाज अग्नि के मुख में परिणत हो जाएगा। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वाक् प्रगट किए कि यह जो समाज है, यह जो आधुनिक काल का राष्ट्र है यह बड़ा विचित्र बनता चला जा रहा है। प्रत्येक मानव पद की लोलुपता में, अपने को नष्ट कर रहा है। अपने को भष्म कर रहा है क्योंकि प्रभु का नामोकरण न रहने पर, अपने ऊपर आत्मविश्वास न रहने पर, और अनुशासन न रहने पर यह सब प्रतिक्रिया उसके मनों में, गृह स्थलियों में विद्यमान रहती है।

भगवान राम का जीवन

तो इसलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय कराना चाहता हूँ कि देखो, यहाँ राम की कल्पना करता रहता है। अरे, राम तो प्रातःकाल मानो देखो, चन्द्रमा और तारा मण्डलों की छाया में अपने आसन् को त्याग देते थे, अपने क्रियाओं में रत हो करके और वह अपने क्रियाकलापों से परिणत हो करके मानो अपने को प्रभु के आंगन में ले जाते। आधुनिक काल के जो राष्ट्रवेत्ता हैं वे अपने आसन को जव त्यागते हैं जब सूर्य सम्भूतियों में परिणत हो जाता है तो तब राजा स्थान को त्यागता है। आहार क्या कर रहा है? आहार मानो देखो, सूक्ष्म सूक्ष्म प्राणियों को, अग्नि में तपा करके उनके रस को पान करने वाला है। अरे, जब रसना का इतना रसोस्वादन करने वाला है तो वह राष्ट्र को कैसे ऊंचा बना सकता्र है। आज कई काल से मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह प्रकट कराते हुए कहा है कि वह राजा होना चाहिए जैसे भगवान् राम या भगवान् कृष्ण के जीवन का देखो, कुछ वाक् मुझे स्मरण आते रहते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे निर्णय कराये हैं कि वह अपनी स्थलियों को त्याग करके, प्रभु का चिन्तन करते थे। आज प्रभु का नामोकरण न रह करके वह नाना प्राणियों के रस का भक्षण कर जाते हैं इनकी रसना में इस प्रकार का रसास्वादन गृहीत कर गया है तो समाज और राष्ट्र कैसे ऊंचा बनेगा। मैं अपने प्रभु से कहा करता हूँ हे भगवन! यह राष्ट्र कैसे ऊंचा बने? परन्तु देखो, यह तो इतना उच्चारण कर देते हैं कि यह राष्ट्र

अपने में तब ऊंचा बनेगा जब राष्ट्र और समाज में मानवीयता और स्वयं परिश्रम करने वाला राजा बनेगा। तो इस प्रकार मैं भी उन्हीं वाक्यों को कहता रहता हूँ। महाराजा अश्वपति की चर्चाएं और भी नाना चर्चाएं महाराज दिलीप जितना रघुवंश था इनकी चर्चाएं भी इसी प्रकार की आती रहती हैं।

मानवता से राष्ट्रीय प्रणाली

तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को इतना ही वाक् उच्चारण करने के लिए आया हूँ हे राजन! यदि तू इस समाज को ऊंचा बनाना चाहता है, नर संहार को समाप्त करना चाहता है, तो तेरे राष्ट्र में मानो देखो, एकोकीकरण होना चाहिए। एकोकीकरण यदि नहीं होगा तो समाज में मानवता नहीं आ सकेगी और जहाँ मानवता नहीं होती वहाँ राष्ट्रीय प्रणाली भ्रष्ट हो जाती है और जहाँ राष्ट्रीय प्रणाली भ्रष्ट हो जाती है तो वहाँ एक-दूसरे के प्राणों को हनन करने वाला समाज बन जाता है। तो आज मैं इतना वाक उच्चारण करने के लिए, प्रभु को निर्णय देने के लिए आया हूँ। आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने राजा रावण के राष्ट्र का चित्रण किया, ऋषि के उदगार, वाक् प्रगट कराए कि राष्ट्र भवनों से निर्माणीत नहीं होता, यह विज्ञान से ऊंचा नहीं बनता, यह उस काल में ऊंचा बनता है जब चरित्र और मानवता मानो देखो, सर्वत्रता में विद्यमान होती है।

अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से क्षमा चाहता हूँ परन्तु आज का विचार कि हे यजमान! मेरी अन्तरात्मा यजमान के साथ में रहता है। तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और द्रव्य का, गृह में सदैव सदुपयोग होता रहे, ऐसी कामना के साथ, आज हम अपने विचारों को विराम दे रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किये, इनके विचारों में सदैव दाह रहती है और एक ऐसी विडम्बना निहित रहती है कि वह अपने को, राष्ट्र को महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में ले जाते है और ये ऐसा ही राष्ट्र चाहते है जहाँ वैदिकता का प्रसार हो, राजा स्वयं याज्ञिक बनने वाला हो, ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करने वाला हो, समाज उसके अनुसार बरतने वाला हो, ऐसा मेरे प्यारे महानन्द जी सदैव चाहते है, ये राम का क्या, ये विष्णु राष्ट्र चाहते है। विष्णु के राष्ट्र में क्योंकि जैसा राम का राष्ट्र था, वह विष्णु राष्ट्र कहलाया गया। इसी प्रकार के राष्ट्र की परिकल्पना करते रहते है। तो राष्ट्र वास्तव में महान तो होना ही चाहिए। जिससे मेरी पुत्रियाँ, मानो देखो, सर्वत्र एक दूसरे में आनन्दित हो जाये, एक दूसरे से मिलन होते ही आनन्दित हो जाये और अपने में ये भान करने लगे कि हमारा राष्ट्र सुचरित्र और मानवीयता से गुँथा हुआ है।

तो ये विचार मेरे प्यारे महानन्द जी ने प्रकट किये इनके विचारों में ये कि एकोकीकरण, न प्रतीत कैसी रूढ़ियाँ है ये नाना रुढ़िवाद कहते है। किसी विशेष व्यक्ति की पूजा, और उसमें ईश्वर के नाम पर घटित हो जाये तो ऐसी जो विचारधारा है उसको रुढ़ि कहते है। वास्तव में तो रुढ़ि के बिना मानव का कल्याण नहीं होता, परन्तु अति जब रुढ़ि हो जाती है ईश्वर के नामों पर तो वह रुढ़ि राष्ट्र के लिए घातक बन जाती है। मानो समाज के लिए घातक बन जाती है तो इसीलिए रुढ़ियों का इन्होंने वर्णन किया। तो विचार विनिमय में ये हमारा, कि हम अपने राष्ट्र, और समाज को एक ही धर्म एक ही मानवता, विचार धारा एकोकीकरण में परिणत हो जाये। ये आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाये राजा का आहार और व्यवहार दोनों ही पवित्र होने चाहिये, ये आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवं रथाः मा मृह्निं भद्राः वायु रथ म नाः गयाः। ओ३म देवं सर्वा रथं मा यां देवं म नाः। ओ३म यज्ञनं वृहिता रेवा आभ्यां रथाः अच्छा भगवन् 8/9/1988 दाहा, बागपत

१० मृत्यु की मृत्यु 26 02 1989

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो उस परमपिता परमात्मा की दोनों ही जगत में अनुभूति होती रही है, मानो उसकी आभायें दोनों में निहित रही हैं।

दो प्रकार का जगत हमारे यहां माना गया है, एक जगत का नाम चेतनामयी कहा गया है और द्वितीय जो जगत है उसका नाम जड़वत है अथवा पिण्ड रूप में भी है और गतिवान में भी है। परंतु देखो, चेतना में और जड़वत दोनों में एक ही अन्तर्द्वन्द्व माना गया है। मुनिवरो! देखो, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है वह चेतना का मूलक कहा गया है और जहां मानो देखो, चेतना भी हो, परन्तु यदि वह ज्ञान और प्रयत्न से शून्य है तो जितना भी ब्रह्माण्ड है वह जड़वत कहा गया है। तो ये दोनों प्रकार के जगत में वे परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। आज मैं तुम्हें दर्शनों में ले जाना नहीं चाहूंगा। केवल विचार-विनिमय यह कि परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उसकी महती अनुपमता मानो इस ब्रह्माण्ड में सदैव दृष्टिपात आती रही है।

परमात्मा का जगत

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र, मानो हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है, वह हमें प्रेरित करता रहता है। तो इसलिए आज का प्रथम वेद मन्त्र यही कहता है जडं ब्रह्मा व्रतं देवाः क्या, मानो वह दोनों प्रकार के जगत में निहित रहता है। एक आश्चर्यमय देखो, परमपिता परमात्मा का यह जगत है मानो वह दोनों ही प्रतिभा में निहित रहने वाला है। तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, हमारा वेद मन्त्र कुछ कह रहा है। हमारे यहां ऋषि-मुनियों की समय-समय पर बेटा! विवेचनाएं और उनकी विवेचनाओं के साथ में मानों उनकी प्रतिभा निहित रही है। सभाओं में बेटा! उनका विचार-विनिमय होता रहा है। विचार-विनिमय क्या, अभिप्रायः ब्रह्मा वायु रथं ब्रह्मे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, वह जो रथं ब्रह्मा वृत्ति देवाः। उस प्रभु के जगत में जब मानव विद्यमान होता है तो प्रत्येक मानव का बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक एक मन्तव्य रहा है, एक विचार रहा है वह यह जानने के लिए तत्पर रहता है कि मेरे जीवन में अन्धकार न आ जाए, मेरे जीवन में मेरी मृत्यु न आ जाए। क्योंकि मृत्यु से पार होने के लिए प्रत्येक मानव बेटा! जितने भी संसार के क्रियाकलाप हैं, चाहे वह ऋषि मुनियों के मध्य में हो, चाहे वह मानवीयता के मध्य में हों, चाहे राष्ट्रीय वेत्ताओं के द्वार पर हों, प्रत्येक मानव की परम्परागतों से एक ही प्रबल इच्छा रही है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ।

निर्माण एवं विच्छेद

मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय, एक वेदमन्त्र कहता है निर्माणं ब्रह्मा कृते देवात्रां ब्रह्मा मानो ये वेद मन्त्र आया और वेदमन्त्र यह कहता है कि जिस वस्तु का निर्माण होता है, उसका विच्छेद बहुत अनिवार्य है। मानो देखो, जब उसका निर्माण हुआ है तो निर्माण का विकृत होना भी बहुत अनिवार्य है। ऐसा बेटा! ऋषि मुनियों के मध्य में एक विचार आया तो मुनिवरो! देखो, इससे द्वितीय वाक् बन जाता है कि जिस वस्तु का निर्माण हुआ है उसका विच्छेद अवश्य है। परन्तु उसके पश्चात वह मृत्यु से पार होने का प्रयास करता है, कि मृत्यु क्या है?

मृत्यु का स्वरूप

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के एक ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं, जहां ऋषि-मुनि अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं। मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जिस काल में बेटा! देखो महर्षि जमदग्नि के यहां एक सभा हुई और ऋषि-मुनियों की सभा थी, ब्रह्मवेत्ता एकत्रित हुए, उसमें ब्रह्म-जिज्ञासु, ब्रह्मवर्चोसि और ब्रह्मचरिष्यामि मानो देखो, ये तीन प्रकार की कोटि वाले प्राणी थे। तो महात्मा जमदग्नि ने उन सबके मध्य में एक वेद मन्त्र उद्गीत रूप में गाया और वेद मन्त्र में यह कहा गया, मृत्युंजं ब्रह्मावृत्ते देवान्तरां ब्रह्मा तो बेटा! देखो, ऋषि ने यह कहा कि यह मृत्यु क्या है? वेद मन्त्र कहता है कि यह मृत्यु, जो मानो देखो, सबको रुला देती है, यह रुद्र बन करके मानो यह सम्मुख आ करके रुला देती है। प्रत्येक मानव दुःखित हो रहा है, मेरी प्यारी माता दुःखित हो रही हैं। जब माता से ये प्रश्न किया जाता है हे माता! तू क्यों व्याकुल हो रही है? तो वह कहती है कि मेरा पुत्र था, नहीं रहा, मेरे समीप; इसलिए मैं व्याकुल हूं।

आत्मा का स्वरूप

तो मुनिवरो! देखो, वह दार्शनिक, महापुरुष कहता है कि हे मातेश्वरी! यह शरीर तेरा पुत्र है या आत्मा तेरा पुत्र है। तो बेटा! माता शान्त हो जाती है। क्योंकि यदि वह शरीर को अपना पुत्र कहती है तो शरीर तो ज्यों का त्यों निहित है और यदि वह आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्मा को तो वह जानती नहीं, आत्मा मानो देखो, कितनी अव्यय है और यह कहां चली जाती है? यह आत्मा चित्त के मण्डल को लिए हुए, वायुमण्डल में गमन करती रहती है, मानो इन्द्र नाम की वायु में गमन करती रहती है। तो मानो देखो, संस्कारों के आधार पर पुनः यह किसी के द्वारं ब्रह्मा गर्भश्वत्प्रह्रे बेटा! उसमें प्रवेश हो करके पुनः इस संसार में उसका अवत्र हो जाता है। तो विचार, मेरे पुत्रों! यह वेद मन्त्र कहता है, परन्तु ऋषि, महात्मा जमदग्नि ने कहा कि इसके ऊपर निर्णय

किया जाए कि आत्मा क्या है? मेरे प्यारे! देखो, आत्मतत्व के ऊपर विचार, माता तो मौन हो गई है, क्योंकि आत्मा को माता जानती नहीं है, और शरीर को भी मानो देखो, ज्ञानन्तं ब्रह्मा इस शरीर को भी ज्ञानतं ब्रह्मे वह शरीर ज्यों का त्यों निहित रहता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, माता मौन हो गई। तो महर्षि, महात्मा जमदग्नि ने कहा-हे ऋषियो! तुम ब्रह्मवेत्ता हो, तुमने अपने अन्तःकरण की प्रतिभा को जाना है, तुम बुद्धि के नाना प्रकार के भेदन को भी जानते हो, निर्णय दो, कि आत्मा क्या है? मेरे प्यारे! देखो, आत्म ब्रह्मे पुनः यह कहा कि आत्मा के साथ मृत्यु क्या है? प्रसंग यही है कि मृत्यु के ऊपर विचार-विनिमय किया जाए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो ऋषि-मुनि अपने में विचार-विनिमय करने लगे। चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और गार्गी ने यह कहा-कि भगवन! मेरे विचार में तो यह आता है कि यह शरीर और आत्मा दोनों का विच्छेद होना ही यह मृत्यु कही गई है। मेरे पुत्रो! देखो, उसमें महर्षि अखेत्त्वर ऋषि महाराज ने और पिप्पलाद जी ने यह प्रश्न किया कि हे देवी! हम यह स्वीकार करते हैं। परन्तु दोनों के विच्छेद का नाम मृत्यु नहीं बन रहा है। दोनों का विच्छेद होना, अभिप्राय यह कि दोनों है, उनका विनाश नहीं होता है। तो इसलिए यह अमृतं ब्रह्मा यह हमारे विचार में नहीं आ रहा है।

दुःख का कारण

मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी अपने में मौन हो करके शान्त हो गई। मेरे पुत्रो! इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद जी ने यह कहा कि मेरे विचार में यह आता है कि मृत्यु कोई वस्तु नहीं है संसार में, क्योंकि मृत्यु अमृतं अभावा ब्रह्रे व्रतं वेद की आख्यिका प्रगट करते हुए ऋषि ने कहा कि मृत्यु केवल अभावान्तर मानी गई है। क्योंकि इसका अभाव है संसार में, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियो में नाना प्रकार के

विचार उत्पन्न होने लगे। उन्होंने कहा तो यह संसार रूदन क्यों कर रहा है? उन्होंने कहा-देखो, किसी वस्तु का मिलन होता है और मिलन होने के पश्चात उसका जो विच्छेद होता है उसके जो क्रियाकलाप हैं मानो उसको स्मरणीय आ करके, उसके अन्तःकरण में जो संस्कार मानो स्मरण शक्ति जागरूक होती रहती है और मिलन हो करके जब विच्छेद होता है जो उसका नाम दुःखद कहा गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पिप्पलाद जी ने यह निर्णय अप्रतम् अपना दिया। देवर्षि नारद मुनि ने इसका समर्थन किया और पिप्पलाद और महर्षि प्रवाहण ने भी यह कहा कि वास्तव में यह यथार्थ है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अमृतम् देखो, संध्या का समय हो गया, इन्हीं विचारों में महर्षि पिप्पलाद मुनि को बहुत समय हो गया था, अपने गृह को त्यागे हुए, उनका आश्रम भी निकटतम में था। तो मुनिवरो! देखो, अपने आश्रम में उन्होंने गमन किया और जब वह अपने आश्रम में पहुंचे, तो आश्रम में जाने के पश्चात् उनकी पत्नी शकुन्तका बड़ी व्याकुल हो रही थी, उन्होंने, ब्रह्मणः ब्रहे वेद के ऋषि ने कहा-देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा भगवान्! मेरे आंगन में, मेरा सात वर्षीय पुत्र था, परन्तु वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। हे प्रभु! मैं व्याकुल हो रही हूं। तो वेदां ब्रह्मणः ब्रहे बेटा! देखो, पिप्पलाद मुनि ने कहा-देवी! मेरा दार्शनिकों को और ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से आगमन हो रहा है। मैं यह निर्णय कर चुका हूं कि संसार में मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती। मानो देखो, तुम मुझे यह रुदन कप्रताम् तुम व्याकुल हो रही हो।

शरीर का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, वह विदुषी थी, बुद्धिमान थी। उन्होंने कहा-प्रभु! चलो, मैंने यह वाक् आपका स्वीकार कर लिया, परन्तु मैं जानना चाहती हूं कि यह मेरा शरीर क्या है? मानो जब मृत्यु नहीं होती, तो मेरा शरीर क्या है? तो ऋषि ने कहा कि यह जो तुम्हारा शरीर है यह परमाणुओं का संघात है। मानो देखो, परमाणु, इसमें शिशु आत्मा है, शिशु नामक आत्मा है। वह जब तक रहती है, इन परमाणुओं को स्थिर किए रहती है। यह तुम्हारा शरीर परमाणुओं का संघात कहा जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी ने कहा चलो, भगवन! मैंने यह भी स्वीकार कर लिया, कि यह परमाणुओं का संघात है परन्तु मैं जानना चाहती हूं कि जब ये परमाणुवाद नहीं होता तो मानो देखो, यह मेरा शरीर कहां रहता है? यह परमारणुवाद कहां रहता है? तो उन्होंने कहा कि माता के गर्भस्थल में

निर्माण करने वाला, निर्माण कर रहा है और निर्माणवेत्ता निर्माणं ब्रह्मे मानो देखो, माता के गर्भस्थल में तुम्हारे शरीर का निर्माण कर रहा है और निर्माण हो

रहा है। इसमें मानो देखो, बड़ी विचित्रता है। इसमें आत्मा एक शिशु है, देवता अंग संग उसके विद्यमान रहते हैं। मानो देखो, निर्माण करने वाला वह चैतन्य देव है। मानो इस मानव शरीर में बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार, दो सौ दो नाड़ी कहलाती हैं। परंतु देखो, इस प्रकार का यह शरीर चित्त के

नाना प्रकार के अवयव माने गए हैं जैसे देखो, मन की कितनी धाराएं हैं, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इसके अवान्तर भेदन माने गए हैं। जैसे बुद्धि भी चार प्रकार की होती है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी कहलाती है। मानो देखो, मन के कई प्रकार के भेदन होते हैं बेटा! देखो, मन जिसके साथ रहता है देखो, उसमें विचित्रता दृष्टिपात आने लगती है मानो इसी प्रकार इन परमाणुओं को इस प्रकार की इन्द्रियों को अवयव और परमाणुओं से मानव के शरीर का निर्माण होता है। वह जो निर्माणवेत्ता चेतन्य देव है, वह निर्माण कर रहा है। परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है, वह नहीं जानती कौन निर्माण कर रहा है, कितने अवयवों का

निर्माण हो रहा है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो देवी ने कहा-प्रभु! यह भी मैंने स्वीकार कर लिया, परन्तु जब माता का गर्भाशय नहीं होता, तो यह परमाणुवाद कहां रहता है? उन्होंने कहा-हे देवी! जब यह माता का गर्भाशय नहीं होता तो यही परमाणुवाद मानं ब्रह्रे कृताः यही परमाणुवाद मानो वीरांगना के वीरत्तव के रूप में विद्यमान रहता है, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो वीरत्तव को प्राप्त होता है वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली, मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है।

मोक्ष की पगदंडी

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा-हे देवी! एक समय हम भयंकर वन में पहुंचे तो वहां देखो, चाक्राणी गार्गी सामगान गा रही है देखो, वह माला पाठ में गान गा रही थी, तो उनके गान को श्रवण करने के लिए सिंहराज, मृगराज मानो देखो, सर्वत्र विद्यमान थे सर्पराज भी उनके गान को और देखो, सिंह भी ग्रहण कर रहा है। परिणाम, क्योंकि वेद की जो प्रतिभा है जो मानव हृदय से इसे गाता है, हृदय में इसका समावेश करता रहता है तो मानो देखो, हृदय के वाक्यों को सब श्रवण करते हैं। क्योंकि इस हृदय का परमात्मा के हृदय से मिलान होता है, यदि हृदय का परमात्मा से मिलान हो जाए तो बेटा! देखो, मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण कर जाता है।

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरो! देखो, ऋषि कहता है-हे देवी! देखो, वीरांगना अपने परमाणुओं की रक्षा करके, वह वीरांगना बन जाती है। मनस्तव को क्या, देवतव को प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार जो मानव, इन परमाणुओं की रक्षा करता है, ब्रह्मचारिणी मानो ब्रह्मचरिष्यामि बन करके और जैसे देवत्व को प्राप्त होती है इसी प्रकार मानव भी इन परमाणुओं की रक्षा करता हुआ मुनिवरो! देखो, वीरत्तव को प्राप्त होता है ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है, ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है, ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। जैसा मुनिवरो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य इत्यादि ने अपना वर्णन करते हुए कहा है।

मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्मवर्चोसि मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्म की यह जो प्रतिभा और जो चरी के रूप में दृष्टिपात आ रही है उसको ब्रह्मचारी अपने में चरता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, चरी नाम प्रकृति का है और ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा का है। तो ब्रह्मचरिष्यामि बन करके बेटा! उद्गीत गाता रहता है। वह प्रकृति और ब्रह्म दोनों का अपने में समावेश करने लगता है। समावेशता उसमें पर्याणं ब्रहे मानो देखो, उसमें समावेशता ऐसे दृष्टिपात आने लगती है जैसे हम प्रकृति से अपना खिलवाड़ कर रहे हों। बेटा! ब्रह्मचारी जब योगाभ्यास में इन परमाणुओं की रक्षा करता है तो देवतव को प्राप्त हो करके बेटा! देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, यह ब्रह्मणाः कृताः वेद का आचार्य कहता है-हे देवी! इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला वीरतव और वीरांगनात्व को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा नहीं, केवल परिचय देने आया हूं, वेद का आचार्य कहता है सम्भूति ब्रह्माः मुनिवरो! देखो, जब ऋषि शांत होने लगे, तो देवी नतमस्तक हो करके बोली-हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूं जब यह परमाणुवाद मानो मम ब्रहे वीरत्व और वीरांगना भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहां रहता है?

चार प्रकार की सृष्टि

मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा-हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि परमपिता परमात्मा ने जब इस सृष्टि का सृजन किया और मानो देखो, ब्रह्म में उग्र क्रिया आई, उग्रता उत्पन्न होते ही मानो देखो, एक दूसरे परमाणु में, गति में आना प्रारम्भ हो गया। मेरे प्यारे! देखो, महत्तत्व में, जब परमपिता परमात्मा के यहां उग्र क्रिया आई। उग्र

त्रेता कालीन विज्ञान

क्रिया आने से बेटा! देखो, वह तपं ब्रहे कृत्स्वाहा, वेद का मन्त्र कहता है कि ब्रह्म तपोमय कहलाता है। मेरे प्यारे! जब उग्र क्रिया आई तो मुनिवरो! सबसे प्रथम अन्तरिक्ष जागरूक हो गया, महत्तत्व की प्रतिभा से और जब महत्तत्व में यह परमाणुवाद अपने में गति करने लगे तो अन्तरिक्ष में बेटा! वे गतिवान होने लगे, वायु में देखो, प्राणसत्ता जब उग्र क्रिया से, प्राणेश्वर जागरूक हो गया तो बेटा! जो प्राणेश्वर के आश्रित जितने प्राण थे बेटा! वह अग्नि के परमाणु, आपों के परमाणु, पृथ्वी के परमाणु बेटा! सर्वत्रता में गति उत्पन्न हो गई और वह गतिवान हो करके अपनी-अपनी क्रियाओं में बेटा! देखो, रचना प्रारम्भ हो गई, वह चार प्रकार की सृष्टि की रचना हो गई। जिसको मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम स्थावर, जंगम, स्वेदज और अण्डज यह चार प्रकार की सृष्टि का जन्म हो गया।

अन्न के सात प्रकार

आज मैं विशेषता में नहीं, केवल यह कि जो महर्षि पिप्पलाद ने अपनी देवी को यह शिक्षा दी कि हे देवी! मानो देखो, यह चन्द्रतेः उसी समय परमपिता परमात्मा ने सात प्रकार के अन्न को जन्म दिया। अन्न को उत्पन्न किया। बेटा! देखो, सात प्रकार का अन्न क्या है? सबसे प्रथम मानो देखो, साझा अन्न है। एक पौधा, उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है। एक मनुष्य पान करता है, एक को पशु पान कर रहा है। वाह रे, मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, एक ही पौधा है, उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है, एक को पशु पान कर रहा है एक को मानव पान कर रहा है। मानव पान करके बेटा! देखो, तेजोमयी बन रहा है, ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है और पशु पान करता है तो बेटा! वह पय दे रहा है और पय देकर करके दुग्ध दे रहा है जैसे गौ नाम का पशु है वह दुग्ध दे रहा है। मानो देखो, यह दो प्रकार का अन्न है। बेटा! एक मानव का अन्न है, एक पशु का अन्न है। पशु पान करके बेटा! पय देता है और मानव पान करता हुआ मुनिवरो! वह ओज, तेज की उत्पत्ति कर रहा है। एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है, दूसरे अन्न को मानो देखो, पशु पान करके वह दुग्ध दे रहा है।

देवताओं का मुख

मेरे प्यारे! देखो, प्रभु की रचना कितनी विचित्र है। यह सृष्टि क ेप्रारंभ में, सृष्टि के पिता ने उत्पन्न की। बेटा! जब उग्र क्रिया बनी मानो देखो, ब्रह्मणां ब्रहे यह दो प्रकार का अन्न यह हुआ। एक अन्न बेटा! हूत कहा जाता है। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं और वह हूत कर रहा है, वह अग्नि के मुखारबिंदु में बेटा! साकल्य प्रदान कर रहा है, चरु प्रदान कर रहा है। और वह साकल्य को पान करता हुआ, ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, देवताओं को प्रदान कर रहा है, जिसमें वे देवता जन प्रसन्न हो जाते हैं। क्योंकि अग्नि मुखारबिंदु है, अग्नि कहीं भी चली जाए परन्तु वह मुखारबिंदु बन करके रहती है। बेटा! जब यजमान अग्नि में चरु देता है तो वह सर्वत्र देवताओं का मुख कहलाता है। मेरे पुत्रो! जो अपने में पान करता है, योगावृत्तियों में मुनिवरो! देखो, वहां यौगिकता को जन्म देने वाला है।

पुरोहित का कर्तव्य

तो विचार आता रहता है, ऋषिवर कहते हैं कि हे देवी! यह तीन प्रकार का अन्न, यह सबका साझा अन्न कहा जाता है और एक अन्न का नाम है प्रहूत मानो जो पुरोहित जन जो पराविद्या के देने वाले यजमान के समीप आते हैं। मानव के समीप आते हैं वह मानो देवत्व को प्राप्त होते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह अग्नं ब्रह्मा वह हूत देते हैं, आहुति देते हैं और अपना उपदेश देते हुए कहते हैं हे राजन! तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना। हे राजन! मैं

तुम्हारा पुरोहित हूं, और पुरोहित को तुम साकल्य प्रदान करो। मेरे प्यारे! देखो, पुरोहित वह है जो राष्ट्र को, समाज को ऊँचा बनाता है जो मानो देखो, राष्ट्र को, समाज को महानता की वेदी पर ले जाता है। वह पुरोहित कहा जाता है वह भी समाज का अन्न कहलाया गया है।

मानो देखो, जैसे विश्वामित्र की गाथाएं आती रहती हैं उन्होंने बेटा! वशिष्ठ मुनि की प्रेरणा से, आज्ञा पा करके राम इत्यादि को ले जा करके बेटा! धनुर्याग की विद्या प्रदान की थी। इसी प्रकार उनके जो क्रियाकलाप हैं मानो देखो, ब्रह्मज्ञान देना, क्रियाकलापों में जो राष्ट्र और समाज के लिए कल्याणकारक है उनको समाज को प्रदान करना बेटा! यह पुरोहितों का कर्त्तव्य है। हे पुरोहित जनों! आओ, देखो, तुम अपने गृह और अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाओ। मानो देखो, इस प्रकार का बेटा! यह अन्न कहा जाता है। यह चार प्रकार का अन्न है जो सबका साझा अन्न कहा जाता है। अन्न उसे कहते हैं जिससे आत्मा की तृप्ति होती हो, अन्न उसे कहते हैं जिससे मानव का उदर परिणत होता हो, उसे अन्नाद कहा जाता है।

आत्म कल्याण का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, तत्तत्प्रवाहः जब ऋषि ने यह वर्णन किया तो उन्होंने कहा-देवी! तीन प्रकार का जो अन्न है वह मानव ने अपने आत्म कल्याण के लिए निहित किया है। वह तीन प्रकार का अन्न क्या है? बेटा! मन, प्राण और विचार, यह तीन प्रकार का जो अन्न है बेटा! इसे योगीजन अपने में पान करता है जिससे बेटा! देखो, विचार का साकल्य बनाता है और प्राण को हूत करता है और विचार को देखो, सबको सम्मिलित करके जो हृदयरूपी यज्ञशाला में, जो अग्नि, ज्ञान रूपी अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसमें वह हूत कर रहा है। मेरे प्यारे, वह मोक्ष की पगडंडी पर जाने के लिए तत्पर हो रहा है। तो बेटा! देखो, उसका नाम हूत कहा जाता है। मुनिवरो! विचार, कहा जाता है ब्रह्मणे वह ऋषि मुनियों का हूत है, एक समाज का हूत माना गया है परंतु जिससे वायुमंडल पवित्र होता है, एक वह जिससे हृदय पवित्र होता है जिससे मानव निर्द्वन्द्व हो करके, निर्मोही बन जाता है मानो देखो, उसे न किसी की मृत्यु से कुछ होता है। वह तो आत्मवेत्ता बन करके, प्राण सखा को ले करके मुनिवरो! विचार, उसके मध्य में ले जा करके और हृदय रूपी यज्ञशाला में जब याग करता है, मौन हो करके वह परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार आता रहता है, परमपिता परमात्मा ने बेटा! सृष्टि के प्रारंभ में यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है; उस अन्न को पान करना, जानना यह हमारा कर्त्तव्य कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पिप्पलाद ने जब इस प्रकार की विवेचना प्रगट की तो मानो देखो, देवी ने नतमस्तक हो करके कहा-हे प्रभु! आपका वाक् तो बड़ा ही प्रिय लग रहा है, परन्तु मैं जानना चाहती हूं जब यह अन्न भी नहीं होता, तो यह परमाणुवाद कहां रहता है?

परमाणु के तीन प्रकार

उन्होंने कहा हे देवी! जब यह अन्नाद भी नहीं होता तो मानो यही परमाणुवाद मानो देखो, यह बिखरा हुआ परमाणुवाद रहता है कुछ मानो देखो, गुरुत्व में रहता है, पृथ्वी का आपो का और अग्नि का ये तीन प्रकार के परमाणु होते हैं। परन्तु वायु इन परमाणुओं को गति देती है और मुनिवरों! अन्तरिक्ष में यह गतिवान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पिप्पलाद कहते हैं-हे देवी! जब यह मानव के शरीर से आत्मा निकल जाता है, उस समय मानो देखो, इस मानव शरीर का दाह कर दिया जाता है और जब इसका दाह हो जाता है, अग्नि में प्रवेश कर दिया जाता है तो अग्नि के परमाणु अग्नि में और आपो, जल के परमाणु जल में और पृथ्वी के परमाणु, पृथ्वी में और

मानो देखो, प्राण वायु में और अवकाश मुनिवरो! देखो, अन्तरिक्ष में लय हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, आत्मा के जितने क्रियाकलाप चित्त मण्डल में रहे हैं उन चित्त मण्डल को ले करके बेटा! यह आत्मा चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाता है। यह आत्मा बेटा! देखो, विनाश नहीं होता, यह आत्मा अपने चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाता है और वहां गतिवान हो करके मानो देखो, चित्त के मण्डलों में जो संस्कार विद्यमान हैं उन्हीं संस्कारों को ले करके यह गमन करता हुआ मानो देखो, दर्शन करता है सम्भो ब्रह्वा वृश्नं ब्रीहि विरातं ममत्वां ब्रह्मे यह किसी माता के गर्भ में प्रवेश हो जाता है।तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पिप्पलाद ने जब यह कहा कि हे देवी! मैं जानना चाहता हूं जब यह आत्मा भी अपने चित्त के मण्डल में चला गया और इन परमाणुओं का भी विनाश नहीं होता तो जिन अवयवां से जो मानव शरीर सुरूप में दृष्टिपात आ रहा है, तो मैं जानना चाहता हूं मृत्यु है क्या? जिस मृत्यु के लिए तुम व्याकुल हो रही हो।

मृत्यु

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो गई और मौन हो करके उसने कहा-धन्य है प्रभु! आपने मुझे मानो देखो, अन्धकार से प्रकाश में पहुंचा दिया है, मुझे अन्धकार छा रहा था मेरे प्यारे! देखो, यह उद्गीत गाते हुए ऋषि ने कहा-हे देवी! मृत्यु भी होती है। अब ऋषि पत्नी बोली-हे प्रभु! मृत्यु कैसे

होती है? उन्होंने कहा मृत्यु ब्रह्मे एक समय राजा जनक की सभा में यह प्रसंग आया था। महात्मा अर्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा कि यह मृत्यु क्या है? मृत्यु कं वृत्तम् तो उस समय महात्मा अर्धभाग ने यह कहा-कि मृत्यु कह करके ही शान्त क्यों होते हो, यह कहो कि मृत्यु की मृत्यु क्या है?

प्रभु का राष्ट्र

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है। अरे ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने इस प्रकार उद्गीत गाते हुए अपनी पत्नी से कहा-देवी! जो ब्रह्म को जानता है, जो ब्रह्म को सर्वांग स्वीकार करता है उसकी मृत्यु नहीं होती, अन्यथा अज्ञान देखो, मृत्यु नाम अज्ञान का है। जब तक अज्ञान रहता है तब तक मृत्यु मानो उसके समीप रहती है और मुनिवरो! देखो, जब मृत्यु से उपराम होता है तो प्रभु को सर्वत्रता में बेटा! दृष्टिपात करता है और अपने को यह स्वीकार करता है कि मैं प्रभु के राष्ट्र में हूं और प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती। अन्धकार नहीं होता, आलस्य और प्रमाद नहीं होता। जब मृत्युमय ब्रह्मणः बेटा! जब प्रभु के राष्ट्र में आलस्य और प्रमाद नहीं होता मानो रात्रि नहीं होती तो वहां अन्धकार नहीं होता जहां अन्धकार नहीं होता, तो वहां मृत्यु भी नहीं होती।

तो विचार-विनिमय क्या, मेरे प्यारे! मुझे आज महानन्द जी से यह प्रेरणा प्राप्त हुई कि मृत्यु के सम्बन्ध में कुछ अपना विचार दिया जाए तो मानो देखो, उन्हीं विचारों के साथ, विचार-विनिमय हमारा यही है कि हम अपने में ज्ञानवान बनें, परमात्मा की प्रतिभा में रत्त हो जाएं और अपने में यह जानते रहें कि परमाणु संसार में मानो गतिवान हो रहा है वह परमाणुवाद अपने में मानो अपने में ही रत्त रहने वाला है, उसका विनाश नहीं होता, यह विज्ञान भी कहता है। आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान का जब दोनों का समावेश कर दिया जाता है तो बेटा! देखो, मानव मृत्यु से अज्ञान से पार हो जाता है। ऋषि-मुनि जितनी भी तपस्या में अनुष्ठानों में मानो क्रियाकलापों में रत्त रहते हैं वह सर्वत्र यह चाहते हैं कि हे प्रभु! मेरा जीवन प्रकाशमय रहे, मैं मृत्यु को न प्राप्त हो जाऊँ, मृत्यु कहते हैं अज्ञान को, और प्रकाश कहते हैं मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान को, और ज्ञानी की मृत्यु नहीं होती, अज्ञानी मृत्यु की आभा में रत्त होता रहता है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएं

तो कल ही प्रगट करूंगा, आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देवत्व को जानते हुए, इस सागर से पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूंगा। ओ३म् रेवाः आभ्यां गतं मा ऋषि वाचन्नम। ओ३म् नारथं आभ्यां देवाः 26.2.89 ग्राम-बडौली, मेरठ।

११ आध्यात्मिक विज्ञान 25 03 1989

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही उस पवित्र वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद-वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता के ऊपर, विचार विनिमय किया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी महानता का प्रायः वर्णन करता रहता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं क्योंकि ये जो दृष्टिपात आने वाला जगत है, यह प्रायः दो प्रकार का माना गया है एक जड़वत है, तो द्वितीय चैतन्य कहा जाता है। परन्तु आश्चर्य यह है कि वे दोनों ही आभा में निहित रहने वाले हैं। जड़वत् में भी और चेतनामयी में भी रत रहते हैं। क्योंकि चेतना की मीमांसा करते हुए ऋषि ने बेटा! अपनी आभा में प्रगट करते हुए कहा है जहां ज्ञान और प्रयत्न रहता है मानो वही हमारे यहां चेतना का द्योतक माना गया है। परन्तु जितना भी यह पिण्ड आकार में जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है यह सर्वत्र एक जड़वत की विवेचना प्रगट कर रहा है।

विचार आता रहता है हम दोनों प्रकार के जगत के ऊपर अन्वेषण करते चले जाएं। जहां वह नाना प्रकार की आभा और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में सदैव रत रहते हैं वहां जड़ और चेतना के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए। क्योंकि उसी के अंतर्गत यह सर्वत्र विज्ञान विहित हो जाता है। आज मैं बेटा! एक वेद मन्त्र उद्गीत रूप में गा रहा था, वेदों का एक-एक मन्त्र हमें उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त कर रहा है और यह आ रहा है कि परमपिता परमात्मा का वह जो अनुपम ज्ञान है अथवा विज्ञान है वह एक-एक मानो तरंग में ओत-प्रोत हो रहा है। वह देवत्वां ब्रह्मणाः वह देवत्व माना गया है।

अग्नि

आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में जहां परमपिता परमात्मा का वर्णन आ रहा था, वहां आज के वेद के पठन-पाठन में बेटा! अग्नि का बड़ा उर्ध्वामयी स्वरूप का वर्णन हो रहा था। और यह वर्णन कर रहा है वेद का मन्त्र अग्नं ब्रह्मणां प्रह्वा व्रतं अग्निः हे अग्ने! तू प्रकाशमयी है। हे अग्ने! तू मानो नेतृत्व करने वाली है। मानो देखो, अग्नि ही मार्ग का पथ-दर्शन कराने वाली है। हम उस अग्नि को बेटा! अपने में धारण करते चले जाएं। जिससे हम दूसरों का नेतृत्व करने वाले बने, इसलिए अग्नि को हमारे यहाँ बेटा! नेतृत्व वाली और अग्रणीय माना गया है। अग्रणीय जो मार्ग का पथ-दर्शन कराती है मानो पथ दर्शक मानव बनता रहता है। बेटा! एक प्रकार की अग्नि का ही चयन नहीं माना गया है यहां भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नियों का वर्णन आता रहता है। मानो देखो, वह एक अग्नि जो काष्ठ में रहने वाली है। बेटा! जहां उसका द्वितीय स्वरूप उसके समीप आया तो उसने काष्ठ में रहने वाली अग्नि ने अपने स्वरूप को मानो प्रत्यक्ष रूप से प्रगट किया और मानो उसको धारण करने वाला मानव अंधकार में प्रकाश को प्राप्त करता रहता है। हे अग्ने! तू मानो देखो, पवित्र है। वेद कहता है एक अग्नि वह है जो पुरोहितों के हृदयों में प्रदीप्त रहती है। बेटा! पुरोहित में वह कौन सी अग्नि होती हैं? वह ज्ञानाग्नि होती है। जिसे ब्रह्माग्नि कहते हैं। वह ब्रह्माग्नि है बेटा! देखो, जो पुरोहितों के हृदयों में प्रदीप्त रहने वाली है। बेटा! पुरोहित आए हैं, और वह अपनी उद्गारता को प्रगट करते रहते हैं।

पुरोहित का कर्तव्य

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनों अपने आसन पर विद्यमान थे और आसन पर विद्यमान हो करके महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा-हे ऋषिवर! मेरी इच्छा यह है कि तुम मानो देखो, पुरोहित बनो और पुरोहित बन करके तुम मानो देखो, इस राष्ट्रमयी अग्नि और मानवं ब्रह्मणाः ऐसी अग्नि प्रदीप्त करो जिससे राष्ट्र में पवित्रता आ जाए और राष्ट्र एक महानता की वेदी पर परिणत हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने कहा-प्रभु! जो आप मुझे आज्ञा देंगे वही किया जाएगा। उन्होंने कहा-मेरे विचार में यह आ रहा है देखो, राम और लक्ष्मण इत्यादि चारो विधाताओं को धनुर्विद्या प्रदान करनी चाहिए। क्योंकि राजा के राष्ट्र में भिन्न-भिन्न प्रकार के याग होते रहते हैं, परन्तु एक याग का नाम धनुर्याग माना है। तुम यहां धनुर्याग का आयोजन करो और धनुर्विद्या दे करके इस राष्ट्र को उन्नत बनाओ क्योंकि पुरोहितों का यह कर्त्तव्य माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने जब यह आज्ञा दी तो महर्षि विश्वामित्र ने कहा आज्ञं ब्रह्मे हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए।

धनुर्याग की योजना

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने वहां से गमन किया और यह विचारा कि मैं राजकुमारों को ला करके और दण्डक वनों में एक धनुर्याग करूंगा। मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है कि महर्षि विश्वामित्र ने वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रो! देखो, वह राज सभा में और देखो, अयोध्या में उनका आगमन हुआ मानो देखा, अयोध्या में एक वाणी का स्रोत्र बहने लगा कि आज देखो, महर्षि विश्वामित्र का आगमन हो रहा है, इसके मूल में न प्रतीत क्या, मानो देखो, वृत्तियां विद्यमान हैं। मेरे पुत्रो! देखो, वह अयोध्या में राजा दशरथ के स्थान पर पहुंचे, जहां बेटा! राजा राजसभा में अपने न्यायालय के लिए तत्पर हो रहे थे, तो उस समय महर्षि विश्वामित्र को दृष्टिपात किया। तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया, उन्होंने कहा-आइए, भगवन! विराजिए, वह विराजमान हो गए। मुनिवरो! देखो, राजा ने नतमस्तिष्क हो करके कहा-प्रभु! आज यह मेरा कैसा सौभाग्य जागरूक हुआ है। जो बिना सूचना के अयोध्या में आपका आगमन हुआ है। मुझे सूचना दे देते, मैं तुम्हें वाहनों में और अपनी नगरी में तुम्हारा आगमन होता, स्वागत होता।

मर्हिर्ष विश्वमित्र अयोध्या में

ऋषि ने कहा-कोई वाक् नहीं, राजन! ब्रह्मण ब्रह्मे कृतं लोकाम् मैं इसलिए आया हूं क्योंकि मुझे राजकुमार चाहिए, मैं धनुर्विद्या के लिए तत्पर हो रहा हूं। मेरे पुत्रो! देखो, राजा ने कहा-प्रभु, हे ऋषिवर! यह बाल्य तो किशोर हैं, परन्तु आप मुझे आज्ञा दीजिए, मैं आपके याग को सम्पन्न करूंगा। यह मेरा कर्त्तव्य है क्योंकि राज्यो ब्रह्मणे यह मेरी प्रतिभा कहलाएगी। मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा-हे राजन! मुझे तो राजकुमार चाहिए, जिसे मैं धनुर्विद्या दे सवूं$। मेरे पुत्रो! देखो, इसी विचार में दोनों मग्न हो रहे थे, विचार जब मग्न हो गए तो हमारे यहां यह मानं ब्रहाः जब ये राज लक्ष्मियो ने श्रवण किया कि आज तो ऋषि का आगमन हो रहा है।

मेरे पुत्रो! देखो, कौशल्या इत्यादि सर्वत्र देवियां मुनिवरो! देखो, राजसभा में, ऋषि के दर्शनार्थ, उनके चरणों की वंदना की और वन्दना करते हुए महर्षि से बोली-कहो, भगवन! आज तो आपका बहुत समय के पश्चात आगमन हुआ है यह हमारा कैसा सौभाग्य है। आप क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा-हे दिव्या! मानो देखो, मैं राजकुमारों को ले जाना चाहता हूं धनुर्विद्या के लिए, और दण्डक वनों में मैंने एक याग की रचना की है और याग का नाम है धनुर्याग। अब मुझे आज्ञं ब्रह्मे अब मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के वाक्यों को पान करने वाली कौशल्या इत्यादियों ने कहा-हे राजन! आप राजकुमारों को क्यों नहीं प्रदान कर रहे हैं, उन्होंने कहा-हे दिव्या! मैं

इनके याग को सम्पन्न कराऊँगा, यह बाल्य तो किशोर हैं। तो उस समय कौशल्या ने यह कहा-हे राजन! तुम्हें यह प्रतीत है कि यह बाल्य युवा हो रहे हैं और धनुर्याग पान करना इनका कर्त्तव्य है। हे प्रभु! आप इन्हें प्रदान कीजिए यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य, यदि ऋषि की सेवा नहीं कर सकता और उन गुणों को धारण नहीं कर सकता तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा।

मेरे प्यारे! माता कौशल्या ने इन शब्दों को उद्गीत रूप में, उच्चारण किया, तो उस समय राजा मौन हो गए और राजकुमारों को बेटा! देखो, महर्षि विश्वामित्र के साथ उनका आव्रत किया और माताओं ने कहा-राजकुमारो! जाओ देखो, धनुर्याग की शिक्षा को प्राप्त करो और मानो देखो, ऋषि की सेवा करना। मेरे प्यारे! देखो, राजकुमारों ने माताओं की आज्ञा का पालन किया, राजा अमृतं देखो, मौन हो गए और वह कोई वाक् उच्चारण नहीं कर सके।

राम लक्ष्मण का धनुर्याग के लिए गमन

तो विचार मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र दोनों राजकुमारों को अमृतां ब्रह्मण मेरे पुत्रो! देखो, वह राम और लक्ष्मण दोनों को ले करके वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए वह मेरे पुत्रो! देखो, भयंकर वन में, देखो जो विजातीय, विचारधारा के प्राणी थे, उन्हें नष्ट करते हुए, और उन्हें विजय करते हुए मेरे पुत्रो! वह दण्डक वनों में जा पहुंचे। तो मेरे पुत्रो! देखो, दण्डक नाम ब्रह्मा उन्होंने देखो, ताडका इत्यादि जो दैत्य प्रवृत्ति थी कि मानो देखो, जो याग को सम्पन्न नहीं होने देते थे मानो देखो, उन्होंने उन्हें नष्ट किया। उनको प्राणान्त किया। मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है वह दण्डक वनों में जा पहुंचे। देखो, महर्षि विश्वामित्र ने बेटा! धनुर्याग का आयोजन किया था। धनुर्याग का अभिप्राय यह है कि धनुर्विद्या को देना, विज्ञान की सर्वशः सामग्री वहाँ एकत्रित की थी। जो कुछ महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां से प्राप्त हुई और मुनिवरो! देखो, कुछ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने भी सामग्री प्रदान की। बेटा! देखो, धनुर्याग का अभिप्राय क्या है, कि अस्त्रों शस्त्रों की विद्या को पाना, तो महर्षि विश्वामित्र के यहां बेटा! पुरोहितपने में ब्रह्मणाः ऐसा स्मरण है बेटा! उनके यहाँ एक सौ पिच्चासी ब्रह्मचारी मानो देखो, अध्ययन करते थे और वह धनुर्विद्या को पान करते थे। धनुर्विद्या बेटा! देखो, प्राण विद्या को पाना, धनुर्विद्या में उन्हें विश्वसनीय था।

तो मेरे पुत्रो! विचार क्या हमारे यहां पुरोहित होने चाहिये। कौन से पुरोहित होते हैं? जो राष्ट्र और समाज को कल्याण के मार्ग पर ले जाते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! मुझे बहुत-सी वार्ताएं स्मरण आती रहती है मानो देखो, धनुर्याग अपने में बड़ा, एक अद्वितीय याग माना गया है। हमारे यहां भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। जब हम पुरोहितों की चर्चा करने लगते हैं तो बेटा! देखो, हमारा हृदय अन्तरात्मा गदगद हो जाता है। यह तो बेटा! देखो, धनुर्याग की चर्चा रही, बेटा! मैं पुरोहित की चर्चा कर रहा था। वे पुरोहित अब एक याग हमारे यहां बेटा! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मे बेटा! उसी स्थली पर जहां बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आश्रम में विद्यमान हैं। बेटा! देखो, प्रातःकालीन विद्यालयों में मेरे पुत्रो! देखो, याग का होना यागां ब्रह्मणे देखो, आचार्य उन्हें अपना उपदेश देता।

याग में होता

तो बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां बेटा! प्रातःकालीन ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे थे और याग सम्पन्न करने के पश्चात्, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-हे ब्रह्मचारियों! प्रातःकालीन तुम्हारा याग सम्पन्न हो गया है, अब मैं ज्ञानं ब्रहे कृतं देवाः बेटा! ब्रह्मचारियों ने एक रूपक बनाया और ब्रह्मचारियों ने रूपक बनाते हुए एक उनमें से यजमान बना एक पुरोहित बन गया और उन्होंने कहा-हे प्रभु!

हम जानना चाहते हैं सम्भूति ब्रह्मलोकां वायु रथं ब्रह्मे उन्होंने कहा-हे प्रभु! यजमान आपके सम्मुख विद्यमान है और वह याग करना चाहता है तो कितने होता इसके याग में होने चाहिए? तो मुनिवरो! देखो, महर्षि याज्ञवलक्य मुनि बोले-कि तुम क्यों जानना चाहते हो? ऐसा उन्होंने कहा-प्रभु! यजमान याग करना चाहता है और हम मानो उसके पुरोहित हैं, हम आपसे जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा-चौबीस होताओं से याग होना चाहिए, क्योंकि चौबीस होता ही याग को सम्पन्न कराने के लिए तत्पर होते हैं। उन्होंने कहा-प्रभु! यह चौबीस होता कौन से हैं?

उन्होंने कहा-कि चौबीस होताओं में मानो देखो, दस प्राण हैं और पांच ज्ञानेद्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। यह मानो देखो, इनके द्वारा यजमान याग करता और वह उस याग को सम्पन्न कराता हुआ द्यौ लोक में प्रवेश करा देता है। तो मानो देखो, हमारे यहां वैदिक साहित्य में यह आता रहा है कि हमारे यहां जहां भौतिक विज्ञान में मानव रत्त रहता है वहां आध्यात्मिक विज्ञान के ऊपर भी अध्ययन होना चाहिए और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता ने यह निर्णय दिया कि यह मानो देखो, दस प्राण हैं और दस इन्द्रियां हैं और देखो, मन बुद्धि चित्त अहंकार यह यज्ञ में होता कहलाते हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है यह बेटा! जो हमें दृष्टिपात आ रहा है यह जो ब्रह्मांड है मानो यह ब्रह्मांड भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। बेटा! देखो, इसमें ब्रह्मा स्वयं परमपिता परमात्मा है, आत्मा यजमान है और मुनिवरो! देखो, जो पंच महाभूत हैं यह उसमें होता बन करके और वह याग हो रहा है, सम्पन्नता को प्राप्त हो रहा है। मानो इसी को हमारे यहां एक ब्रह्माण्ड याग कहा गया है। यह एक प्रकार की वेदी है। इसी प्रकार मेरे पुत्रो! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह अपना वक्तव्य दिया, अपना निर्णय दिया और यह कहा-हे यजमान! चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। चौबीस होताओं में मानो एक प्राण विद्या है। इस प्राण विद्या को अपने में जानना अनिवार्य है और दस इन्द्रियां हैं-पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि और चित्त अहंकार कहलाता है। यह एक आध्यात्मिक स्वरूप है। जिसके द्वारा बेटा! यह मानव शरीर जो अपना मन्थन करता है, अपने में प्रभु को पाना चाहता हैं।

मन की प्रवृत्ति

तो मेरे पुत्रो! देखो, उस परमपिता परमात्मा की महती और उस मानवीयत्व को जानने के लिए तत्पर होता है। संसार में सृष्टि के प्रारंभ से ले करके, वर्तमान के काल तक जितने भी साधक हुए हैं, वह सबसे प्रथम अपने मानवीय शरीर को जानने के लिए तत्पर रहे हैं। जिससे मानव शरीर में एक नमं ब्रह्मणाः लोकां वायु सम्भूति ब्रह्माः उन्होंने कहा है-यह जो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार है यह मानो मन की प्रवृत्ति कहलाती है। यह मन की धारा है जैसे मुनिवरो! देखो, मन है और मन का दूसरा स्वरूप मानो देखो, मन, बुद्धि और चित्त और अहंकार यह मन की ही मानो चार प्रकार की व्याहृतियां मानी गई हैं। चार प्रकार के अवयव माने गए हैं।

चित्त में संस्कार

तो मेरे पुत्रो! देखो, इसी में बुद्धि के अवान्तर भेद माने गए हैं, मानो देखो, रजस्सुतां व्रणं ब्रह्मा लोकाम् कहीं मानो देखो, बुद्धि को मेधा कहते हैं, कहीं बुद्धि के रूप में वर्णन किया गया है कहीं मानो देखो, यही बुद्धि मेधा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी के रूप में विद्यमान रहती है। कहीं यही बुद्धि मानो रेणुका के रूप में रहती है। जहां जैसा भी प्रसंग होता है वहाँ उसी प्रकार उसे स्वीकार किया जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, यह मन के भेदन हैं मानो देखो, मन बुद्धि का रूप माना गया है। उसके पश्चात् बुद्धि और मेधं ब्रह्मा मेरे पुत्रो! देखो, मन, बुद्धि और चित्त बेटा! चित्त का मण्डल एक ऐसा विचित्र है जिसमें मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान रहते हैं

ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है-हे ब्रह्मचारियों! ये जो मानो देखो, चित्त का मण्डल है यह बड़ा अद्वितीय, बड़ा अद्भुत, है जब तक मानव के अन्तर्हृदय में मानो चित्त के मण्डल में संस्कार रहेंगे तब तक देखो, कोई भी साधक प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए मानो देखो, मानव के अन्तःकरण में जो चित्त का मण्डल है इस चित्त के मण्डल को मानो देखो निरवयव होना होगा, इसमें कोई संस्कार नहीं रहेगा तो मानव अपनी मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर सकता है तो मानो देखो, यह चित्त का मण्डल है।

बेटा! मुझे एक वाक स्मरण आ रहा है बहुत परम्परा का वाक् है एक समय बेटा! वायु गोत्र में महर्षि वृत्तिका मुनि हुए तो वृत्तिका मुनि महाराज ने एक समय बेटा! देखो, महात्मा रेणवृत्ति से कहा-हे प्रभु! मैं प्रभु को प्राप्त करना चाहता हूं मानो देखो, मैं साधना और अनुष्ठान में प्रवेश होना चाहता हूं तो वृत्तिका मुनि ने बेटा! देखो, यह वाक् सम्ब्रहे वह अपने में अनुष्ठानी बन गए और उन्होंने ऐसा अनुष्ठान किया कि मौन हो करके कोई वाक् उच्चारण नहीं करना है। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है कि उन्होंने बेटा! पिच्चासी वर्षों तक इस प्रकार का अध्ययन किया और पिच्चासी वर्षों में मेरे पुत्रो! अन्तःकरण को जानते रहे, वह जो चित्त का मण्डल है उसमें बेटा! देखो, उन्होंने एक लाख, पिच्चासी हजार, पांच सौ पैंसठ जन्मों के लगभग बेटा! देखो, चित्त के मण्डल में संस्कारों की जानकारी ली।

अहंकार की प्रवृत्ति

तो मेरे प्यारे! देखो, वह साधना का एक बड़ा स्वरूप विचित्र माना गया। तो मेरे पुत्रो! देखो, पिच्चासी वर्ष का मौन और देखो, वह गायत्राणि छन्दों में रमण कर गए उसके पश्चात् उन्हें चित्त के मण्डल में जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार दृष्टिपात आने लगे। मेरे प्यारे! देखो, वह चित्त का मण्डल बड़ा विचित्र है चित्त देखो, अमृताम् मेरे पुत्रो! देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार बेटा! देखो, अहंकार से यह संसार एक दूसरे में कटिबद्ध रहता है। अहंकार की प्रवृत्ति

उसे कहते हैं जहां मुनिवरो! एक परमाणु दूसरे से मिलान कर जाता है, परमाणु परमाणु में सहयोगी बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह अहंकारत्व कहलाया गया।

सुषुप्ति

तो विचार आता रहता है यह चित्त की मानो देखो, अन्तःकरण की चार प्रवृत्तियों का नाम अन्तःकरण कहलाता है। मेरे प्यारे! जब निन्द्रा की गोद में चला जाता है, सुषुप्ति में चला जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, चित्त के मण्डल में कोई अवृत्ति नहीं रहती, वह शान्त हो जाता है और यह मन, बुद्धि बेटा! एक दूसरे में लय हो जाती है। जैसे मानो देखो, ब्रह्मणे ब्रहे मुनिवरो! देखो, मन बुद्धि में और बुद्धि चित्त में और चित्त मेरे प्यारे! देखो, अहंकार में रत हो जाता है। तो उसका नाम सुषुप्ति कहा जाता है। और वहीं सुषुप्ति को जानने के लिए बेटा! ऋषि मुनि परम्परागतों से अन्वेषण करते रहे हैं।

प्राण साधना से मन सिद्धि

आओ मेरे प्यारे! मैं इन वाक्यों को गम्भीरता में ले जाना नहीं चाहता हूं मेरे पुत्रो! देखो, यह मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह अन्तःकरण है, और दस प्राण कहलाते हैं बेटा! सबसे प्रथम प्राण है, प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान यह पांच प्राण कहलाते हैं। मानो देखो, पांचों प्राणों में यह विशेषता जब साधक प्रत्येक मानो बेटा! देखो, मन की चर्चा कर रहा है और यह कहता है कि मन को अपने में वशीभूत करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, मन तब वशीभूत होता है जब यह प्राण की साधना मानव की सिद्ध हो जाती है। यह जो प्राण है बेटा! प्राण को

मनस्तं ब्रह्माः प्राणं ब्रह्मा जब मन देखो, मन और प्राण दोनों की सहयोगिता हो जाती है अथवा दोनों का समन्वय होने लगता है तो उस समय मुनिवरो! देखो, यह मन प्राण में और प्राण मुनिवरो! देखो, अपान में ओत प्रोत हो जाता है और अपान को मेरे प्यारे! देखो, जब समान में और समान को व्यान में और व्यान को उदान में समेट लिया जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह योगी इस ब्रह्माण्ड का दर्शन कर लेता है।

प्राण में ब्रह्म की गति

तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें ऐसी वार्ता प्रगट कर रहा हूं जो बेटा! साधकों के मध्य में यह प्रायः चर्चाएं होती रहती हैं। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों से कहा-हे ब्रह्मचारियों! इन प्राणों को जानने के लिए तुम प्रयास करो, यह जो मन है यह बिना प्राण की साधना के कोई इसे अपने वशीभूत नहीं कर सकता। आज तक का कोई प्रमाण ऐसा हमें प्राप्त नहीं हुआ है जो प्राण के बिना स्थिर रह सके। यह मन और प्राण दोनों की सहकारिता परम्परागतों से ही गतिवान हो रही है। क्योंकि मन जो है यह प्रकृति का तन्तु है और यह जो प्राण है इसमें ब्रह्म की गति है इन दोनों का समन्वय जहां हो जाता है परन्तु देखो, यह एक गति है और दूसरा मानो देखो, प्रकृति के स्वरूप का एक सूक्ष्मस्वरूप माना गया है। तो विचार यह आता रहता है यह बड़ी विचित्रता की वार्ता है बेटा! जो मैं तुम्हें उदगीत रूप में गा रहा हूं मुनिवरो! देखो, प्राण को अपान में कैसे सिमेटा जाता है।

मेरे प्यारे! तुम्हें स्मरण होगा त्रेता के काल में पहुंचो, त्रेता के काल में बेटा! वृत्तिका मुनि, मेरे पुत्रो! देखो, जब विराजं ब्रह्मे देखो, राजा रावण के पुत्र मेघनाथ को और देखो, बालि पुत्र अंगद दोनों को प्राण विद्या वह देते रहते थे और प्राण विद्या जब उन्होंने प्रदान की तो प्राण को अपान में देखो, मिलान कराते हुए इस प्राण विद्या को जानना ही देखो, तुम्हें प्रतीत होगा पुत्रो! कि अंगद प्राण और अपान को एक ही स्थान में ले आना उनका कर्त्तव्यं ब्रहे मानो ऐसा उन्होंने अम्प्रस्त किया, ऐसी साधना की। ऐसी साधना मुनिवरो! देखो, राजा रावण के पुत्र मेघनाथ ने भी मानो देखो, इसी प्रकार की विद्या को पाया। आज मैं देखो, विशेषता में नहीं, तुम्हें यह प्रतीत होगा कि उन्होंने इस विद्या को क्रियात्मक में लाने के लिए, मेरे पुत्रो! देखो, जो नाग फाँस की चर्चा आती है वह मानो देखो, नाग प्राण है। और नाग प्राण को जब देवदत प्राण से मिलान कराया जाता है और उसका प्राण और अपान से मिलान करा दिया जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण सत्ता इतनी विशिष्ठ बन जाती है कि वह मानव के प्राणों का हनन कर लेती है।

ब्रह्माण्ड का दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेषता में नहीं ले जा रहा हूं ये चर्चाएं तो बड़ी विचित्र हैं। बेटा! किसी काल में प्रगट करूंगा, जब वेद का मन्त्र आएगा, आज तो मैं तुम्हें इतना उद्गीत रूप में गाना चाहता हूं कि मुनिवरो! देखो, ये दस प्राण है इन दसों प्राणों को जानना हमारा कर्त्तव्य है, इन प्राणों में देखो, मन की प्रतिभा निहित हो जाती है। मेरे पुत्रो! देखो, जब प्राण और अपान की पुट लगती है और व्यान को इसमें परिणत कर दिया जाता है तो योगी बेटा! देखो, इस ब्रह्माण्ड के लोक-लोकान्तरों को और नाना निहारिकाओं और आकाशगंगाओं को दृष्टिपात करने लगता है।

प्राणविद्या से ब्रह्माण्ड का ज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, जो विज्ञान, परमाणु विज्ञान से नहीं जाना जाता वह प्राण की विद्या से मुनिवरो देखो, इस ब्रह्माण्ड को जाना जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं देना चाहता हूँ विचार विनिमय

क्या कि अमृतां ब्रह्मणां लोकां वायु सम्भूति ब्रह्म लोकाः मेरे प्यारे! देखो, दूसरा एक अमृतम् मुनिवरो! देखो, दस इन्द्रियां कहलाती हैं। यह पांच ज्ञानेन्द्रियां है जिनसे बेटा! ज्ञान होता है, जिनमें संसार की धर्मज्ञता बेटा! समाहित रहती है। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा था कि देखो, ब्रह्मणां ब्रहे उन्होंने कहा था कि देखो यह जो नाना प्रकार का धर्म, नाना धर्म नहीं होते यह हमने बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया बेटा! धर्म तो वह है जो धारण किया जाता है और जो मुनिवरो! देखो, वेद का आभास, वेद का जो कर्त्तव्यवाद है उसे लाने के लिए, मानव अपने में कर्त्तव्यवादी बना करता है और वही कर्त्तव्यवाद मुनिवरो! उसको ऊर्ध्वा में गमन कराता है और वही मेरे पुत्रो! देखो, महानता में ले जाने के लिए तत्पर होता है।

आध्यात्मिक विज्ञान

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूं विचार केवल यह कि मानो देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियां है जिनमें ज्ञान होता है और वह ज्ञान ही मानव का धर्म है प्रत्येक प्राणी मात्र का धर्म है बेटा! जो इन्द्रियों में समाहित हो रहा है। पांच कर्मेन्द्रियों में बेटा! कर्म समाया हुआ है वह किसी भी प्रकार का कर्म हो, किसी भी प्रकार की प्रतिभा में रत रहने वाला, परन्तु उन सब की स्थिति हृदय में रहती है। हृदय सब प्राणियों के द्वार पर होता है। हृदय में यह सर्वत्र मुनिवरो! प्राणी मात्र समाहित हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कोई भी प्राणी हो, वह हृदय में अगम्यता में परिणत हो जाता है। हृदय में ज्ञान और विज्ञान समाहित रहता है तो विचार आता रहता है, कि मुनिवरो! देखो, यह पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मन्द्रियों को और दस प्राणों को एक दूसरे में सिमेटने का नाम ही मेरे पुत्रो! देखो, आध्यात्मिक विज्ञान कहा गया है। आध्यात्मिकवाद माना गया है।

तो मुनिवरो! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन करते हुए कहा-हे ब्रह्मचारियों! तुम जान गए हो, मैंने बहुत सूक्ष्म रूप से तुम्हें यह वर्णन कराया है कि तुम मानो ब्रह्मा तप्प्रते तुम याग करना चाहते हो, तो चौबीस होता होने चाहिए। देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियों, पांच कर्मेन्द्रियां, दस प्राण, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार है, इनको जानने का नाम ही मुनिवरो! देखो, आध्यात्मिकवाद है और इसको कर्मठता में लाने का नाम ही बेटा! एक याग माना गया है। हे ब्रह्मचारियों! तुम याग करो और याग के द्वारा तुम्हारा कल्याण होगा। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन करते हुए कहा, तुम्हारा याग सम्पन्न होना चाहिए। मानो तुम्हारे याग में महानता और चौबीस होताओं के द्वारा जो याग होता है यह हमारा बड़ा सौभाग्य है, यह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बेटा! इसी क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहे हैं।

महर्षि कागभुषुण्डजी का अनुष्ठान

मुनिवरो! देखो, प्राण और अपान दोनों की सुगन्ध को ले करके मुझे कागभुषुण्ड जी का जीवन भी स्मरण आता रहता। कागभुषण्ड जी ने बेटा! एक समय एक अनुष्ठान किया और अनुष्ठान में जब परिणत हो गए थे तो मानो देखो, वह याग कर रहे थे, वह प्रातः कालीन याग करते थे, वायु मण्डल को पवित्र बनाने के लिए, वायु मण्डल जो पवित्र होता है। वह याग से होता है। वह प्रातः कालीन नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित करके और उन्हें महाराजा इन्द्र के यहां से एक कामधेनु गऊ प्राप्त हुई थी, तो महर्षि ने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया तो वे एक समय प्रातः कालीन बेटा! याग कर रहे थे, तो मुनिवरो! देखो, एक समय श्वेतकेतु मुनि महाराज विद्यालय में, ब्रह्मचारियों को दण्डित करके बेटा! वे भी उस यज्ञ में आहुति प्रदान करने लगे, जब आहुति देने लगे तो उसमें आहुति मानो देखो, तमोगुणी बन गई, जब तमोगुणी बन गई तो बेटा! प्राण और अपान को जब मुनिवरो! महर्षि कागभुषुण्ड जी ने मिलान किया तो मुनिवरो! मिलान करते ही ब्रह्मे कृतम् वह तमोगुणी बेटा! आकार उन्हें दृष्टिपात

आने लगा।

मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा-हे अस्सुतं ब्रह्मा उन्होंने याग शान्त कर दिया। उन्होंने कहा-ऋषिवर! तुमने बिना आज्ञा के, मेरे याग में आहुतियाँ प्रदान की हैं, और तुम्हारे विचार तमोगुणी बन गए हैं। वह मुझे दृष्टिपात आ रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने देखो कागभुषुण्ड जी के चरणों को स्पर्श किया और कहा-धन्य हैं, प्रभु! मैं अभी अभी ब्रह्मचारियों को दण्डित करके विद्यालय में से आया, मेरा हृदय संकुचित हो रहा था, तो मानो हृदय में त्राहि त्राहि हो रही थी और मैं आहुति देने लगा प्रभु! मैं शान्ति के लिए, आपने मानो मुझे जान लिया। मेरे प्यारे! देखो, साधक जब साधना करता है तो प्राण और अपान को मिलाता है, वायु में अग्न्याधान करता हुआ मेरे पुत्रो! देखो, वह साधक कहां चला जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार तो ये बड़े विचित्र अमृतम् देखो, साधकों के है, विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने अगले दिवस याग नहीं किया। गायत्राणि छन्दों में रमण कर गए और जब तक वह पाप समाप्त न हो, तब तक मानो मैं याग नहीं करूंगा। मेरे पुत्रो! उन्हांने याग का अन्तुत किया और वह याग करने लगे। देखो, तीसरे दिवस उन्होंने याग का प्रारम्भ किया।

चौबीस होताओं से याग

मेरे पुत्रो! विचार विनिमय क्या, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों से कहा-हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो देखो, याग करना चाहते हो, तो मानो चौबीस होताओं के द्वारा तुम्हारा याग होना चाहिए, चौबीस होताओं में यह ब्रह्माण्ड जो दृष्टिपात आ रहा है, यह भी चौबीस खम्बों का मानो यह जगत माना गया है। इसी प्रकार तुम अपने याग को सम्पन्न करो। मेरे प्यारे! हमारे यहां पुरोहित का अभिप्राय, पुरोहित कौन होता है? जो पराविद्या के ऊपर अध्ययन करता है, वे पराविद्या वाले जो पुरुष है, वही तो महान और पवित्र बना करते हैं। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, हमारा यह जो जगत है यह जड़ और चेतनता में रमण करने वाला है। परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है उसका ज्ञान और विज्ञान भी बड़ा अनन्तमयी है बेटा! मैं ऋषि-मुनियों की वार्ता में चला गया, उनका बड़ा गम्भीर अध्ययन रहा है। उनकी विचारधारा में एक-एक तन्तु मानो देखो, ब्रह्माण्ड की आभा में गमन करता रहा है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूं, कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! मैं सत्रह होताओं की चर्चा कल प्रगट करूंगा, आज का विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते, इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह बेटा! आज का वाक्, बेटा! पुरोहित कौन, महर्षि विश्वामित्र जो धनुर्याग में पारायण थे, मेरे प्यारे! देखो, राम और लक्ष्मण और मुनिवरो! देखो, भरत और शत्रुघ्न इन सभी ने देखो, दण्डक वनों में शिक्षा अध्ययन की है, धनुर्विद्या को पान किया है। और धनुर्विद्या में बेटा! कितने वह पारायण थे यह चर्चा भी बेटा! मैं कल, उस याग की चर्चा भी संक्षिप्त परिचय देंगे। मेरे पुत्रो! देखो, उनके याग में कितनी सम्पन्नता रहती है और वह मानो शिक्षा प्रणाली कितनी विचित्र रही है कि वह धनुर्याग अपने में कितना अद्वितीय माना गया है, यह चर्चाएं भी हम कुछ सूक्ष्म रूप से कल प्रगट करेंगे, आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथां दिव्याः आ पाः। रथं ब्रीहितं वरुणाः आ पाः। ओ३म् मानुश्या प्राची आभ्यां देवाः।अच्छा भगवन् 25.3.89 डून्डाहेड़ा, गाजियाबाद।

१२ अनन्तमयी ब्रह्माण्ड 26 03 1989

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में, उस परमपिता-परमात्मा की महती और अनन्तता का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा हमारे वरणीय माने गए हैं जब भी हम उसे अपना वरुण बना लेते हैं, तो वह वरणीय कहलाने से ही नहीं मानो वह वरणे योग्य हैं, और जो मानव उसे अपना वर लेता है, वह महान बन जाता है। तो इसलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करना चाहिए और वह महानता की अनुपम ज्योति में सदैव रत्त रहने वाला और मानवीयत्व में सदैव रत रहता है।

ब्रह्माण्डरूपी माला

तो आओ मुनिवरो! आज का हमारा वेदमन्त्र यह उद्गीत गा रहा है क्योंकि यहां प्रत्येक शब्द माला के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। हमारा वेद का मन्त्र कहता है कि उस माला को हमें धारण करना चाहिए, जिस माला में, जिन शब्दों में एक माला का अस्तित्व रहता है। हमारे यहां बेटा! देखो, एक माला पाठ भी आता है, जब वेद का पठन-पाठन किया जाता है, तो हमारे यहां जैसे एक माला पाठ है, जटा पाठ है, एक धन पाठ, विसर्ग और उदात्त अनुदात्त तो यह नाना प्रकार है पाठ है। वैदिक मन्त्रों के उच्चारण करने के। परन्तु जैसे एक माला पाठ है, माला उसे कहते हैं जो मानव के कण्ठ में समाहित हो जाए, माला उसे कहा जाता है जहां एक सुमेरू की वरणीयता आती रहती है, क्योंकि जब माला बनती है तो एक सुमेरू भी बनता है। तो बेटा! वह क्यों बनता है क्योंकि वह गृहे सम्भवाः जब माला बनती है तो नाना प्रकार की मालाओं को जब धारण किया जाता है तो उसमें एक सूत्र होता है और वह सूत्र ही मानो देखो महत्त्वदायक है। हमारे यहां नाना प्रकार के मनके हैं और वे मनके जब सूत्र में पिरोए जाते हैं तो बेटा! वह माला बन जाती है। मानो इसी प्रकार ये जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड है, यह एक प्रकार की माला है और इस माला में जो नाना प्रकार के मनके पिरोए जाते हैं तो यह माला बन जाती है।

परमाणु के तीन प्रकार

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि के आश्रम में, एक समय बेटा! ब्रह्मचारी कवन्धि और सुकेता और पणपेतु ऋषि महाराज, तीनों महापुरुष अपने में विचार-विनिमय कर रहे थे और भारद्वाज मुनि के चरणों में विद्यमान हो करके, वह मानो कुछ अध्ययन कर रहे थे। तो बेटा! वहाँ माला के ऊपर चर्चा होने लगी, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा-प्रभु! वेद कहता है मन्त्रस्सुताः शब्दं ब्रह्मणाः लोकां वायु सम्भवेते देवः ब्रहा रत्ति वेद का वाक् कहता है-हे प्रभु! यह जो मन्त्र है, यह कहता है कि यह ब्रह्माण्ड एक माला के सदृश्य हैं और जो उस माला को धारण कर लेता है, वह महान बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा-हे ब्रहात्यं ब्रहो मानो यह माला तो हमें दृष्टिपात आ रही है क्योंकि तीन ही प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी और यह जो तीन प्रकार के मण्डल हमें दृष्टिपात आ रहे हैं यह भी तीन प्रकार की आभा में रत्त हो रहे हैं। मानो जब हम लोक-लोकान्तरों की माला बनाने लगते हैं। तो एक बड़ी विचित्र माला बन जाती है।

विज्ञान की पराकाष्ठा

बेटा! भारद्वाज मुनि के विद्यालय में, उनकी अनुसन्धानशालाओं में बेटा! देखो, एक समय तीस लाख

पृथ्वियों की गणना हुई और वह तीस लाख पृथ्वियों की एक माला बनी, जो मानो देखो, ब्रह्मसूत्र में पिरोयी हुई थीं। जो प्राणेश्वर कहलाती हैं। मेरे पुत्रो! देखो, उस माला को धारण करने वाला, सूर्य कहलाता है। यह सूर्य मण्डल इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! देखो, ये तीस लाख पृथ्वियां समाहित हो जाती हैं। मेरे पुत्रो! यह माला बनी, तो माला बनती चली गई, जहां तक सौर मण्डल की प्रतिभा आई, वहां तक बेटा! देखो, यह माला बनती चली गई। तो विचार आता है बेटा! उस माला में संलग्न हो जाना है, वह मानो अपने में अपनेपन की प्रतिभा को धारण करता हुआ, प्रभु को प्राप्त हो जाता है, और वह योगसाधना में परिणत हो जाता है। इससे पूर्व काल में बेटा! मैं इन विचारों में जाना नहीं चाहता हूं, यह मालाओं का विषय बड़ा विचित्र माना गया है, यह विज्ञान की पराकाष्ठा कहलाती है। जब मैं मालाओं की चर्चा करने लगता हूं तो बेटा! यह जगत एक माला ही दृष्टिपात आने लगता है। मानव के विचार भी एक माला के सदृश्य हैं। मुनिवरो! देखो, उस माला को जो अपने में धारण करता है, वह धारयामि बन जाता है।

तो मुनिवरो! देखो, आज मैं इस संदर्भ में विशेष विवेचना तुम्हें देना नहीं चाहता हूं विचार केवल यह कि हमें माला को अपने में धारण करना है और जिस माला को धारण करने के पश्चात् बेटा! मानव प्रभु को प्राप्त हो जाता है। आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं, विषय बड़े गंभीर और वेद का जब मन्त्र आता है तो विषय में मानो देखो, परिवर्तन हो जाता है जीवन की धाराओं में परिवर्तन हो जाता है। तो बेटा! यह ब्रह्माण्ड, एक अनुपमता में दृष्टिपात आने लगता है।

दण्डक वनों में धनुर्याग

आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हें त्रेता के काल की चर्चा करना चाहता हूं। मेरे पुत्रो! देखो, जब ब्रह्मणा व्रत्तं महर्षि विश्वामित्र के यहां बेटा! देखो, एक धनुर्याग होता रहता था। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में भी धनुर्याग की चर्चा आ रही थी। वेद मन्त्र इस प्रकार का वर्णन कर रहा था धनुश्चं ब्रह्मा कि हमें धनुर्याग में परिणत होना है। मेरे प्यारे! देखो, एक वर्ष के पश्चात् महर्षि विश्वामित्र के यहां, दण्डक वनों में नाना ऋषियों का आगमन होता रहा है और मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी वृत्तिका और यज्ञदता मेरे पुत्रो! महर्षि वशिष्ठ और माता अरुन्धती नाना ऋषि मुनियों का एक समूह होता और मुनिवरो! देखो, जिस समय धनुर्याग का वह दिवस क्योंकि कुछ ब्रह्मचारी धनुर्याग में से पूर्ण हो करके आश्रम को त्यागते थे, कुछ मानो उसमें प्रवेश करते थे।

तो मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है महर्षियों के मध्य में बेटा! देखो, ऋषयं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, अध्यक्षता होती और नाना प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों की विवेचना प्रायः बेटा! देखो, दण्डक वनों में होती रहती थी। मेरे पुत्रो! देखो, एक वर्ष के पश्चात् जब उनका दीक्षान्त उपदेश प्रारंभ हुआ, दीक्षान्त में मानो देखो, एक प्रतिक्रियाएं प्रारंभ हुई, उसमें बेटा! माता अरुन्धती और महऋष वशिष्ठ और महर्षि श्वेनकेतु और मुनिवरो! देखो, महर्षि वैशम्पायन और विभाण्डक और मुनिवरो! देखो, महर्षि वृत्तिका और भी नाना, लोमश इत्यादि मुनियों का आगमन हुआ। आगमन होने के पश्चात् जब दीक्षान्त उपदेश होता तो मुनिवरो! देखो, उसमें महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज अध्यक्षता को प्राप्त हुए और अध्यक्ष होने से बेटा! देखो, वहां विचार-विनिमय प्रारंभ होने लगा। और विचार क्या था कि तुमने क्या पाया है? मेरे प्यारे! देखो, आचार्यों को क्या देना है।

तो मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि उपस्थित हुए और भारद्वाज मुनि ने यह कहा-कि हे ब्रह्मचारियों! ये तुम्हारा बड़ा सौभाग्य है, आज जो तुम परमाणुवाद की विद्या को पान करने के लिए तत्पर हो, मानो तुम्हारा दीक्षान्त उपदेश केवल यह कि तुम दीक्षा पाने के लिए तत्पर हो और तुमने जो अणु और परमाणु की विद्या को

जाना है इसके लिए हमारा बड़ा सौभाग्य है और राष्ट्र का बड़ा सौभाग्य माना गया है।

अहिल्या कृतिभा यत्र

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने और महऋषि भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! देखो, अहिल्या कृतिभा यत्रों का निर्माण करते हुए, उन्होंने यह वर्णन किया कि इस यत्र का निर्माण करो। बेटा! अहित्या नाम वैज्ञानिक तथ्यों में इस पृथ्वी को कहा गया है। इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पनप रहा है, उसको वैज्ञानिकजन बेटा! अपने में धारयामि बनाते रहे हैं और धारण करके मुनिवरो! देखो, बाह्य जगत् में ब्रह्मचारियों के बनने के लिए उपदेश देते हैं, वह कहते हैं जब तुमने आध्यात्मिक विज्ञान को पाया है तो हमारी इच्छा यह है कि तुम्हारा आध्यात्मिकवाद भौतिक विज्ञान के साथ गमन करना चाहिए। क्योंकि यह संसार, राष्ट्र और समाज तब पवित्र बनता है जब दोनों प्रकार के जो अवयव हैं यह दोनों एक समतुल्य रहते हैं, सामान्यत्व में रमण करते रहते हैं। जहां भौतिक विज्ञान इतना पराकाष्ठा पर रहता है कि तुम विज्ञान में मानो अस्त्रों शस्त्रों में एक एक यत्र का निर्माण, ऐसा मानो एक राष्ट्र को एक ही यत्र बहुत होता है। और अन्तरिक्ष में गमन होता रहता है। यत्र में विद्यमान होते हो, तो मानो देखो, तुम्हारा ही यत्र है जो भारद्वाज से तुम्हें प्राप्त हुआ है, वह यत्र पृथ्वी से उड़ाने उड़ता है।

यत्र से लोकों की उड़ान

मेरे पुत्रो! देखो, वह सबसे प्रथम चन्द्रमा में जाता है, चन्द्रमा से उड़ान उड़ता हुआ बुध में जाता है, और बुध से उड़ान उड़ता हुआ वह शुक्र में जाता है, और शुक्र से उड़ान उड़ करके, वह मंगल में प्रवेश करता है, और मंगल में प्रवेश करता हुआ मुनिवरो! देखो, वह वृत्तिका मंडल में प्रवेश कर जाता है वृत्तिका मंडल से उड़ान उड़ता है तो मृचिका मण्डल में प्रवेश हो जाता है मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! अरुन्धती मण्डल में चला गया, अरुन्धती मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह वशिष्ठ में प्रवेश हो गया और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो श्वेतकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया, श्वेतकेतु मण्डल में से उड़ान उड़ी तो स्वाति नक्षत्र में चला गया और स्वाति नक्षत्र से उड़ान उड़ी तो रेणकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया, रेणकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह प्रतिपदा मण्डल में प्रवेश हो गया और प्रतिपदा मण्डल से उड़ान उड़ करके बेटा! देखो, वह रोहिणी केतु मण्डल में चला गया है, रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो प्रेम्अस्सुता, मेरे पुत्रो! देखो, आज तो मैं मण्डलों की गणना कराने नहीं आया, विचार केवल यह कि यह यत्र मानो देखो, बहत्तर लोकों का भ्रमण करता हुआ पुनः पृथ्वी मण्डल पर देखो, ऋषि के आश्रम में, दण्डक वन में प्रवेश हो जाता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो! कि विज्ञान बड़ा अद्वितीय हमारे यहां माना गया है। आज मैं विज्ञान के क्षेत्र में न ले जाता हुआ।

भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान

तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा-हे ब्रह्मचारियो! तुम्हारा विज्ञान बड़ा अनुपम है और तुम्हारे विज्ञान की धाराएं देखो, लोक-लोकांतरों में गमन करती है। परन्तु जहां तुम्हारा भौतिक विज्ञान इतना महान है वहाँ आध्यात्मिक विज्ञान भी महान रहना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, आध्यात्मिकवाद क्या है, भौतिक विज्ञान क्या है। भौतिक विज्ञान में तो बेटा! यत्रों का निर्माण है, अस्त्रों-शस्त्रों की प्रतिभा है, उसमें अभ्यस्त होना है। और मुनिवरो! देखो, आध्यात्मिकवाद वह है जहां आत्मा के ऊपर मानव चिन्तन करता रहता है। जहां आत्मा के जो अवयव हैं, अंग संग रहने वाले मानो देखो, उन्हें वह जानता रहता है और उनके ऊपर अध्ययन करता रहता है। जहां बेटा! देखो, मैं दण्डक वनों की तुम्हें चर्चा प्रगट करता रहता हूं, वहां मुनिवरो! देखो, मैं कजली वनों में मानो उस आश्रम में भी

चला जाता हूं जहां बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में बेटा! देखो, जहां वह भौतिक विज्ञान की चर्चा करते रहते वहां आध्यात्मिक विज्ञान उनकी पराकाष्ठा में गमन करता रहता था।

महर्षि भारद्वाज का दीक्षान्त उपदेश

तो मेरे प्यारे! आओ, मैं तुम्हें उस क्षेत्र में भी ले जाना चाहता हूं जहाँ यह दीक्षान्त उपदेश प्रारम्भ हो रहा है, भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने दीक्षान्त उपदेश में कहा-हे ब्रह्मचारियों! जिस विद्या का तुम अध्ययन करते हो, यह विद्या तुम्हारे क्रियात्मक होनी चाहिए, तुम्हें क्रिया में लाना चाहिए और यह विद्या मानो देखो, अद्वितीय मानी गई है। हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा इस विद्या के ऊपर अधिपत्य होना चाहिए, ब्रह्मचरिष्यामि तुम्हें बनना चाहिए, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके तुम्हारी मानवीयता, पवित्रता की आभा में गमन करती है। मेरे पुत्रो! देखो, भारद्वाज मुनि यह उपदेश दे करके मुनिवरो! देखो, वह तो मौन हो गए।

माता अरुन्धती का उपदेश

माता अरुन्धती ने उपस्थित हो करके यह कहा-हे ब्रह्मचारियों! जहां तुम्हारा भौतिक विज्ञान महान है, वहां तुम्हारा आध्यात्मिक विज्ञान भी महान होना चाहिए। आध्यात्मिक विज्ञान किसे कहते हैं? बेटा! आध्यात्मिक विज्ञान उसे कहते हैं जहां आत्मा की चर्चाएं होती हों, जहां सूक्ष्म और कारण शरीर की चर्चाएं होती हों बेटा! देखो, उसी को हमारे यहां आध्यात्मिक विज्ञान कहते हैं। जहां मेरे प्यारे! देखो, भौतिक विज्ञान की उड़ान उड़ने वाली, मेरी प्यारी माता अरुन्धती कहती हैं, ब्रह्मचारियां को दीक्षान्त उपदेश देती हुई, हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें महान बनना है, हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें राष्ट्र और समाज को मानो कर्त्तव्यवाद की वेदी पर ले जाना है। वह कर्त्तव्यवाद ही तो धर्मज्ञ कहलाता है। मानो देखो, तुम्हें अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण करते हुए और तुम्हें महान बन करके गमन करना है। मेरे प्यारे! देखो, माता कहती है-सम्भवं ब्रह्म लोकां वर्णोतु सम्भूति अरुणा वह कहती है कि तुम्हारे विद्यालय पवित्र हो और तुम्हारे विद्यालयों में ब्रह्मचारियामि बन करके मानो एक ब्रह्मसूत्र की माला को तुम्हें प्रायः धारण करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरुन्धती ने यह उन्हें उपदेश दिया।

आओ मेरे पुत्रो! देखो, मैं तुम्हें याज्ञवलक्य मुनि महाराज के विद्यालय में भी ले जाना चाहता हूं, मेरे प्यारे! देखो, मैं बहुत पुरातन काल की चर्चाएं तुम्हें प्रगट कराता रहता हूं यह मानो देखो, हमारे अन्तर्हृदय की एक विपृत्तता मानी जाती है जिसके ऊपर हमें अध्ययन करना है। मेरे पुत्रो! देखो, मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें यह प्रगट कराते हुए कहा था कि मानो स्थूल शरीर हमारा एक कृत कहलाता है, हमारा आध्यात्मिकवाद कहां से प्रारंभ होता है, वह कहते हैं कि जैसे परमपिता परमात्मा ने यह संसाररूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है, इसमें होतागण आहुति दे रहे हैं यजमान मानो देखो, आत्म स्वरूप आत्मा बन करके बेटा! ब्रह्म की शरण में जाना चाहता है, ब्रह्म की आभा में रत्त होना चाहता है तो मेरे पुत्रो! देखो, उसी आभा में अभ्योदय होना चाहिए। विचारवेत्ता कहते हैं-ब्रह्मणा कृतं ब्रह्म लोकां वायु सम्भूति ब्रह्मलोका मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है और ऋषि अमृतां ब्रह्मणे लोकाम् मानो देखो, आध्यात्मिक विज्ञान अपने में धारयामि बनना चाहिए मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज! से ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया कि महाराज यह चौबीस होता तो हमने जान लिए, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं प्रभु! यजमान याग करना चाहता है इसमें कितने होता होने चाहिए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज कहते हैं कि इसमें सत्रह होता होने चाहिए, यजमान याग करना चाहता है तो सत्रह होताओं से याग करने वाला हो। मेरे पुत्रो! सत्रह होता कौन से होते हैं? मेरे पुत्रो! देखो, सत्रां भूषणां ब्रहे, सत्रह होता कहते हैं बेटा! दस प्राण हैं और पंच तन्मात्राएं हैं, प्रकृति की और मुनिवरो! देखो, मन और बुद्धि यह

सत्रह तत्व कहलाते हैं। बेटा! यह जो सूक्ष्म शरीर है जो हमारा यह मानव शरीर मानो देखो, स्थूल शरीर को त्यागा जाता है, तो सूक्ष्म शरीर अपने चित्त के मण्डल को ले करके और चित्त के मण्डल में यह दस प्राण और पंच तन्मात्राएं, मन और बुद्धि यह कहलाती है मानो इसके साथ ही वह सूक्ष्म शरीर चला जाता है। मानं ब्रह्मणे स्थूल यहीं रह जाता है।

अन्तरात्मा की पवित्रता

मेरे पुत्रो! देखो, मृतं ब्रह्मा आचार्यों ने कहा है कि वह जो सूक्ष्म शरीर है वह प्राण का समूह कहलाता है। वह तन्मात्राओं का समूह कहलाता है। बेटा! तन्मात्राएं अपनी आभा में सदैव रत्त रहती हैं और चित्त का जो मण्डल है वह बुद्धि और मन के साथ में गमन करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, चित्त के मण्डल को जानने के लिए, हमारे आचार्यों ने बड़ा अध्ययन किया है और तप किया है। और तपस्या का फल यह प्राप्त हुआ कि वह इसे जानने लगते हैं। मेरे प्यारे! देखो, सत्रह होताओं के द्वारा जब यजमान याग करता है तो बेटा! उसका अन्तरात्मा पवित्र बन जाता है मानो उसका सूक्ष्म शरीर अवयवों वाला बन करके और वह कारण शरीर में लय हो जाता है। बेटा! देखो, इसके पश्चात् एक कारण लिंग कहलाया जाता है। जिसमें बेटा! ज्ञान और प्रयत्न मानो स्वाभाविक रहते हैं, ज्ञान और प्रयत्न बेटा! देखो, जहां आत्मा का गुण है वहां मुनिवरो! देखो, जो लिंग शरीर है जिसे हम कारण कहते हैं उसी में बेटा! देखो, यह दोनों रत्त रहने वाले हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है-ब्रह्मणा हे ब्रह्मचारियों! इस सूक्ष्म शरीर में ही मानो देखो, यह याग हो रहा है। आध्यात्मिकवेत्ता जब याग प्रारम्भ करते हैं तो सूक्ष्म शरीर के द्वारा मानो देखो, वह याग को प्रारम्भ कर देते हैं वही स्थूल रूप में मानो परिणत हो जाता है और वही कारण रूप में प्रवेश करके बेटा! मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण करने लगता है।

आत्मा का दूसरा शरीर

तो मेरे प्यारे! मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है ऋषि-मुनियों की जो पवित्र देन है अथवा विचित्रता है वह यह कि सूक्ष्म शरीर हमारे यहाँ मानो देखो, आत्मा का दूसरा शरीर माना गया है। इसी में बेटा! देखो, यह दस प्राण गमन करते रहते हैं, इन्हीं के द्वारा बेटा! देखो, सूक्ष्म शरीर का अध्ययन करने वाले जब अध्ययन करते हैं। तो बेटा! वह प्राणेश्वर बन जाते हैं। प्राण की गतियों को जानने लगते हैं। बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया कि वृत्तिका मुनि महाराज प्राण के ऊपर अध्ययन करते रहे हैं बेटा! देखो, प्राण के ऊपर अध्ययन करते-करते बड़ी ऊँची उड़ाने उनकी रही। बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि वृत्तिका मुनि के यहां, उनके विद्यालयों में मेरे पुत्रो! देखो, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे।

मुनिवरो! देखो, रावण का जितना वंशलज था वह महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज की शिक्षा पाता रहा और मेघनाथ जैसे वैज्ञानिक मानो देखो, यह सम्भूति देखो, वृत्तिका मुनि के यहां बालि पुत्र अंगद और देखो, मेघनाथ इत्यादि अध्ययन करते रहे। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा कि उनकी प्राणसत्ता का माध्यम बड़ा विचित्र कहलाया गया। मानो देखो, जिस समय राम और लक्ष्मण का रावण से संग्राम हो रहा था तो मुनिवरो! देखो, मेघनाथ जी ने एक प्राणशक्ति जिसे हमारे यहां मुनिवरो! देखो, नाग फाँस कहा जाता है। नग्रनां ब्रह्मा कृत्तो देवम् वेद के मन्त्रों में भी इस प्रकार की विद्या का वर्णन आता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह प्राणं ब्रीहि कृताम् एक प्राणसत्ता मानो देखो, इतनी विशिष्ट है कि उसके ऊपर अध्ययन करने से हमें प्रतीत होता है कि विज्ञान मानो देखो, इस परमाणु विद्या में, विज्ञान कितना महत्वदायक रहा है।

लोकों की माला

तो मेरे पुत्रो! देखो, इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा न प्रगट करते हुए केवल यह कि देखो, यह जो हमारा सूक्ष्म शरीर है यह बड़ा भव्याना गया है। तो ऋषि कहता है संभं ब्रहे कृतां लोकाम् मानो देखो, जब यह सूक्ष्म शरीराणां अभ्यां गतं ब्रह्मेणा लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, अवयवों में प्राप्त हो करके यजमान याग करता है और वह आध्यात्मिक याग करता हुआ भौतिकता में रत्त हो जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, वह प्राणेश्वर के द्वारा, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, तन्मात्राओं के द्वारा मेरे पुत्रो! देखो, जब यह आंतरिक जगत् में, सूक्ष्म शरीर से याग करता है तो बेटा! यह ब्रह्माण्ड अपनी अपनी आभा में दृष्टिपात आने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, मालाओं को गिनने लगता है, एक समय बेटा! देखो, वृत्तिका मुनि महाराज ने सूक्ष्म शरीर के द्वारा इन अवयवों को गणना में लाना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंन कहा-कि तीस लाख पृथ्वियाँ मानो देखो, सूर्य की माला बनाई हैं और वह ब्रह्माण्ड का दर्शन कर रहा है ऋषिवर। मेरे पुत्रो! देखो, वह सूक्ष्म शरीर को जानने वाला, ब्रह्माण्ड में रत्त होना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब तक ब्रह्म की आभा को, ब्रह्म के क्रियाकलापों को नहीं जाना जाता, तब तक आत्मा का उत्थान नहीं होता और मानव देखो अपने में महान नहीं बन पाता।

तीस लाख पृथ्वियाँ

विचार आता रहता है बेटा! माला गणना में लाने लगे जैसे वैज्ञानिक एक सूत्र में सूत्रित हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है कि जब तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी, तो मेरे पुत्रो! सूर्य ने उस माला को धारण कर लिया और एक सहस्र सूर्यों को जानने वाला ऋषि बेटा! मानो, एक सहस्र सूर्यों की माला बनी, जिसको बृहस्पति अपने में धारण करने लगा। मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति इतना विशाल है कि जिसमें बेटा! एक सहस्र सूर्य समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति जब माला को धारण करने लगे, तो मेरे पुत्रो! देखो, वह बृहस्पतियों की भी माला बनी और माला को धारण करने वाला मेरे पुत्रो! देखो, अमृतां ब्रह्मणे लोकां व्रस्तुते मुनिवरो! देखो, आरुणि उसे अपने में धारण कर गया। मेरे पुत्रो! कैसी विचित्र माला है प्रभु की, मुनिवरो! देखो, एक सहस्र बृहस्पतियों की माला बन करके बेटा! आरुणि मण्डल अपने में धारण कर गया। बेटा! अब एक सहस्र आरुणि मण्डलों की माला बनी तो बेटा! उसको ध्रुव ने अपने में धारण कर लिया, ध्रुव मंडल इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! एक सहस्र आरुणि मण्डल समाहित हो जाते हैं उस माला को धारण करने वाला बेटा! महान् वैज्ञानिक कहलाता है और अपने में बेटा! सूक्ष्म और कारण में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे पुत्रो! देखो, विचार आता रहता है एक सहस्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी, जिसको बेटा! मूल नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। मेरे पुत्रो! देखो, एक सहस्र मूल नक्षत्रों की माला बनी, तो उसको स्वाति ने अपने में धारण कर लिया। स्वाति मण्डल इतना विशाल मण्डल है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्र स्वाति मण्डलों की माला बनी, तो उसको बेटा! पुष्य नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। मेरे प्यारे! एक सहस्र पुष्य नक्षत्रों की माला बनी, तो उसको अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी तो मेरे प्यारे! देखो, उसको रोहिणी केतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र रोहिणी केतु मण्डलों की माला बनी, तो उसको मृचिका मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। बेटा! एक सहस्र मृचिका मण्डलों की माला बनी, तो ब्रहे सम्भूति व्रेतकेतु मंडल ने अपने में धारण कर लिया और मुनिवरो! देखो, व्रेतकेतु मण्डल इतना विशाल उसकी भी एक सहस्र मण्डलों की माला बनी जिसको गन्धर्व ने अपने में धारण कर लिया।

निहारिका

त्रेता कालीन विज्ञान

मेरे प्यारे! मैं कहां चला गया हूं, विज्ञान के उस रूप में, प्रभु के ब्रह्माण्ड में चला गया, प्रभु का ब्रह्माण्ड कितना अनन्तमयी है बेटा! इतने मण्डलों की एक माला बनी बेटा! मेरे प्यारे! देखो, इतने मण्डलों की माला बन करके एक सौरमण्डल बना। मुनिवरो! देखो, एक अरब, छयानवे करोड़, उनतीस लाख, मुनिवरो! देखो, ऐसे-ऐसे सौरमण्डलों की एक माला बनीं। बेटा! उसमें इतने मण्डलों की एक आकाशगंगा बनी। मेरे पुत्रो! देखो, एक अरब, पिच्चानवे करोड़, उन्नतीस लाख, पांच सौ इक्सठ के लगभग बेटा! इतनी आकाश गंगाओं की एक मुनिवरो! देखो, अवन्तिका बनी।

मेरे पुत्रो! देखो, वह अवन्तिका कैसा विचित्र एक मण्डल है, विचार आता रहता है ऋषि बेटा! शान्त नहीं हुआ। मुनिवरो! देखो, जब अवन्तिका की गणना करने लगे ऋषि मुनि योगाभ्यास के द्वारा, प्राण और मन की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो गये तो बेटा! उन्होंने लगभग देखो, दो अरब और पिच्चासी करोड़, नवासी लाख, उन्नस हजार पांच सौ, बावन के लगभग इतनी अवन्तिकाओं की बेटा! एक निहारिका बन गई।

तो मेरे पुत्रो! देखो, जब यह विचार आता है कि यह ब्रह्मांड कैसा अनन्तमयी है, यह कैसा अनन्तमयी प्रभु का ब्रह्मांड है जो बेटा! देखो, साधक अपने चित्त के मण्डल में, मन और प्राण को सहवास कराते हुए सूक्ष्म शरीर के द्वारा बेटा! तन्मात्राओं के द्वारा इस ब्रह्मांड का दर्शन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषिवर जब यह विचारता रहता है कि मैं कहां चला गया हूं, तो बेटा! यह मालाओं का ऐसा एक जगत है जिस मालाओं को धारण करने वाला बेटा! विज्ञान में रत्त हो जाता है।

जब वैदिक साहित्य में विज्ञान की चर्चा में प्रवेश करते हैं तो बेटा! यह ब्रह्मांड एक अनन्तता में दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रों! मैं आज विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूं, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूं, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूं। बेटा! एक-एक सौरमण्डल, एक-एक मण्डल की चर्चा करने लगूंगा, तो बेटा! वर्षों चाहिए, इस विवेचना के लिए, विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, एक दूसरे में यह जगत एक माला के सदृश्य है और वह माला को धारण करने वाला बेटा! देखो, अन्तिम चरम सीमा पर जाने के पश्चात् बेटा! देखो, मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

प्रभु की प्राप्ति

मेरे प्यारे! देखो, यह सूक्ष्म शरीर की चर्चाएं हो रही हैं, कारण लिंग की चर्चाएं हो रही हैं। मेरे पुत्रों! ज्ञान और प्रयत्न रह जाता है उन दोनों को एक सूत्र में लाने से ही मुनिवरों! देखो, ब्रह्म के हृदय में, मानवीय हृदय मानो देखो, लिंग शरीर का हृदय बन करके प्रभु को प्राप्त हो जाता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूं, विचार-विनिमय केवल यह प्रगट कराना चाहता हूं कि मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ब्रह्मचारियों ने ये प्रश्न किया कि महाराजा यह यजमान याग करना चाहते हैं कितने होता होने चाहिए?

उन्होंने बेटा! सत्रह से इसकी गणना की और यह कहा यह जो दस प्राण हैं यह एक ही प्राण सूत्र कहलाता है जो ब्रह्मांड को धारण किये रहता है।

एक प्राणी प्राणी का सहयोगी बना हुआ है मानो एक दूसरे में वह रत्त हो रहा है तो इसी प्रकार जब यह अव्रतां ब्रह्मणां ब्रहे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय करते हुए नाना प्रकार के मण्डलों में प्रवेश करने वाला योगेश्वर मानो देखो, ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है और ब्रह्मांड को अपने में और अपने में ब्रह्मांड को मानो वृत्तिका में रत्त करा देता है।

ग्यारह होता

तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय केवल यह कि यह मालाओं की धारा है और मालाओं को धारण करना चाहिए। मेरे पुत्रों! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जब यह विचार दे करके मौन होने लगे तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा-प्रभु! यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होता होने चाहिए? उन्होंने कहा-हे ब्रह्मचारी! यजमान याग करना चाहता है, तो ग्यारह होता होने चाहिए। जब भी मानव देखो, इस संसार से उपराम होने के लिए अपना नृत्त करता है और क्रियाकलाप बनाना प्रारंभ करता है तो मुनिवरों! देखो, दस इन्द्रियां और ग्यारहवा मन है, जो मानो इनको संयम में ला करके इन्द्रियों का साकल्य बना करके, मन एकाग्र होकर जब इन्द्रियों पर संयम करता है, तो मुनिवरों! देखो, वह योगेश्वर प्रत्येक इन्द्रिय पर संयम करता हुआ उनके विषयों का साकल्य बना करके, सामग्री बना करके बेटा! वह हृदयरूपी यज्ञशाला में हूत कर रहा है। वह जो हृदय में, जो सर्वशः प्रत्येक इन्द्रियों के अवयव विद्यमान होते हैं एक मानव बेटा! रूप को दृष्टिपात कर रहा है, उसकी स्थिति भी हृदय में है, मुनिवरों! देखो, वह इन्द्रियों के प्रत्येक विषयों को, शब्दों को ग्रहण करता है उसी की आभा में रत्त होता है।

मेरे पुत्रों! देखो, जब दस इन्द्रियों के ऊपर संयम की वार्ता आई, तो बेटा! देखो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने बेटा! इसके ऊपर निर्णय करना प्रारम्भ कर दिया और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा-हे देवी! मानो देखो, हमें इन्द्रियों के अवयवों को जानना है, हम याग करना चाहते हैं, हम याग में परिणत होना चाहते हैं। तो शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज और उनकी पत्नी बेटा! देखो, दोनों साकल्य एकत्रित करते और मुनिवरों! देखो, याग करते। भौतिक याग करते, आध्यात्मिक याग में मानो देखो, इन्द्रियों में संयम करने के लिए, वह अपने में हूत करते रहते थे।

अग्नि की धारा पर शब्द

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है कि उन्होंने ऐसे-ऐसे यंत्रों का, याग के माध्यम से निर्माण किया जो मेरे प्यारे! देखो, अग्नि की धारा पर विद्यमान होने वाला जो स्वाहा शब्द है वह द्यौलोक में जाता हुआ, उनके यंत्रों में दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! देखो, पिता महापिता पड़पिताओं के मुनिवरों देखो, उनके क्रियाकलाप और उनके मानो देखो, शब्दं ब्रहे वह जो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, शब्द अन्तरिक्ष में गमन करता है, द्यौ में प्रवेश हो जाता है, वृत्तिका मण्डल में स्थिर हो जाता है। मुनिवरों! देखो, वह शब्द सदैव नित्य रहता है। उस शब्द में उनका चित्र भी है उनके क्रियाकलाप भी है और वह चित्र और क्रियाकलाप बेटा! देखो, वह उन्हें यंत्रों में दृष्टिपात करते रहे।

आध्यात्मिकवाद से प्रभु की समीपता

तो बेटा! मैं विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूं, यह ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्र एक देन रही है, जहां मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक एक शब्द के ऊपर बड़ा अनुसन्धान, अन्वेषण किया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा के यहां बेटा! देखो, उनके पंचासवें महपिता का दर्शन करते रहे। बेटा! विज्ञान के यन्त्रों में और उनके क्रियाकलाप उनके मानो देखो, जो भी वृत्तियां वह सर्वत्रता में दृष्टिपात करते रहे बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूं, मैं कोई व्याख्यता नहीं हूं, केवल यह विचार और परिचय देने के लिए आया हूं अमृतां देवं ब्रह्मा लोकां अमृता मेरे प्यारे! देखो, हमें अमृत के आंगन में जाना है, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, यह आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का जो मिश्रण है दोनों का जो मानो समावेश है इनके समावेश का नाम ही मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद को जानना है। आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करके बेटा! प्रभु के समीप जाना है।

त्रेता कालीन विज्ञान

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती, अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते चले जायें। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपनी आभा में सदैव गतिवान रहा है और गति करता रहा है। मुनिवरों! देखो, विज्ञान अपनी आभा में सदैव रत्त रहा है। आओ मेरे पुत्रों! देखो, जहां धनुर्याग की चर्चाएं, यहां नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है जैसे बेटा! हमारे यहां धनुर्याग का वर्णन है, यह राजाओं का कर्त्तव्य है कि राजाओं के राष्ट्र में धनुर्याग होना चाहिए योगियों के द्वारा, और वैज्ञानिकों के द्वारा। जो वैज्ञानिक भी हो और आध्यात्मिक अवयवों को भी जानने वाले हो। मेरे पुत्रों! राजा के राष्ट्र में जितने विवेकी पुरुष होंगे, आध्यात्मिकवेत्ता होंगे, उतना ही राष्ट्र पवित्रता की आभा में रत्त रहता चला जायेगा। मेरे पुत्रों! देखो, इस अप्रहा द्वितीयं ब्रह्मा बेटा! आध्यात्मिक विज्ञान, आध्यात्मिक याग में भी रत्त रहना चाहिए और आध्यात्मिक और भौतिक दोनों का समन्वय होना चाहिए।

मानव की प्रतिभा

मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है जैसे मुनिवरों! देखो, अग्निष्टोम याग है, कन्या याग है, ब्रह्म याग है, रुद्र याग है और मुनिवरों! देखो, जैसे विष्णु याग है और पितर याग है, ब्रह्म याग है। भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यहां यागों के ऊपर कर्मकाण्ड की चर्चा आयेगी तो चर्चा प्रगट करेंगे। आज का विचार बेटा! यह सम्पन्न होने जा रहा है, आज कि विचारों का अभिप्राय यह कि मुनिवरों! देखो, हम वेद के एक-एक मंत्र को, माला बना करके, अपने कण्ठ में सजातीय बनायें और कण्ठ हमारा सजातीय होना चाहिए, कण्ठ में मानो देखो, ये विद्याएं प्रायः हमारे हृदयंगम होनी चाहिए जैसे माताओं का कण्ठ स्वर्ण से सजातीय नहीं होना चाहिए, केवल विद्या से सजातीय होना चाहिए। बेटा! देखो, कण्ठ में जितना ज्ञान होगा, विज्ञान होगा, मेरे पुत्रों! देखो, मानव की प्रतिभा बनती रहेगी और जब मानव देखो, कण्ठं ब्रह्मा कृते देवान् धन्नं ब्रहे मुनिवरों! देखो, कण्ठ हमारा ज्ञान से सजातीय रहना चाहिए और वह माला कहलाती है। उसी माला को धारण करना है, योग में जाना है। तो मण्डलों की माला को धारण करो बेटा! देखो, और गम्भीर योग में जाना है। प्रभु को सूत्र बना करके बेटा! अपने को उसमें पिरोया हुआ स्वीकार करते रहो, यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा तो मैं इसके आगे की शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं आ पा गतं मा ना। ओ३म् यशो गायन्त्वा मां रेवं आभ्यां रुद्राः। अच्छा भगवन्। 26.03.1989। डून्डाहेडा, गाजियाबाद।